* चतुर्थ अध्याय *

आँचलिक उपन्यास की दृष्टि से आलोच्य उपन्यासों के चरित्रचित्रण का तुलनात्मक अध्ययन।

: चतुर्थ अध्याय :

आँचलिक उपन्यास की दृष्टि से आलोच्य उपन्यासों के चरित्रचित्रण का तुलनात्मक अध्ययन ।

4.1 'मैला आँचल' उपन्यास के पात्रों का चरित्र-चित्रण :

4.1.1 डॉक्टर प्रशांत :-

'मैला आँचल' उपन्यास का प्रमुख पात्र है डॉक्टर प्रशांत। वह अज्ञात कुल है। प्रशांत को नेपाल सरकार द्वारा निष्कासित उपाध्याय जी ने बाढ से उमडती हुई कोसी की धारा में एक झाऊ की झाडी के पास तैरती हुई मिट्टी की हांडी में पाया था। उन दिनों वे सहरसा आंचल में रहते थे जहाँ उन्होंने आदर्श आश्रम की स्थापना की थी। उन्होंने प्रशांत को अपने आश्रम में रहनेवाली परित्यक्ता स्नेहमयी बॅनर्जी को सौंप दिया था। स्नेहमयी के प्यार में पलते हुए तथा उपाध्याय परिवार के संस्कारों में वह बडा हुआ। वह मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण कर, इंटर साइंस की पढाई के लिए माँ के साथ काशी में रहने लगा। बाद में स्नेहमयी बॅनर्जी एकाएक लापता हो गयी। विपरीत परिस्थितियों में प्रशांत ने इंटर साइंस उत्तीर्ण कर मेडिकल कॉलेज से डॉक्टरी -परीक्षा उत्तीर्ण की। वह पटना मेडिकल कॉलेज का छात्र है तथा पढाई में हमेशा उच्च दर्जेपर रहा है। प्रशांत एक ध्येयवादी डॉक्टर है उसे मलेरिया तथा काला आजार इन दो रोगों पर अनुसंधान करना है। इसीकारण जब उसकी पढाई पूरी होती है और सरकार की तरफ से उसे स्कालरशिप पर विदेश भेजने की बात आती है तो वह हेल्थ मिनिस्टिर से मिलकर अपना फैसला सुना देता है कि वह विदेश नहीं जायेगा तथा पूर्णियाँ के पूर्वी अंचल में जहाँ मलेरिया तथा काला आजार हर साल मृत्यु की बाढ ले आता है वहाँ काम करना चाहता है। अपने इसी ध्येय के कारण वह एम. बी. बी. एस्. होते हुए भी मलेरिया तथा काला आजार जैसे रोग जिन पर कम प्रशिक्षित डॉक्टर इलाज कर सकते हैं। वहाँ काम करने का निर्णय लेता है। इसप्रकार उसे अपनी डिग्री का गर्व न होते हुए रोग पर अनुसंधान करने का जुनून सवार है।

यह ध्येयवादी डॉक्टर अपने ध्येय के साथ मेरीगंज गाँव आता है। इस पिछडे हुए तथा अनपढ गाँव में उसे प्रथम गाँववालों से सहाय्यता नहीं मिलती फिर भी निराश न होते हुए वहाँ धैर्य से डँटे रहता है। गाँव में

हैजे की बीमारी न फैलने के लिए वह गाँववालों को टीका लगवाना चाहता है तो एक भी गाँववाला अस्पताल नहीं आता। जब वह रोग के प्रतिबंध के लिए कुओं में दवा डालना चाहता है तो लोग दल बाँधकर उसका विरोध करते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि डॉक्टर ऐसा करके रोग फैला रहा है। फिर भी लोगों के मूर्ख विचारों पर गुस्सा न होते हुए अपने सहकारियों के साथ दल बाँधकर कुओं में दवा तथा लोगों को जबरदस्ती सुई लगवाता है ताकि रोग का फैलाव न हो।

फिर भी कुछ लोगों को यह बीमारी पकड ही लेती है। उस वक्त प्रशांत दिन रात अपने सहयोगियों के साथ लोगों की सेवा करता है। अपने कौशल्य से पाँच , सात लोगों को मरने से बचाता है। इन दिनों में उसका पूरा स्वास्थ बिगड जाता है,पर वह खुश है क्योंकि उसे अपनी सेहत से अधिक अपना कार्य महत्त्वपूर्ण है। लोगों का इलाज करने के बाद भी वह लोगों से फिस के रूप में कुछ नहीं लेता क्योंकि उसके लिए बीमार व्यक्ति की सेहत फिर से ठीक होना ही उसकी फीस है। इस प्रकार अत्यंत निस्वार्थ प्रवृत्ति से अपना कार्य करता है।

इस हैजे की बीमारी में डॉ. प्रशांत को आसपास के दस, पंद्रह गाँवों का परिचय प्राप्त होता है। भयातुर इंसानों को देखने, बीमार और निराश लोगों की आँखों की भाषा समझने का प्रयास करता है। वह सात महिने के बीमार बच्चे को बथुअे और पाट के साग पर पलते देखता है तथा गरीबी, हालात देखता है, जिससे उसका मन बीमार हो जाता है। उसके मन में उथल-पुथल मच जाती है। अपने देश के इन अप्रगत, बदतर अवस्था के देहातों को देख वह अस्वस्थ होता है और इसी कारण उसका इसी गाँव में रहकर कार्य करने का विचार और भी दृढ हो जाता है।

जिस प्रकार डॉक्टर को इस गाँव के लोगों से प्यार है उसी प्रकार उसका अपने देश पर भी बहुत प्यार है। उन दिनों गांधीजी के नेतृत्व में चल रहा स्वतंत्रता आंदोलन उसे अत्यंत महत्त्वपूर्ण लगता है। 1942 के स्वतंत्रता आंदोलन के दिनों वह अपनी डॉक्टरी पास कर हाऊस सर्जन का काम कर रहा था। वह उपाध्याय परिवार से था। उस परिवार के सारे सदस्य आंदोलन में गिरफ्तार हो चुके थे। उसे भी गिरफ्तार किया तथा जेल में रखा गया। उस वक्त उसने पहली बार आंदोलन को जाना। विभिन्न नेताओं को नजदीक से देखा। उनके विचारों को समझा। उन नेताओं के विचारों को समझने के बाद उसमें स्थित देशभक्ति और भी निखर गयी। देश के लिए खुद को कुछ करना है यह विचार उसमें स्थिर हो गया। इसी कारण उसने विदेशी स्कालरशिप पर विदेश जाने के बजाय अपने देश में ही अनुसंधान कार्य करने का निर्णय लिया। अपने देश, देश के देहातों की हालत देख वह दु:खी होता है। उसे लगता है कि इस पिछडे हुए देहातों को प्रगति पथ पर लाना अत्यंत जरुरी है। इसी कारण वह हमेशा

स्वतंत्रता आंदोलन में कार्यरत लोगों के पक्ष में रहता है।

डॉक्टर का हैजे की बीमारी में लोगों से संपर्क बढ जाता है। लोगों का उसकी तरफ देखने का अंदाज बदल जाता है। लोग उसका सम्मान करने लगते हैं। तथा वह भी लोगों से घुलमिल जाता है। यहाँ के लोगों में अंधश्रद्धा तथा छुआछूत बडी मात्रा में है, जो डॉक्टर के लिए एक हस्यास्पद बात है। गाँव में एक भद्र महिला है जिसे गाँव के लोग डायन समझते हैं तथा डॉक्टर को उससे दूर रहने के लिए बताते है। वह लोगों के लाख समझाने पर भी उस महिला से संपर्क बढाता है। उसके पोते गणेश से मैत्री बढा उसका इलाज करता है। उस मौसी के घर आता-जाता रहता है तथा उसके हाथ का खाना बडे चाव से खाता है। उसके लिए मौसी डायन नहीं तो प्यार की, ममता की मूर्ति है। उसके लिए ममतामयी प्यार पाना बडे महत्त्व की बात है, क्योंकि डॉक्टर के लिए हमेशा प्यार की कमी रही है। बचपन से ही उसे ममता का अभाव रहा है। वह किसी की दुलार भरी मीठी थपकियों के सहारे सो जाना चाहता है। गहरी नींद में खो जाना चाहता है। क्योंकि जिंदगी की जिस डगर पर वह दौड रहा था वहाँ कहीं भी उसे उसके आसपास क्षणभर सुस्ताने के लिए कोई छाँव नहीं मिली थी। एकदम अनाथ जीवन वह आज तक जीता आया था। उसकी माँ ने अपने पवित्र स्नेह और प्यार का प्रमाण प्रशांत को समाज के डर से बचपन में ही त्याग दिया था। पर प्रशांत ने हमेशा अपनी माँ की भावनाओं को समझने की चेष्टा की है। उसने माँ की बेबसता और लाचारी को समझा इसी कारण किसी पतिता, निर्वासित और समाज की दृष्टि से सबसे नीच माँ की गोद को उसने पवित्र माना है। उसकी मन ही मन में भक्ति की है।

शायद यही कारण हो सकता है कि उसने कभी प्यार नहीं किया। किसी स्त्री की ओर प्रेमिका के रूप में देखने की उसने चेष्टा नहीं की। दुनिया में अनेक लोगों की बीमारी का इलाज तो वह करता था पर दुनिया की नजरों में वह खुद बीमार था। उसने प्यार को हमेशा बायोलॉजी के सिद्धांतों से ही मापने की कोशिश की थी। इस कारण वह हमेशा कहता है,

''दिल नाम की कोई चीज आदमी के शरीर में है, हमें नहीं मालूम। पता नहीं आदमी लंग्ज को दिल कहता है या हार्ट को। जो भी हो, 'हार्ट' 'लंग्ज' या 'लीवर' का प्रेम से कोई संबंध नहीं है।''[1]

पर कमली जो विश्वनाथप्रसाद की एकमात्र संतान तथा उपन्यास की नायिका है उससे मिलने के उपरांत उसका दिल नाम की चीज पर विश्वास होने लगता है। और वह यह भी मानने लगता है कि ''आदमी का दिल होता है, शरीर को चीर-फाडकर जिसे हम नहीं पा सकते है। वह 'हार्ट' नहीं वह अगम अगोचर जैसी चीज

है, जिसमें दर्द होता है, लेकिन जिसकी दवा 'एड्रिलिन' नहीं। उस दर्द को मिटा दो, आदमी जानवर हो जाएगा। दिल वह मंदिर है जिसमें आदमी के अंदर का देवता बास करता है।''[2]

डॉक्टर को कमली की हँसी, उसका भोलापन बहुत भाता है। उसकी कमली से पहली मुलाकात कमली के बीमारी की वजह से होती है। वह उसका इलाज कर उसे ठीक कर देता है। दोनों में प्यार बढ जाता है।

इन्हीं दिनों में डॉक्टर अपना शोध जारी रखते हुए हैजे की बीमारी पर अनुसंधान पूरा कर लेता है। उसे उसके शोध के लिए मान्यता प्राप्त होती है। इस शोध में वह मलेरिया और काला आजार से संबंधित मिट्टी, हवा, पानी तथा पानी में पलनेवाले प्राणियों, कीटकों पर रोशनी डालता है। उसी के साथ इस रोग में खून परिवर्तन पर भी कुछ नई बातें कहता है। उसके इस शोधकार्य के लिए सब लोग तथा उसका महाविद्यालय उसके ऋणी होते हैं।

डॉक्टर के लिए अब वह गाँव नया नहीं रहता। गाँव का हर सदस्य उसका अपना हो जाता है। डॉक्टर का स्वभाव मिलनसार होने के कारण हर एक कार्यक्रम में वह सहभागी होता है। लोगों के यहाँ आता-जाता रहता है। त्योहारों में सहभागी होता है। उसी प्रकार विश्वनाथप्रसाद के यहाँ भी उसका आना जाना रहता है। कमली भी उसका आना पसंद करती है। विश्वनाथप्रसाद तथा उनकी पत्नी भी प्रशांत के स्वभाव पर खुश होने के कारण उसके घर आने पर एतराज नहीं करते। प्रशांत के लिए भी अब यह घर पराया नहीं रहता। उसका मेलजोल, उठना-बैठना, आना-जाना बढता है। कमली भी उसके साथ यहाँ-वहाँ घूमने लगती है। उनका प्यार दिन-ब-दिन बढ जाता है। वे दोनों प्यार की सारी सीढियाँ पार कर जाते है। जिसके परिणामस्वरूप कमली प्रशांत के बच्चे की माँ बन जाती है।

माँ बनना बुरा नहीं है पर उसके लिए समाज बंधनों तथा रिवाजों का पालन जरूरी होता है। इन रिवाजों के पालन बिना ही कमली माँ बन जाती है इसी कारण कमली के पिता डर जाते हैं। अपने को दुर्भागी मानते हुए वे प्रशांत पर गुस्सा होते हैं, पर वे कर भी क्या सकते थे ? क्योंकि उस वक्त प्रशांत गाँव में मौजूद नहीं था। गांव के संथालों को भडकाने का झूठा आरोप दरोगा द्वारा लगवाया जाने से प्रशांत को कारावास की सजा हुई थी। लेकिन कमली तो खुश है क्योंकि उसे अपने प्यार पर पूरा विश्वास है तथा प्रशांत किसी को धोखा दे सकता है यह बात वह स्वीकार ही नहीं कर सकती।

थोडे ही दिनों में डॉक्टर की रिहाई हो जाती है। वह अपनी सहपाठी ममता के साथ मेरीगंज आ जाता है। उसे अपने बच्चे की खबर मिलती है, वह सीधे कमली के घर आता है। विश्वनाथप्रसाद की चरणधूली लेकर अपने बच्चे तथा कमली का स्वीकार करता है। तथा कमली के विश्वास और प्यार का पात्र बन जाता है।

कमली के पिता को लगता था कि कमली का आंचल मैला हो गया है। वह बरबाद हो गयी है पर डॉ. प्रशांत एक जिम्मेदार तथा विश्वासपात्र आदमी होने के कारण कमली और बच्चे का स्वीकार कर अपनी कमली के मैले हुए आंचल को धो देता है। उसका मैला हुआ आंचल फिर से सफेद कर देता है।

इसके बाद जब उसकी सहपाठी ममता उसे उसके अगले जीवन के बारे में पूछती है तो प्रशांत उसे अपना उद्देश्य स्पष्ट करते हुए कहता है कि अब वह शहर नहीं जायेगा। वह यही, इसी मेरीगंज में रहकर अपने कार्य द्वारा अपनी ध्येय पूर्ति करेगा। क्योंकि उसे हमेशा यही लगता था कि भारत को यदि बडा बनना है तो भारत के देहातों की प्रगति करनी चाहिए। उनमें सुधार लाना चाहिए। भारत तो देहातों में ही बसा है। और इन देहातों का आँचल मैला हुआ है। उसे ही धोने की आवश्यकता है। इसी कारण वह ममता से कहता है,

''ममता ! मैं फिर काम शुरू करुँगा - यहीं, इसी गाँव में। मैं प्यार की खेती करना चाहता हूँ। आँसू से भीगी धरती पर प्यार के पौधे लहलहायेंगे। मैं साधना करुँगा, ग्रामवासिनी भारतमाता के मैले आँचल तले ! कमसे कम एक ही गाँव के कुछ प्राणियों के मुरझाए होठों पर मुस्कराहट लौटा सकूँ, उनके हृदय में आशा और विश्वास को प्रतिष्ठित कर सकूँ।''[3]

इस प्रकार वह साधना करना चाहता है अपनी भारतमाता के लिए। उसे लगता है कि इस ग्रामवासिनी भारत के मैले आँचल के तले कम से कम एक ही गाँव के कुछ लोगों के मुरझाएँ होठों पर मुस्कराहट ला, उनमें विश्वास तथा आशा ला सकें तो उसका उद्देश्य सफल बना।

इस तरह से उपन्यास का प्रमुख पात्र है जो मैले हुए आँचल को साफ करने में अपने जीवन की सार्थकता मानता है। अपने कार्य द्वारा उपन्यास का यह आदर्श पात्र बना है।

4.1.2 बालदेव :-

'मैला आँचल' के पुरूष पात्रों में एक है बालदेव। वह चन्नपट्टी का रहनेवाला है। पिता के गुजर जाने के बाद बचपन से वह अपनी माँ के साथ रहता है।

एक बार चन्ननपट्टी में काँग्रेस की सभा हुई थी। सभा में रामकिसुन बाबू नामक कार्यकर्ता का भाषण सुन वह राजनीति की ओर आकर्षित हो गया। तभी से वह स्वराजी बन पूर्णिया जिले के कार्यालय में काम करने लगा। यहाँ काँग्रेस का काम करते हुए बालदेव को दो साल तक कारावास हुआ था। इस काल में उसे अनेक अत्याचारों का सामना करना पड़ा। उसके लिए भारतामाता की आजादी और स्वतंत्रता आंदोलन के मुख्य नेता गाँधीजी दो ही बातें महत्त्वपूर्ण थी। गाँधीजी की एक पुकार पर वह मर मिटने को तैयार था। आंदोलनो में सक्रिय रहने के कारण उसे अनेक नेताओं के साथ रहने और उनके विचारों को सुनने का भाग्य मिला था। इसी कारण उसे आपस के झगडे पसंद न थे। वह जानता था कि एकता ही स्वतंत्रता ला सकती है। इसी कारण वह गाँव के लोगों को भी एकता का महत्त्व समझाकर उनके झगडे मिटाने का प्रयास करता है।

उसे साफ सफाई का बड़ा महत्त्व है। वह मेरीगंज को साफ बनाना चाहता है क्योंकि उसका विचार है जहाँ सफाई रहती है वहाँ का आदमी भी साफ रहता है और मन भी साफ रहता है। गाँव की साफ सफाई के साथ साथ उसका मन की सफाई पर भी विश्वास है इसी कारण लछमी उसे कंठी लेने (दिक्षा लेने) को कहती है तब बालदेव हँसकर कहता है,

''कोठारिन जी असल चीज है मन। कंठी तो बाहरी चीज है।''[4]

वह गाँव के सभी अच्छे कार्यों में सहभागी होता है। डॉ. प्रशांत द्वारा दिये जानेवाले मलेरिया प्रतिबंधक टीकाकरण में वह गाँववालों को एकत्रित करता है। गाँव के कूपों में दवा डालते वक्त भी वह सहभागी रहता है। मठ की तरफ से कभी प्रसाद या विशेष कार्यक्रम हो तब भी वह सक्रिय रहता है।

उसकी स्त्रियों की तरफ देखने की दृष्टि बहुत ही शुद्ध है। इसी कारण मठ की कोठारिन लछमी का वह बडा आदर करता है। मठ जैसे अपवित्र जगह रहने पर भी लछमी उसे पवित्र लगती है। उसके लिए लछमी मठ की दासी नहीं तो पवित्रता की मूर्ति है। लछमी की निकटता में वह अनुभव करता है कि लछमी के शरीर से पवित्रता की गंध निकलती रहती है। लछमी ने उसे रोज पढने के लिए जो बीजक दिया था, उसमें से भी उसे लछमी के शरीर की गंध निकलती हुई महसूस होती है। धीरे धीरे वह लछमी की ओर आकर्षित हो जाता है।

वह बडा ईमानदार है। उसे गाँव में कपडा, चीनी आदि पुर्जियां बाँटने का काम मिला था। वह काम भी बालदेव बडी निष्ठा और ईमानदारी से करता है। एक दिन उसके शिष्य पूर्णियाँ के समाजवादी नेताओं के संपर्क में आकर कॉमरेड बन जाते हैं, इसके कारण उसके राजनीतिक नेतृत्व को धक्का पहुँच जाता है। मठ को

महंती दिलाने के प्रसंग में कालीचरन रामदास को महंत बनाता है जिससे बालदेव का प्रभाव लगभग समाप्त हो जाता है। खेलावनसिंह यादव भी उसे अपने घर से निकाल देता है तब लछमी के आग्रह से वह मठ पर रहने के लिए आ जाता है परंतु महंत रामदास की नाराजी देख वह अपने गाँव चन्ननपट्टी जाने का निर्णय लेता है परंतु लछमी के आग्रह से वह गाँव में ही रुक जाता है।

आगे जब लछमी मठ के भ्रष्ट वातावरण के कारण मठ से अलग हो जाती है तब उसके साथ कमली आम के बाग में झोपडी बनवाकर रहने लगता है। लछमी उसकी बडी सेवा करती है। बालदेव का जीवन आनंदी हो जाता है। बालदेव के कारण ही लछमी जैसे मठ की कोठारिन को भले घर की स्त्री बनने का सौभाग्य मिलता है। यह बालदेव का बड्डपन ही है। वह चाहता है कि लछमी भी ऐसा ही बरताव करे जो भले घर की स्त्रियों को करना चाहिए। इसी कारण जब कभी लछमी गलत बरताव करती है तब वह उसपर गुस्सा होता है। परंतु लछमी के माफी माँगने पर उसका क्षोभ तुरंत चला जाता है। वह लछमी पर अधिक देर गुस्सा नहीं कर सकता।

ईर्ष्या बालदेव के चरित्र का कमजोर पक्ष है। उसे अपने सहयोगी बावनदास से ईर्ष्या है। इसी ईर्ष्यावश यह बावनदास से गलत व्यवहार करता है परंतु अपने गलत व्यवहार पर उसे पश्चाताप भी होता है।

लछ्मी के साथ रहते वह अपने कार्य को चालू ही रखता है। वह गाँधीजी का परम भक्त है। उनकी एक पुकार उसके लिए ईश्वर की पुकार है। गाँधीजी के देहांत का समाचार सुनकर वह 'रघुपति राघव राजाराम' भजन गाते बेहोश हो जाता है। सोलह सत्रह साल वह उनका अनुयायी बनकर जीवनयापन करता आया था। वह काँग्रेस का एकनिष्ठ कार्यकर्ता रहा। काँग्रेस की अपेक्षा उसकी गांधीजी पर अपार श्रद्धा थी। गाँधीजी की अहिंसा को उसने अपनी बुद्धिनुसार अपनाया। मेरीगंज के राजनीतिक गतिविधि की शुरुवात उसने ही की थी।

एक सहृदय, निडर, देशप्रेमी व्यक्ति के रूप में वह चित्रित हुआ है। मानव सुलभ कमजोरियाँ उसमें भी है परंतु उनके लिए उसमें पश्चाताप भी है। आदर्श और व्यवहार के सन्तुलन का वह एक उत्तम उदाहरण है।

4.1.3 कालीचरन :-

उपन्यास में बालदेव के साथ कालीचरन को भी महत्त्वपूर्ण स्थान मिला है। मेरीगंज के जागरण का दूसरा श्रेय कालीचरन को है। वह है तो बालदेव का शिष्य पर सूझ-बूझ में बालदेव से बढकर है। कालीचरन

पूर्णिया से समाजवादी बन कर लौटा तो उसने गाँव में समाजवादी दल की शाखा स्थापित की। उसने सामान्य लोगों के हो रहे शोषण को जाना था इसी कारण उसने लोगों को सादे कागज पर टीप देने से रोका था।

कालीचरन का अहिंसावाद पर विश्वास नहीं था। इसी कारण उसने बालदेव की अहिंसा बेकार लगती है। डॉक्टर प्रशांत द्वारा दिये जानेवाले हैजे के इंजेक्शन का गाँववाले विरोध करते हैं तो वह गाँववालों को जबरदस्ती इंजेक्शन लेने के लिए मजबूर करता है। मठ में रामदास को महंती दिलाने के लिए भी वह शक्ति का प्रयोग करता है। इस तरह से अपने इच्छित बात को पूर्ण करने के लिए वह शक्ति तथा जबरदस्ती का प्रयोग करना गैर नहीं मानता। गाँव के जमींदारों से संघर्ष करने के लिए भी उसने गाँववालों को प्रेरित किया था।वह लोगों से कहता है कि,

''मैं आप लोगों के दिल में आग लगाना चाहता हूँ। सोये हुए को जगाना चाहतां हूँ। सोशालिस्ट पाटी आपकी पाटी है , गरीबों की, मजदूरों की पाटी है। सोशालिस्ट पाटी चाहती है कि आप अपने हकों को पहचानें। आप भी आदमी है, आपको आदमी का सभी हक मिलना चाहिए। मैं आप लोगों को मीठी बातों में भुलाना नहीं चाहता। वह कांग्रेरेसी का काम है। मैं आग लगाना चाहता हूँ।''[5]

इसतरह से वह लोगों में जागृति लाता है। संथालों के साथ भी उसने संघर्ष किया था पर उसमें उसे हार माननी पड़ी।

वह समाजवादी नेता बनने के साथ समाजवादी विचारधारा का पूरा अनुसरण करता है। इसी कारण वह जातीभेद नहीं मानता। एक बार उसने चमार टोली में भात खा लिया था। उसकी उस बात पर गाँव के नाई, धोबी आदि ने उसका बहिष्कार किया किंतु कालीचरन ने उनकी परवाह नहीं की। वह पूरी तरह से समाज्वादी बन गया था इसी कारण महंत रामदास उसके बारे में ठीक सोचता है कि, -

''सुशालिट पाटी को वह औरत की तरह प्यार करता है।''[6]

इसतरह से वह सच्चा समाजवादी नेता है। साथ में समाजवादी नेता होने के कारण हमेशा खद्दर का पंजाबी कुर्ता पहने रहता है जिसे 'सोशलिट-कार्ट' कुर्ता कहा जाता था। इस प्रकार विचारों से लेकर वेशभूषा तक वह समाजवादी नेता बना है।

समाजवादी बनने के बाद कालीचरन कभी कभी हरगौरी को चिढाने के लिए परनाम-पाती न

करके 'नमस्कार' कर दिया करता था किंतु हरगौरी की मृत्यु के बाद वह व्याकुल हो जाता है। हरगौरी उसके बचपन का साथी था। इस प्रकार वह भावुक है। लेकिन इसके साथ साथ उसके स्वभाव में कडापन भी है। उसे अपमान सहन नहीं होता था। इसीलिए पूर्णिया में जब सैनिक जी की बीमार पत्नी ने उसे उल्लू कहा तो उसका सिर चकरा गया था। ग्वाला साठ बरस तक नाबालिग ही रहता है यह उस स्त्री का वक्तव्य सुनकर वह क्षोभ से भर गया था। अगर उस स्त्री की जगह कोई मर्द यह बात कहता तो वह उसका खून ही कर डालता। कालीचरन डकैती के झूठे आरोप के बाद भूमिगत रूप में ही रहने लगा। किंतु इस दशा में भी चाँद पहलवान का अहंकार सहन न होने से रूस्तुम खाँ के रूप में चाँद पहलवान से कुश्ती लडकर उसे हराया और फिर से फरार हो गया। इसके बाद वह पुलिस के द्वारा पकडा गया और बाद में कारावास से भी फरार हो गया। इसतरह से उसमें भावुकता के साथ साथ कडापन भी है।

कालीचरन के इस कडे स्वभाव में प्रेम जैसे कोमल भावनाओं को भी जगह है। वह हमेशा औरतों से पांच हाथ दूरी पर ही रहता था, किंतु रामदास को महंती दिलाने के प्रसंग में 'आबलूस की मूर्ति' जैसी लछमी को देखकर वह प्रभावित हुआ था। इसके बाद गाँव के चरखा सेंटर की मास्टरनी मंगलादेवी के बीमार पडने पर तो उसका औरतों से दूर रहने का व्रत भी टूट गया। वह मंगला की ओर आकर्षित हो गया। उसने मंगला की जी जान से सेवा की एक असहाय औरत देवता के संरक्षण में भी सुख चैन से नहीं सो सकती। यह सोचनेवाली मंगलादेवी ने कालीचरन के आसरे में सुख की नींद ली।

इस तरह से गाँव में आनेवाली अधकचरी क्रांति का प्रतिनिधित्व करनेवाला एक सशक्त पात्र है कालीचरन। अपनी निजी ईमानदारी, समझ, विद्रोह और प्रेमचेतना से कालीचरन का चरित्र महत्त्वपूर्ण बना है।

4.1.4 बावनदास :-

बालदेव और कालीचरन के अतिरिक्त उपन्यास में अन्य एक महत्त्वपूर्ण राजनीतिक कार्यकर्ता बावनदास का पात्र है।

वह अज्ञात कुलशील है। डेढ हाथ की ऊंचाई वाला आदमी है। लुढकते हुए चलता है। कार्यकर्ता रामकिसुन बाबू की पत्नी आभारनी उसे हमेशा ' भगवान' कहा करती थी।

उपन्यास के मंच पर बावनदास का प्रथम प्रवेश मिनिस्टर के पूर्णिया आने के समय होता है।

कालीचरन के समान ही बावनदास ने पंद्रह-बीस साल पहले काँग्रेस का काम शुरू किया था। वह मेरीगंज में पहली बार चरखा सेंटर खुलने के समय आया था। फुलकाहा बाजार की सभा में गांधीजी की उपस्थिति में 'एक राम-नाम-धन सांचा' गीत उसने गाया था। इसके बाद सन 1937 में जब जवाहरलाल नेहरू बिहार आए तो उन्होंने बावनदास के गले में माला पहनायी थी। 1942 में बावनदास ने कचहरी पर अपना झंडा लहरा दिया था। उसने एक बार अंग्रेज जेलर की बदमाशी के विरुद्ध पच्चीस दिनों का अनशन भी किया था।

मानव स्वभाव की कमजोरियाँ भी उसमें है पर उनके लिए उसमें पश्चाताप भी है। एक बार सिमरबनी से लौटते समय सिमराहा स्टेशन के बाजार में उसने मुठिया के चावल बेचकर मिले पैसों में से दे आने की जलेबियां खायी पर गलती महसूस होने पर उसने गले में उंगलियाँ डाल-डाल कर कै कर डाली। बावनदास के मन में एक बार चन्ननपट्टी के आश्रम में सोई हुई तारावती को देखकर काम भावना का संक्रमण हुआ जिसके कारण उसने सात दिनों का उपवास किया था। काँग्रेस का यह एकनिष्ठ सेवक जब काँग्रेस के कार्यकर्ताओं को पटनियां रोग का शिकार बना देता है, तो पीडित हो उठता है।

बावनदास गांधीभक्त है। गांधीजी की हत्या के बाद वह एकदम सूख कर कांटा हो जाता है।उसे गांधीजीने स्वयं चिठ्ठियाँ लिखी थी। जब उन चिठ्ठियों को गांगुलीजी को सौंपने के लिए वह बालदेव को दे देता है तो उसवक्त निरक्षर बावनदास उन चिठ्ठियों को बडी श्रद्धा से देख डालता है। गांधीजी की हत्या बाद उसे यह खबर लग जाती है कि उनकी श्राद्ध का मौका पाकर स्मग्लर लोग बहुतसारा सामान पाकिस्तान पहुँचाने की योजना बना चुके हैं तो वह उस पाप कृत्य को रोकना चाहता है। वह गांधीजीद्वारा लिखी उन पवित्र चिठ्ठियों को बालदेव को सौंपकर वह कलीमुद्दीपुर पहुँच जाता है जहँ वह पापकृत्य होनेवाला था। वह कपडे, चीनी, सीमेंट आदि से लदी पचासों गाडियों को रोकना चाहता है परंतु स्मगलर तथा तथाकथित काँग्रेसी दुलारचंद कापरा ने अपनी गाडियों को बावनदास के शरीर पर से चलवा दिया। बावनदास का शरीर चित्थी-चित्थी हो गया। कापरा ने बावनदास की लाश को पाकिस्तान की सीमा में फिकवा दिया। सुबह होने पर पाकिस्तानी सैनिकों ने उस लाश को भारत-पाकिस्तान की सीमा पर बहनेवाली नागर नदी में फेंक दिया और उसकी झोली को भारत की सीमा में एक पेड पर टांग दिया। बाद में दुखियारी स्त्रियों ने इसे चेथरिया पीर समझकर मनौती के रूप में इस पर अपने आँचलों को फाडकर चीथडे बांध दिये।

इस तरह से मेरीगंज से इसका प्रत्यक्षत: नगण्य संबंध है। उपन्यास मैं अल्पकाल के लिए आकर भी अपनी अलौकिक आभा से यह पात्र अन्य सभी पात्रों को मात कर जाता है।

बावनदास के प्रसंग में जिस चुन्नी गुँसाई का उल्लेख हुआ है वह रेणु का आँखों देखा पात्र है। बावनदास के समान चुन्नी ने सन 1930 में काँग्रेस में प्रवेश किया था। वह दस बार जेल जा चुका था और उसने एक बार जेल में पच्चीस दिनों का अनशन किया था और बाद में वह समाजावादी बना था।

4.1.5 अन्य पुरूष पात्र :-

'मैला आँचल' के अन्य पुरूष पात्रों में विश्वनाथप्रसाद, हरगौरी सिंह, जोतखीजी, सुमरितदास, सहदेव मिसर, मठ का महंत रामदास, लरसिंघदास, सेवादास, प्यारु आदि हैं। हर एक पात्र का अपना अपना वैशिष्ट्य है। हरगौरीसिंह को अपनी जमींदारी, तहसीलदारी तथा राजपूती का अभिमान है। जोतखीजी गाँव के रजपूतों को यादव लोगों का अहंकार झाड डालने के लिए उकसाता है। बाद में उसे लकवा मार जाता है। अन्य एक पात्र सुमरितदास है जिसे लोग 'बेतार' कहने लगे हैं। इसके अतिरिक्त सहदेव मिसर जो फुलिया का प्रेमी है। दुष्ट आदमी है लरसिंघदास, दमे का मरीज सेवादास महंत आदि का लेखक ने सीमित रेखाओं में प्रभावी चित्र खींचा है। प्यारु डॉक्टर प्रशांत का सेवक है जिसे गाँव की स्त्रियाँ 'दैय्या' कहती है तथा डॉक्टर प्रशांत को वह देवदूत-सा लगता है।

4.1.6 कमली :-

उपन्यास का प्रमुख स्त्री पात्र तथा प्रशांत की नायिका के रूप में कमली का परिचय मिलता है।

कमली गाँव के तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद की एकमात्र संतान है। माँ बाप के लाड प्यार से वह जिद्दी बन गयी है। वह हिस्टेरिया की मरीज है। उसके इलाज के दौरान उसकी मुलाकात डॉ. प्रशांत से हो जाती है। डॉ. उसपर इलाज शुरू करता है। कमली के बारबार बेहोश होना, मन-ही-मन बहुत से विचार करना, रेडिओ पर समाचार सुनने से डरना, शादी के गीतों को बडे उत्साह से सुनना आदि लक्षणों को देख डॉ. समझ जाता है कि वह हिस्टेरिया की ही मरीज है।

डॉक्टर से मिलने के उपरांत कमली धीरे धीरे अच्छी होने लगती है। कमली के लिए अब डॉ. केवल मरीज का इलाज करनेवाला हकीम न रहकर कुछ खास शख्स बन जाता है। वह घंटों घटों तक डॉक्टर के बारे में ही सोचने लगती है। उसे डॉ. से प्यार हो जाता है और वह चाहती है कि डॉक्टर भी उसकी भावनाओं को समझे।

धीरे धीरे डॉक्टर का तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद के घर आना जाना बढ जाता है। कमली उसे खाना बनाकर खिलाने लगती है, चाय पिलाती है। डॉक्टर समझ जाता है कि कमली का रोग अब भावात्मक संक्रमण के मोड पर पहुँच गया है।

डॉक्टर के कारण कमली का बीमार जीवन जो दु:खों से भरा था वह फिर से आनंदी बन जाता है। वह लोगों से मिलने-जुलने लगती है। गाँव के समारंभो, त्योंहारों में उत्साह से हिस्सा लेने लगती है। होली के दिन वह डॉक्टर को गुलाल मल देती है और वह चाहती है कि डॉक्टर भी उसे गुलाल मल दे। डॉक्टर अपने सीधे स्वभाव के कारण कमली को गुलाल मलने की बजाय हाथ में गुलाल ले खडा रहता है तब कमली उसका मजाक उडाते हुए कहती है,

''आप होली खेल रहे हैं या इंजक्शन दे रहे हैं। चुटकी में अबीर लेकर ऐसे खडे हैं मानो किसी की माँग में सिंदूर भरना हो।''[7]

कहने को तो कमली ने सिंदूर भरने की बात कही है। पर वास्तव में किसी भी आदमी के मन नें जो विचार मंथन रहता है वही उसकी जबान पर आता है। कमली तो मन से यही चाहती है कि प्रशांत उसकी माँग में सिंदूर भर दे। यही बात इस वक्तव्य द्वारा व्यक्त हुई है।

कमली के बोल को प्रशांत भी अब एक बीमार लडकी का कहा समझकर टाल नहीं सकता। वह कमली के साथ अपनी भावनाओं को भी समझ जाता है। कुछ दिनों पहले दिल नाम की चीज पर विश्वास न करनेवाला डॉ. प्रशांत का भी दिल धडकने लगता है यह केवल कमली के प्यार का जादू है। वह कमली की चाहत पूरी करते हुए अबीर की पूरी झोली कमली पर उलट देता है, जिससे कमली पूरी तरह से अबीरमय हो जाती है।

कीचड में रहकर जिसतरह कमल साफ रहता है, उसी प्रकार कमली कमल की तरह देहाती वातावरण में रहकर भी गवाँर नहीं है। अपने आसपास के अनपढ, अंधश्रद्धालु वातावरण से वह बिलकुल अलग है। किसी भी अंधश्रद्धा पर उसका विश्वास नहीं है। उसके पिता ने उसे पढ़ना लिखना सिखाया है। जिसका पूरी तरह से उपयोग कर वह अच्छे अच्छे उपन्यास पढती है। अपनी भावुकता से उपन्यासों के पात्रों की भावनाओं को महसूस करती है। लेखक के विचारों को अपने जीवन में लाने की कोशिश करती है।

जैसे जैसे दिन बीतते जाते हैं कमली और प्रशांत का प्यार बढ जाता है। उसके लिए डॉ. एक

जिन बन जाता है, ऐसा जिन जो याचकों की याचना पूरी करता हो, जिसपर पूरा भरोसा तथा श्रद्धा रख सकते हैं। कमली के मन में डॉ. के लिए कोइ संदेह नहीं रह जाता। दोनों प्यार की सभी सीढियाँ पार कर जाते हैं जिसके परिणामस्वरुप कमली प्रशांत के बच्चे की माँ बन जाती है। माँ बनना हर स्त्री के लिए खुशी की बात है कमली भी खुश है। उसके माँ-बाप भी खुश होते यदि वह प्रशांत की पत्नी होती। परंतु कमली अत्यंत निश्चिंत है। उसे न तो कोई डर है, न कोई आशंका, न समाज की चिंता। उसे अपने प्यार पर पूरा भरोसा है। उन दिनों गाँव के संथालों को भडकाने के आरोप में प्रशांत को कारावास हुआ था इस कारण वह गाँव में नहीं था। तब कमली पूरे विश्वास से उसके आने का इंतजार करती है। इन दिनों वह श्रेष्ठ साहित्यकारों के उपन्यास पढती है जिससे उसका विश्वास और भी दृढ हो जाता है।

थोडे ही दिनों में प्रशांत की रिहाई हो जाती है। यहाँ गाँव में कमली एक सुंदर बच्चे को जन्म देती है। प्रशांत की रिहाई की खबर सुन वह उसे एक चिठ्ठी भेज अपने घर के हालात बयान करते हुए कहती है कि वह आकर अपने बच्चे को अपना ले ताकि उसके माता-पिता को तसल्ली हो जाय और वे समझ जायें कि कमली ने किसी ऐरे-गैरे से प्यार नहीं किया था किसी गैर व्यक्ति पर अंधा विश्वास नहीं रखा।

प्रशांत अपने बच्चे की खबर सुनकर सीधे कमली के घर पहुँचकर खुशी से अपने बच्चे और कमली का स्वीकार करता है। प्रशांत के हाथों में उसका पुत्र सौंपकर कमली धन्य हो जाती है। बंकिमचंद्र के उपन्यास 'इंदिरा' की नायिका की तरह उसे भी अपना स्वामी फिर से मिल जाता है। उसका विश्वास, श्रद्धा, प्रेम सब सार्थक बन जाता है।

4.1.7 लछ्मी :-

'मैला आँचल' के प्रमुख स्त्री पात्रों में लछ्मी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। मेरीगंज के महंतो के मठ की कोठारिन के रूप में हमे लछ्मी का परिचय मिलता है।

लछ्मी पहले से मठ निवासी नहीं थी। वह एक सीधीसाधी अबोध बच्ची थी। मठ के प्रमुख महंत सेवादास लछ्मी के पिता के गुरूभाई थे। लछ्मी के पिता की मृत्यु के पश्चात सेवादास ने लछ्मी को संसार से निकालकर मठ में लाया तथा उसपर अपना अधिकार जमाया। वैसे तो उसपर अनेकोंने हक्क जताना चाहा पर अंत में कानूनन सेवादास की जीत हुई। सेवादास ने वकील से कबूली दी थी कि वह लछ्मी को पढालिखाकर उसकी शादी करवा देगा। परंतु आदमी की बुद्धि का कोई भरोसा नहीं वह कभी भी बदल सकती है। यहीं बात सेवादास के

साथ हुई और लछ्मी हमेशा के लिए मठ की दासी और सेवादास की सेविका बनकर रह गयी।

समय एक ऐसा धागा है जिसके साथ बहते बहते आदमी अपने को उसके साथ बाँध लेता है। लछ्मी ने भी अब अपने को मठ के नियमों में बाँध लिया है। सुबह से शाम तक वह मठ की सारी देखभाल करती है।

मठ में रहते रहते उसमें काफी बदलाव आया है। वह आध्यात्मिक विचारों को समझने लगी है। वह अपने आसपास शांति चाहती है, उसे झगडे पसंद नहीं है। वह चाहती है कि लोग सतगुरू के विचारों को समझे उनका आचरण करें। दुर्लभ मनुष्य जन्म को सार्थक बना दे। महंत सेवादास की मृत्यु के पश्चात हर कोई उसे हासिल करना चाहता है। उन भेडियों के बीच वह अकेली हो जाती है परंतु सत्गुरू पर विश्वास और अपार श्रद्धा के कारण वह उन लोगों का डँटकर सामना करती है। उन सारे भ्रष्ट लोगों में उसे केवल एक ही ऐसा व्यक्ति मिल जाता है जो उसका सम्मान करता है और उसे स्वार्थ की नजर से नहीं देखता तथा लछ्मी को समझने की कोशिश करता है और जिसे लछ्मी के भावनाओं की फिक्र है। यह आदमी है बालदेव जो अब लछ्मी से प्यार करने लगा है। यह बात लछ्मी के लिए सत्गुरू की कृपा ही है।

लछ्मी के व्रतस्थ जीवन में संसारिक आकर्षण व्यर्थ हैं। वह अपने मन को विचलित नहीं होने देती। फिर भी उसकी लाख कोशिशों के बाद उसका मन बालदेव की ओर आकर्षित होता ही है। उसके आसपास के भ्रष्ट व्यक्तियों में विश्वासपात्र बालदेव उसके लिए देवता आदमी है। वह उसकी बहुत इज्जत करती है। उसकी बिगडी हुई सेहत ठीक करने के लिए बडी लगन से उसकी सेवा करती है। अब बालदेव को मठ में आने के लिए जरा भी देरी हो जाती तो वह अस्वस्थ हो जाती है। उसका दिल धडकने लगता है। मन चंचल हो जाता है। उसे बालदेव से प्यार हो जाता है।

बालदेव के प्रति उसका प्यार उससे बालदेव की सेवा करवाता है परंतु सेवाभाव उसका निजी स्वभाव है। इसी कारण किसी भी व्यक्ति के दुर्गुणों को दुर्लक्षित कर वह उस व्यक्ति की सेवा करती है। सेवा करते वक्त उसके मन में न किसी पर दया करने की भावना होती है न बडप्पन जताने की। उसे तो सत्गुरू के दिखाये मार्ग पर चलने में ही आत्मिक शांति मिलती है। जो उसे मठ के भ्रष्ट वातावरण में भी पवित्र बना देता है।

सेवादास महंत की मृत्यु के बाद रामदास मठ का प्रमुख बन जाता है और धीरे धीरे मठ का वातावरण भ्रष्ट हो जाता है। ऐसे वातावरण में रहना लछ्मी के लिए असह्य हो जाता है। वह चाहती है कि मठ से

बाहर निकल अपने आप को मठ तथा मठ के व्रतस्थ जीवन से आजाद कर दे। उसकी इस चाहत को पूरा करने के लिए उसे किसी सहारे की जरूरत होती है और वह उसे बालदेव में नजर आता है। वह बडे ढाढस से बालदेव के पास अपने मन के द्वार खोल देती है और उससे वचन लेती है कि वह उसे छोडकर कहीं दूर नहीं जायेगा। बाद में वह बाल्देव के साथ मठ से अलग कलमी आम के बाग में रहने लगती है। धीरे धीरे वह अपने को सामान्य स्त्रियों जैसा बनाती है। कुलीन स्त्रियों जैसा व्यवहार सीख जाती है। परंतु एक बार बालदेव की अनुपस्थिति में काशी से आये साधु को वह घर में रख उससे बीजक पढवाती है तो बालदेव उसपर गुस्सा हो जाता है तथा उसपर संदेह करता है तब उसे सात्विक संताप आता है परंतु बाद में वह अपनी बात को गलत समझ बालदेव से माफी माँगती है। उसे किसी भी हालत में बालदेव से नाराजगी मोल लेना पसंद नहीं था। परंतु उसके संताप से उसकी निर्दोषता तथा बालदेव के प्रति एकनिष्ठता दिखायी देती है। वह हमेशा ही जिसके पास रही उसके साथ एकनिष्ठ रही है।

उसे बालदेव को अपने से दूर नहीं होने देना है इस कारण बालदेव की बडी से बडी गलती को भी वह नजर अंदाज करती है। बावनदास नामक कार्यकर्ता को गांधीजी ने स्वयं कुछ पत्र लिखे थे। बावनदास वह पत्र गांगुलीजी नामक कार्यकर्ता को सौंपने के लिए बालदेव के पास देता है। वह उन पत्रों को देख श्रद्धावश रो पडती है, उनकी चंदन और फूलों से पूजा करती है। पर जब बालदेव ईर्ष्यावश उनको जलाना चाहता है तब वह उनको बचाने के लिए झपट पडती है। उसमें वह जल जाती है। उसकी नजर से बालदेव गिर जाता है। परंतु इस प्रसंग के बाद भी वह बालदेव को अधिक देर तिरस्कृत नहीं कर सकती। वह सुबह बालदेव के चरणों का स्पर्श करके 'साहेब बंदगी' करती है। उसने बालदेव को माफ किया है। इस तरह वह बालदेव से दूर नहीं जा सकती।

इस प्रकार मठ से अलग इस जीवन में उसे शांति तथा आनंद मिलता है।

4.1.8 ममता :-

कमली और लछ्मी के साथ साथ उपन्यास के मंच पर अल्पकाल के लिए आकर चमक जानेवाली ममता का चरित्र विशेष आकर्षक है।

ममता उपन्यास के प्रमुख पात्र प्रशांत की सहपाठी है। ममता श्रीवास्तव दरभंगा के प्रसिद्ध डाक्टर कालीप्रसाद श्रीवास्तव की सुपुत्री है। डाक्टरी पास करने के बाद उसने हेल्थयुनीट की स्थापना की है। जिसके तहत वह समाजकार्य करती है। पटना की महिला समाज सेविकाओं में उसका नाम सबसे पहले लिया जाता है। डॉक्टर प्रशांत ने अपने कार्य के लिए ममता से प्रेरणा पाई है। विदेश न जाकर देश में रहते हुए रोग पीडितों की

सेवा करनेवाले प्रशांत से उसने कहा था,

''ओह प्रशांत तुम कितने बडे हो, कितने महान।''[8]

ममता का यह कथन स्वयं उसकी महत्ता का भी संकेत करता है।

उसी ने यह कहा था कि,

''अस्पताल में कराहते हुए गरीब रोगियों के रूदन को जिंदगी का एक संगीत समझकर उसे भोग करना ही डॉक्टर का कर्तव्य नहीं।''[9]

पूर्णिया जेल से डॉक्टर के रिहा होने पर वह जेल के दरवाजे पर उसे लेने के लिए पहुँच जाती है। डॉक्टर प्रशांत के जीवन में मिट्टी और मनुष्य के प्रति उमडती हुई गहरी मुहब्बत से उसे संतोष मिलता है। अपने प्रेमी प्रशांत को कमली के प्रेम में बंधा देखकर वह क्षुब्ध नहीं होती और न ही उसे कमली के प्रति ईर्ष्या होती है। उसका मन विशाल है। उसके विशाल मन में प्रशांत कमली के साथ साथ उन दोनों के बच्चे निलोत्पल के लिए भी उतनी ही जगह तथा प्यार है। उसके जीवन में एकमात्र विलास चाय है। तथा उसने अपने को समाजसेवा में कार्यरत रखा है। अपने कर्मद्वारा वह उपन्यास में अपना प्रभाव छोडती है। स्वयं रेणु ने ममता को 'शरतबाबू के उपन्यासों की नारी' कहा है।

'मैला आँचल' के अन्य स्त्री पात्रों में फुलिया, सेविया, रमपियरिया पारबती की माँ आदि हैं।

रमपियरिया रामदास महंत की दासी है। उसका स्वभाव लौंगी मिर्च की तरह तेज है। पारबती की माँ अधेड उम्र की भद्र महिला है। जो अपने एकमात्र नाती गणेश के साथ रहती है। स्वभाव से अत्यंत मृदु तथा ममतामयी है। उसके खानदान के सब लोग चल बसे है जिससे लोग इस स्त्री को लोगों को खा जाने वाली डायन मान उससे दूर रहते हैं। फुलिया एक जवान बेवा स्त्री है जिसके सहदेव मिसर के साथ रंगीन संबंध है।

इस प्रकार इन स्त्री पात्रों का उपन्यास में अपना अपना स्थान रहा है।

प्रस्तावना :-

पात्रों का प्रस्तुतीकरण एवं उनका चरित्र-निरूपण उपन्यास की प्राथमिक आवश्यकता है।

कथानक को अपना विशिष्ट रूप पात्रों के विशिष्ट चरित्र के कारण ही प्राप्त होता है। इस प्रकार चरित्र चित्रण उपन्यास का मूलाधार बन जाता है। वैसे तो सभी प्रकार के उपन्यासों में चरित्र चित्रण को महत्त्वपूर्ण स्थान है फिर भी आँचलिक उपन्यासों में उसकी विशिष्ठ स्थिति होती हैं। पात्र कल्पना एवं चरित्र कल्पना का जो अभिनव रूप आँचलिक उपन्यासों में देखने में आता है वह आँचलिकता की अवतारणा में विशेष सहयोग देता है।

4.2 आँचलिक चरित्र चित्रण की विशेषताएँ :-

4.2.1 क. पात्र-कल्पना -(पात्रों की विशिष्टता वर्ग-विभाजन के आधार पर)

आँचलिक उपन्यासों के पात्र अन्य प्रकार के उपन्यासों के पात्रों के समान सामान्य जीवन से ही चुने जाते हैं। परंतु आँचलिक जीवन की स्वयं की विशिष्टता होने के कारण पात्रों में भी वैशिष्ट्य का समावेश हो जाता है। आँचलिक उपन्यासों में तीन वर्गों के रूप मिल जाते हैं। ये वर्ग है उच्च वर्ग, मध्य वर्ग और निम्न वर्ग।

4.2.1.1 उच्च वर्ग :-

इस वर्ग में आँचलिक जीवन की विशिष्टताएँ परिलक्षित नहीं होती। इस वर्ग के पात्र परंपरावादी वर्ग के होते हैं। परंपरावादी इसीलिए कि शोषण की प्रवृत्ति मध्ययुगीन सामंतवादी परंपरा का ही अवशेष है।

इस वर्ग में एक स्तर ऐसा है जिसके पात्र जागृत होते हैं। उनमें दुर्वृत्ति पर सद्वृत्ति विजय पा लेती है और उनका चरित्र परिवर्तित होता जाता है। इस प्रकार इसमें परिवर्तनशील पात्र आ जाते हैं।

इन उच्च वर्गीय पात्रों में एक ऐसा वर्ग भी आ जाता है जिन्हें प्रगतिवादी या आदर्श पात्र कहा जाता है। अपेक्षाकृत ऐसे पात्र अत्यल्प होते हैं।

4.2.1.2 मध्य वर्ग :-

आँचलिक उपन्यासों में मध्यवर्ग अपनी विशिष्टता रखता है। क्योंकि इस वर्ग में उच्चवर्ग एक कदम नीचे रखकर और निम्नवर्ग का पात्र एक कदम उपर रख कर बडी आसानी से इसमें आ मिलता है।

शुद्ध मध्यवर्ग के पात्र दो प्रकार के होते हैं। एक जो आँचलिक कथा के प्रवाह से हटकर अपना

कार्यक्षेत्र बनाते हैं। दूसरे जो आँचलिक जीवन को अपना कार्यक्षेत्र बनाकर उसे प्रभावित एवं निर्देशित करते हैं।

4.2.1.3 निम्नवर्ग :-

आँचलिक उपन्यासों का महत्त्वपूर्ण वर्ग। पात्रों की विशिष्टता इसमें आ जाती है।

इस वर्ग के दो भाग किये जाते हैं।

(1) जन-जातियों के अंतर्गत आनेवाले पात्र ।

(2) जन-सामान्य के अंतर्गत आनेवाले पात्र।

4.2.2 ख सामान्य विशेषताएँ :-

(1) प्रतिनिधी पात्रों का बाहुल्य होता है।

(2) व्यक्तिगत गुणों का स्थान होता है।

(3) क्षेत्रिय विशेषताओं की पात्रों में अभिव्यक्ति हो जाती है।

(4) उपन्यासकार का जीवनदर्शन पात्रों में अभिव्यक्त होता है।

4.2.3 ग चरित्र कल्पना :-

(1) बाह्य सौंदर्य का चित्रण।

(2) आंतरिक सौंदर्य का चित्रण।

4.3 क) पात्रों की विशिष्टता वर्ग-विभाजन के आधार पर :-

आँचलिक उपन्यासों के पात्रों को उनके चरित्र विश्लेषण की सुविधा के लिए तीन वर्गों में (उच्च, मध्य और निम्न) बांटा जा सकता है।

4.3.1 उच्च वर्ग :-

प्रथम वर्ग उच्चवर्ग है, जिसमें शोषण की प्रवृत्ति रखनेवाले परंपरावादी पात्रों का चित्रण होता है।

'मैला आँचल' में ऐसे परंपरावादी पात्र का चित्रण नहीं हुआ है। उच्च वर्ग में एक स्तर ऐसा है जिसमें जागृत पात्र आते हैं। ऐसे पात्र परिवर्तनशील होते हैं।

'मैला आँचल' का तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद जागृत पात्र है। इसके विचारों में प्रगतिवाद है। वह प्रेम, त्याग, उदारता, दया आदि मानवीय गुणों से पूर्ण है। इन्हीं गुणों के कारण उसका अपनी रैयत की तरफ हमेशा अच्छा व्यवहार रहा है। पहले वह परंपरावादी जमींदार था पर जमाने की हवा का रुख पहचानकर, आदर्श सिद्धांतों से प्रभावित हो और युग की प्रगतिशील शक्तियों की ताकत को पहचानकर वह अपनी पुरानी लीक और जडता रूढिवादिता को छोड अपने को युग के अनुकूल ढाल देता है। उसकी इस उदारता के कारण ही वह रैयत पर जोर-जबरदस्ती नहीं करता। रैयत भी उसपर खुश है। तहसीलदार न रहनेपर भी वह बिना टीप लिए मजदूरों को धान दे सकता है। रैयत उसके बारे में कहती है, ''जो भी हो तहसीलदार के दिल में दया धर्म है। बाकी मालिक लोग तो पिशाच हैं, पिशाच !''[10]

इस तरह से उसका पात्र परिवर्तित हुआ है। जब नया सर्किल मैनेजर विश्वनाथप्रसाद पर जोर डालता है कि एक साल का खजाना जिन पर बकाया है उन पर चुपचाप नालिश कर दो। फिर चुपचाप डिग्री जारी करवाकर नीलाम करो और जमीन खास कर लो। तो विश्वनाथप्रसाद इतना बडा अन्याय करने से साफ इन्कार कर देता है। विश्वनाथप्रसाद के इन्कार पर जब उसे इस्तिफा देने के लिए कहा जाता है तो वह तुरंत अपना इस्तिफा दे देता है। वह कहता है,

''आज पाप की गठरी फेंक आया हूँ।''[11]

उसके लिए तहसीलदारी से इस्तिफा देना गंगास्नान से भी बढकर पुण्य का काम है। जिसका अवसर बार-बार नहीं मिलता। सारी जिंदगी वह गुलामी नहीं कर सकता।

वह अपने पोते के बारही पर अपनी रैयत की खुद की जमीन बाँटता है। वह ऐलान करता है कि,

''हरेक परिवार को पाँच बीघा के दर से जमीन में लौआ दूँगा। साँझ पडते पडते मैं सब कागज पत्तर ठीक कर लेता हूँ और संथाल टोली में जाकर कहों ---वे लोग भी आकर रसीद ले जाएँ। एक पैसा सलामी या नजराना, कुछ भी नहीं।''[12]

इस तरह से वह अपनी सौ बीघे जमीन लोगों में बाँट देता है। मेरीगंज जैसे गाँव का मालिक, एकछत्र जमींदार तथा पेशे से तहसीलदार व्यक्तिद्वारा ऐसा उदात्त वर्तन प्रशंसनीय है। उपन्यास का यह एक जागृत पात्र है।

उच्च वर्ग के एक स्तर में आदर्श पात्रों का चित्रण होता है। डॉ. प्रशांत इस वर्ग का पात्र है। वह अपने आप में एक आदर्श पात्र है। 1942 के एक क्रांतिकारी से संबंध होने के कारण उसे कारावास हुआ था। उस कारावास में उसने स्वतंत्रता आंदोलन को जाना, अनेक नेताओं को नजदीक से देखा तथा उनके विचारों को समझा। उसमें स्थित देशभक्ती और भी निखर गयी। इसी कारण ही तो कारावास से रिहा होने पर उसने मलेरिया और कालाजार पर अनुसंधान करने का निश्चय किया। इसके लिए उसने विदेश स्कालरशिप पर जाने का सरकारी प्रस्ताव ठुकरा दिया। यह उसका देशप्रेम ही है जो अपनी निजी उन्नती का विचार करने की बजाय देशवासियों के लिए कुछ करना चाहता है। इसके लिए वह पूर्णिया के पूर्वी अंचल को अपना कार्यक्षेत्र बनाता है। ग्रामवासिनी भारतमाता के अंचल के तले, आंसू से भीगी धरती पर वह प्यार की खेती करना चाहता है। अपने देश के पिछडे हुए अंचल की उन्नति के लिए कार्य करना चाहता है। इसीलिए वह कहता है,

''मैं प्यार की खेती करना चाहता हूँ। आँसू से भीगी हुई धरती पर प्यार के पौधे लहलहाएँगे। मैं साधना करुँगा। ग्रामवासिनी भारतमाता के मैले आँचलतले ! कम से कम एक ही गाँव के कुछ प्राणियों के मुरझाए ओठों पर मुस्कराहट लौटा सकूँ, उनके हृदय में आशा और विश्वास को प्रतिष्ठित कर सकूँ।''[13]

इस तरह से अपनी ध्येयपूर्ति के लिए अपने आप को समर्पित कर हमेशा के लिए मेरीगंज गाँव का निवासी हो जाता है। इस प्रकार मानव-प्रेम, लोक-कल्याण एवं धरती माता के प्रेम से उसका चरित्र निखर गया है।

4.3.2 मध्यवर्ग :-

मध्यवर्ग के दो प्रकार पायें जाते हैं। उनमें से प्रथम प्रकार के पात्र आँचलिक कथा के प्रवाह से

हटकर अपना कार्यक्षेत्र बनाते हैं। इस वर्ग में 'मैला आँचल' की 'कमली' यह पात्र आ जाता है। कमली की अपनी ही एक दुनिया है। आँचलिक जीवन से बिलकुल अलग अपनी ही दुनिया में खोयी हुई कमली पढी-लिखी है। बडे बडे लेखकों की किताबें पढती है। अपने भावुक स्वभाव के कारण उपन्यास के पात्रों की भावनाओं को महसूस करती है। लेखक के विचारों को अपने जीवन में लाने की कोशिश करती है। गाँव के अन्य लोगों जैसी अंधश्रद्धा वह नहीं रखती। उन लोगों की मान्यताएँ उसे दकियानूसी लगती है। वह अत्यंत अनांचलिक ढंग का प्रेम करती है। डॉक्टर प्रशांत से किसी प्रकार की कोई लज्जा या दुरावा नहीं। हंसी-ठट्ठा और साथ साथ घूमने से लेकर अस्पताल में जाकर अकेली मुलाकातें तक इसमें शामिल है। आगे जब कमली शादी से पहले प्रशांत के बच्चे की माँ बन जाती है तो समाज के डर से उसके माता-पिता डर जाते है। परंतु कमली एकदम निश्चिंत निर्भय रहती है। उसे अपने प्यार पर पूरा भरोसा होता है इसी कारण ही तो वह डॉक्टर प्रशांत के कारावास से वापस उसके पास आने का निश्चिंतता से इंतजार करती है। इसतरह से उसकी कथा का उपन्यास के आँचलिक जीवन से कोई संबंध नहीं।

बावनदास भी इसी तरह का पात्र है। वह राष्ट्रवादी है। डेढ हाथ का यह आदमी है जिसकी दाढी-मूँछ बहुत भारी है। लुढकते हुए चलता है। उसकी गांधीजी के प्रति नितांत श्रद्धा है। उसे 'भारतमाता जार-बेजार रोती' दिखायी देती है। गांधीजी की हत्या के बाद वह अत्यंत दु:खी हो जाता है। गांधीजी के श्राद्ध के दिन स्मग्लर तथा तथाकथित काँग्रेसी दुलारचंद कापरा तस्करी की योजना रचता है तो यह बात बावनदास के लिए असह्य हो जाती है। वह उन लोगों को रोकना चाहता है और उस प्रयत्न में वह मारा जाता है। इस प्रकार मेरीगंज से इसका प्रत्यक्षत: नगण्य संबंध होते हुए भी अपनी अलौकिक आभा से यह पात्र सभी पात्रों पर मात कर जाता है।

दूसरे प्रकार में वे पात्र आते हैं जो आँचलिक जीवन को अपना कार्यक्षेत्र बनाकर उसे प्रभावित एवं निर्देशित करते हैं। मध्यवर्गीय पात्रों का अधिक स्वाभाविक, प्रभावशाली एवं यथार्थ रूप ऐसे पात्रों में प्रकट होता है जो आँचलिक जीवन से संयुक्त होकर चलते हैं। अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के पात्र इसमें आ जाते हैं।

अच्छे पात्रों में 'मैला आँचल' के बालदेव, लछ्मीदासी और कालीचरन आदि आ जाते हैं।

लछ्मी दासी मेरीगंज के मठ की कोठरिन है। संसार से अलग वह त्याग और तपस्यामय जीवन व्यतित कर रही है। कई बार उसे सांसारिक प्रलोभन आकर्षित करते हैं, परंतु वह अपने आप पर नियंत्रण करने में सफल बनती है। इतनी उसमें आत्मिक शक्ति है। कालीचरन सच्चा जनसेवक है। वह एक जननेता के रूप मे

विकसित हुआ है। वह समाजवादी विचारधारा का पूरा अनुसरण करनेवाला सच्चा समाजवादी नेता है। वह अपने समाजवादी तत्वों से गाँव की प्रगति करना चाहता है। कुछ हद तक इसमें सफल भी बना है। वह अपनी निजी ईमानदारी, समझ, विद्रोह प्रेमचेतना से एक सशक्त और अच्छा पात्र बना है।

बालदेव एक कार्यकर्ता है। मेरीगंज की राजनीतिक गतिविधी की शुरूवात उसने की थी। वह एक सहृदयी, निडर देशप्रेमी व्यक्ति के रूप में चित्रित हुआ है। उसे पिछडे हुए मेरीगंज को प्रगतिपथ पर लाना है। इसके लिए वह सदैव कार्यरत रहता है। उसके अपने कुछ सिद्धांत है जिनपर वह विश्वास करता है परंतु कई बार उनका अनुसरण नहीं कर पाता। इसी कारण बावनदास के प्रति उसके मन में ईर्ष्याभाव जागृत हुआ था। इस तरह से मानवसुलभ कमजोरियाँ उसमें भी है, किंतु उनके लिए उसमें पश्चाताप भी है।

इन भले पात्रों के साथ बुरे पात्र भी उपन्यास का प्रतिनिधित्व करते हैं।

'मैला आँचल' में जोतखीजी, महंत रामदास आदि पात्र आ जाते हैं।

जोतखीजी अत्यंत दुष्ट स्वभाव का आदमी है। गाँव के राजपूतों को यादव लोगों का अहंकार झाड डालने के लिए उकसाता रहता है। गाँव के लोगों में आपस में झगडे लगवाता है। उसकी सलाह पर ही हीरू ने पारबतिया की माँ को डाइन समझ कर मार डाला। गाँव के हर अच्छे काम में वह आडे आता है। उसकी चारों स्त्रियाँ मर चुकी है। अंत में उसे लकवा मार जाता है।

महंत रामदास सेवादास महंत के बाद मठ का प्रमुख महंत बन जाता है। मठ का प्रमुख महंत होने के बाद भी वह सत्गुरू के मार्ग का आचरण नहीं करता। वह मठ को भ्रष्ट बना देता है। मठ की कोठारिन लछ्मी को जबरदस्ती अपनी दासी बनाना चाहता है। जब लछ्मी उसकी दासी बनना अस्वीकार करती है तो वह अन्य एक स्त्री रामपियरीया को अपनी दासी बनाता है। और दोनों मिलकर मठ को अपवित्र बना देते हैं।

इस तरह से उपन्यास के भले पात्र प्रगतिवादी विचारों का प्रतिनिधित्व करते हैं तो बुरे पात्र प्रतिक्रियावादी शक्तियों के प्रतिनिधि बने हैं।

4.3.3 निम्नवर्ग :-

आँचलिक जीवन सामान्यत: निम्नवर्ग के पात्रों में ही अधिक मुखर होता है। आँचलिकता का

आधार भी निम्नवर्ग के पात्र ही होते हैं। इस वर्ग के दो भाग सरलता से किये जाते हैं। इसमें एक है जनजातियाँ और दूसरा जन-सामान्य।

जनजातियाँ पिछडे जीवन का उद्‌घाटन करती है। 'मैला आँचल' के मेरीगंज गाँव में अनेक जनजातियाँ हैं। इन जनजातियों के आचार विचार, रीतरिवाज, मान्यताएँ आदि का विस्तार से उपन्यासकार ने चित्रण किया है। यहाँ के हिंदू अनेक टोलियों में विभक्त है।गहलोत, तंत्रिमा, दुसाध ऐसी जातियों के लोग अलग अलग टोलियों में रहते हैं। यादव जाति के लोग बडी संख्या में हैं। इसके साथ राजपूत, ब्राह्मण, कायस्थ आदि जातियों का अपना अपना स्थान है। निम्न जाति में चमार, धोबी नाई आदि लोग आते हैं। गाँव के मठ में गोसाई जाति के लोग रहते हैं। संसारिक जीवन से परे अनेक कुछ अपने ही नियम होते हैं। उपर्युक्त जातियों के अतिरिक्त उपन्यास में संथालों का भी एक अलग स्थान है। संथाल आदिवासी लोग हैं जिन्हें गाँव के बाहर जंगल में बसाया गया है।

इन जनजातियों द्वारा गाँव के जीवन का पिछडापन या उनकी विशिष्टता उद्‌घाटित हुई है।

जनसामान्य के अंतर्गत आनेवाले पात्र निश्चित वर्गों में बंधे हुए नहीं होते। उनमें ग्रामीण जीवन के सभी पक्षों के प्रतिनिधि उपस्थित होते हैं।

'मैला आँचल' में मेरीगंज गाँव के सारे सदस्य चित्रित हुए हैं। इसमें बालदेव, लछ्‌मीदासी, महंत सेवादास, रामदास, लरसिंघदास, रामपियरिया, खलासीजी, फुलिया, जोतखीजी, पारबती की माँ, नागासाधु, हरगौरीसिंह, खेलावनसिंह तथा तंत्रिमाटोली, कुर्मछत्रीटोला, धनुकधारी छत्रीटोला, गहलोत छत्रीटोला आदि के माध्यम से मैले आँचल का स्वरुप स्पष्ट हुआ है।

इस तरह से आँचलिक उपन्यासों के तीन वर्ग (उच्च, मध्य तथा निम्न) के पात्रों की आँचलिकता का विवेचन स्पष्ट हुआ है।

4.4 सामान्य विशिष्टताएँ :-

(1) आँचलिक उपन्यासों में प्रतिनिधि पात्रों का बाहुल्य होता है।

उपन्यास के सभी पात्र किसी न किसी रूप में प्रतिनिधि बनकर उपस्थित हुए हैं। साथ में ये सभी

पात्र प्राय: अंचलरूपी महायात्रा के जीवन के किसी न किसी पक्ष पहलू या प्रवृत्ति के प्रतिनिधि होते हुए भी अपनी निजी वैयक्तिकता से भी समन्वित हैं।

'मैला आँचल' में बालदेव उन निम्न-स्तरीय नेताओं का प्रतिनिधित्व करता है, जिनमें लगन होती है परंतु योग्यता नहीं।

कालीचरन गाँव में उभरती हुई नयी वर्ग चेतना तथा वर्ग संघर्ष का प्रतीक है।

डॉ. प्रशांत की सहपाठी ममता शरत्बाबू के उपन्यासों की नारी वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है।

महंत सेवादास, महंत रामदास, लरसिंघदास भ्रष्ट साधुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।

तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद प्रभुता-संपन्न वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है, जिनके विचारों में प्रगतिवाद होता है।

मठ की कोठारिन लछ्मी दासी शोषित देवदासी वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है।

इनके अतिरिक्त विभिन्न वर्गों के पात्र अपने अपने वर्ग की प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

(2) कई प्रतिनिधि पात्र व्यक्तिगत गुणों से परिपूर्ण होने के कारण अपने ही वर्ग में अपनी विशेष स्थिति बना लेते हैं।

'मैला आँचल' के विश्वनाथप्रसाद, डॉ. प्रशांत आदि पात्र इसमें आ जाते हैं।

तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद केवल राजकीय अधिकारी ही नहीं तो प्रेम, त्याग, उदारता, दया आदि मानवीय गुणों से पूर्ण है। इन्हीं गुणों के कारण उनका अपनी रैयत की तरफ हमेशा अच्छा व्यवहार रहता है। पहले वह परंपरावादी जमींदारों का प्रतिनिधित्व करनेवाला व्यक्ति था पर जमाने की हवा का रूख पहचानकर, किसी आदर्श या सिद्धांत से प्रभावित होकर और युग की प्रगतिशील शक्तियों की ताकत को पहचानकर वह अपनी पुरानी लीक और जडता रूढिवादिता को छोड़ अपने को युग के अनुकूल ढाल देता है। अपने पोते की बारही पर सौ बीघा जमीन अपनी रैयत में बाँट देता है। कार्यालय में आये नये मैनेजर के हुकूम का पालन नहीं करता जो हुक्म उसके द्वारा लोगों की जमीन जब्त करवाना चाहता है। वह तुरंत मैनेजर के

हुक्म का पालन करने की बजाय इस्तिफा दे देता है। इन्हीं गुणों के कारण वह अन्य अधिकारियों तथा परंपरावादी जमींदारों से अलग अपना स्थान बना लेता है।

इसी तरह से डॉक्टर प्रशांत समाजसेवा के अपने लक्ष्य के कारण अपना अलग स्थान बना लेता है। अपने इस लक्ष्य के कारण तो वह विदेश स्कालरशिप पर जाने की बजाय पूर्णिया जिले को अपना कार्यक्षेत्र बनाकर मलेरिया और कालाजर जैसे रोगों पर अनुसंधान करने का निर्णय करता है। वह भारत के पिछडे हुए देहातों को प्रगतिपथ पर लाना चाहता है। वह आँसू से भीगी हुई धरती पर प्यार के पौधे लहलहाना चाहता है। मुरझाए होठों पर मुस्कराहट लाना चाहता है। इसी कारण वह हमेशा के लिए मेरीगंज का निवासी बन अपने आप को जनसेवा के लिए समर्पित कर देता है।

आँचलिक उपन्यासों में सामान्य पात्रों को उभार कर उनके द्वारा सामाजिक जीवन की कथा कहलाने के लिए उनमें व्यक्तिगत गुणों का हल्का पुट दे दिया जाता है। ऐसे पात्रों में उनका विशेष गुण मिल जाता है जो उन्हें अन्य पात्रों से भिन्न करता है।

'मैला आँचल' में लछ्मीदासी में पवित्रता, बालदेव में सच्चारित्रता, समाजवादी कालीचरन में विद्रोह, डॉ. प्रशांत की समाजसेवा एवं देशप्रेम, ममता में प्रेम का उदात्तीकरण, तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद की उदारता, कमली में प्रेमचेतना आदि गुणों का चित्रण हुआ है। अपने गुणों से ये वैशिष्ट्यपूर्ण बनें है। लछ्मीदासी मठ जैसे भ्रष्ट वातावरण में रहते हुए भी पवित्र है।उसे महंत सेवादास की मृत्यु के बाद महंत रामदास जबरदस्ती अपनी दासी बनवाना चाहता है परंतु वह इस बात का जोरदार इन्कार करती है। बालदेव के साथ मठ से अलग होने पर हमेशा उससे एकनिष्ठ रहती है। सत्गुरू के नियमों का पालन करना वह अपना प्रथम कर्तव्य समझती है।

बालदेव एक देशभक्त, कार्यकर्ता है। उसका स्त्रियों की तरफ देखने का नजरिया हमेशा साफ रहता है। उसकी जिंदगी में आयी तीन स्त्रियाँ उसकी माँ, रामकिसुन बाबू की पत्नी मायेजी तथा अधोजी भगत की कन्या रूपमती उसके लिए अत्यंत आदरणीय रही है। उसने इनका हमेशा सम्मान किया है। इनके बाद उसके जिंदगी में आयी चौथी तथा अंतिम स्त्री है लछ्मी दासी जिसे वह मठ के अन्य लोगों जैसे एक भोग्यवस्तु या दासी के रूप में नहीं देखता तो उसके लिए लछ्मीदासी पवित्रता की मूर्ति है। लछ्मी के सहवास में वह अनुभव करता है कि लछ्मी के शरीर से पवित्र सुगंध निकलती है। वह मठ के भ्रष्ट साधुओं के चुंगल से लछ्मी को बाहर निकाल उसे इज्जत की जिंदगी बहाल करता है।

समाजवादी पक्ष का सच्चा नेता है कालीचरन जो अहिंसा पर विश्वास नहीं रखता। वह अपने हक को हासिल करने के लिए विद्रोही वृत्ति रखना आवश्यक समझता है। इसी कारण वह गाँव के लोगों को संघर्ष करने के लिए उकसाता है। ताकि उन्हें अपने हक मिलें।

डॉ. प्रशांत एक देशप्रेमी डॉक्टर है। वह अपने देश के लिए कार्य करना चाहता है। इसी कारण विदेश स्कालरशिप पर जाने की बजाय वह पूर्णिया जिले को अपना कार्यक्षेत्र बनाकर मलेरिया और काला-आजार पर अनुसंधान करता है ताकि वहाँ हजारों की तादाद में मरनेवाले देशवासियों को बचायें। वह भारत के पिछडे हुए देहातों की उन्नति करना चाहता है। वहाँ के लोगों के मुरझाएँ हुए होठों पर मुस्कराहट लाना चाहता है। इसी कारण वह मेरीगंज जैसे देहात को अपनी कर्मभूमि बनाता है। हमेशा के लिए वहाँ का निवासी हो अपने जीवन का एकमात्र उद्देश्य जनसेवा बनाता है।

ममता डॉ. प्रशांत की सहपाठी और प्रसिद्ध समाजसेविका है। प्रशांत ने अपने कार्य के लिए उससे प्रेरणा पाई है। डॉ. प्रशांत को कमली के प्यार में बंधा देख उसे संतोष मिलता है। प्रशांत पर के अपने प्यार को वह प्रकट नहीं करती। उसका मन विशाल है और उसमें उदात्त भावना है जिसके कारण वह उन दोनों के प्यार से क्षुब्ध नहीं होती और न ही उसे कमली के प्रति ईर्ष्या होती है। उसके विशाल मन में कमली और प्रशांत के साथ उनके पुत्र के लिए भी बहुत प्यार और ममता को स्थान है। यह उसके प्रेम की उदात्तता ही है।

तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद एक जमींदार है। उसका मन उदार है इसीकरण ही तो वह अपने पोते के बारही पर अपनी सौ बीघे जमीन अपनी रैयत में बाँट देता है।

कमली डॉ. प्रशांत से प्यार करती है। उसे अपने प्यार पर पूरा विश्वास और डॉ. प्रशांत पर श्रद्धा है। उसके लिए डॉ. प्रशांत एक जिन है। इसीकारण ही तो डॉ. प्रशांत की गैरहजरी में वह शादी से पहले उसके बच्चे की माँ बन जाती है तो वह समाज से नहीं डरती। समाज की निंदा से चिंतातुर अपने माता-पिता को अपने प्यार की सच्चाई और डॉ. प्रशांत की ईमानदारी को समझाते हुए पूरी निश्चिंतता से डॉ. प्रशांत के कारावास से रिहा होने का इंतजार करती है। किसी भी आशंका या प्रशांत पर अविश्वास के लिए उसके पास स्थान नहीं होता। यह उसके सच्चे तथा गहरे प्यार का दर्शन है। अपनी प्रेमचेतना से ही उसका स्वतंत्र व्यक्तित्व उपन्यास में चित्रित हुआ है।

इस तरह से लछ्मीदासी, बालदेव, कालीचरण, डॉ. प्रशांत, ममता, विश्वनाथप्रसाद, कमली आदि पात्रोंने अपने व्यक्तिगत गुणों से अपना एक स्वतंत्र स्थान निर्माण किया है।

(3) क्षेत्रीय विशेषताओं की पात्रों में अभिव्यक्ति :-

आँचलिक उपन्यास में पात्र विकसित हो या अविकसित उनकी अवतारणा क्षेत्रीय विशिष्टताओं को अभिव्यक्त करने के लिए की जाती है। गौण रूप में व्यक्तिवादी पात्र भी अपने अन्य पात्रों के संबंध के कारण अंचल जीवन का उद्घाटन करने में सहाय्यक बनते हैं। इस तरह से उपन्यास के सभी पात्र इसमें सहाय्यक होते हैं।

'मैला आँचल' में जातीयता, अंधविश्वास, गरीबी, सांप्रदायिकता आदि हरगौरीसिंह, रामकिरपाल सिंह, खेलावन यादव, महंत सेवादास, रामदास, लछ्मीदासी, लहसिंघादास, जोतखीजी, विश्वनाथप्रसाद आदि पात्रों के माध्यम से व्यक्त हुए हैं।

गाँव में बारहों वर्णों के लोग हैं। गाँव के हिंदू अनेक टोलियों में विभक्त है। गहलोत, तंत्रिमा, दुसाध अनेक जातियों के लोग अलग अलग टोलियों में रहते हैं। सबसे अधिक यादव जाति के लोग हैं। इनमें जातीयता बडी मात्रा में है। ब्राह्मण और राजपूत अपनी जातियों को अन्य जातियों से श्रेष्ठ समझते हैं। बालदेव जैसे पुराने सुराजी के गाँव में रह जाने से यादवों को अपनी जाति की इज्जत बढती हुई प्रतीत होती है। लेकिन यह बात राजपूतों और ब्राह्मणों को अच्छी नहीं लगती। हरगौरीसिंह 'ग्वाला होकर लीडरी' करनेवाले बालदेव से असंतुष्ट है। उसे लगता है ऐसी हालत रही तो पाँच साल बाद ग्वाले राजपूतों की बेटियाँ मांगने लगेंगे। हीवरनसिंह के बेटे ने तो साफ कह दिया है कि सेवादास द्वारा दिए गए भंडारे में राजपूत लोग ग्वालों के साथ बैठकर नहीं खायेंगे। राजपूत और ब्राह्मण अपने को अन्य जातियों से श्रेष्ठ समझ 'भूमफोड' क्षत्रियों से चीढते थे। पुराने जमाने के राजपूत और ब्राह्मण छोटी जाति के लोगों पर बात-बात में जूता चला देते थे। एक बार रामकिरपाल सिंह ने टहलू पासवान के गुरू को घोडी पर चढाने के अपराध में घोडी से नीचे गिरा कर जूतों से पीटते हुए कहा था,

''साला दुसाध, घोडी पर चढेगा।''[14]

अपने को श्रेष्ठ समझनेवाले ये लोग छोटी जातियों के स्त्रियों से संबंध रखना गैर नहीं मानते थे। इसीलिए होली के पर्व का मौका साध कर लोग भँडौअे में कहते थे,

''भकुआ बभना, चुम्मा लेवे में जात नहीं रे जाए।''[15]

राजपूतों के समन ही कायस्थों का महत्त्व भी गाँव में काफी अधिक है। राजपूतों और कायस्थों में पुश्तैनी झगडे चले आ रहे थे। राजपूतों का कहना था कि,

''मरा हुआ कायस्थ भी बिसाता है।''[16]

इसी प्रकार यादवों का मुखिया खेलावन कायस्थों के समान ही राजपूतों पर विश्वास करने को तैयार नहीं है। राजपूत और यादव जातियों के प्रमुख रामकिरपाल सिंघ और खेलावन यादव है जो गाँव की आपसी जातीय लडाई के जिम्मेदार है।

मेरीगंज की जातिव्यवस्था के संबंध में एक प्रसंग विशेष लगता है। फुलिया की शादी हो जाने के बाद वह तंत्रिमा से बुंदेली छत्री की स्त्री हो जाती है। इसी कारण वह जब वापस अपने घर आती है तो माँ के हाथ का खाना न खाते हुए आँगन में खुद अपना खाना पकाती है। तंत्रिमा कुल में जन्म लेकर भी जब फुलिया अपनी जन्मदात्री को पति कुल के आधार पर अपने से हीन समझने लगती है तो यह बडी धक्कादायक बात लगती है।

गाँव की उपर्युक्त जातिव्यवस्था के अतिरिक्त उपन्यास में संथालों का भी एक अलग स्थान है। संथाल आदिवासी है जो इस गाँव में आकर बसें हैं। इनके रीतरिवाज गाँववालों से अलग है। उन्होंने अपने आप को गाँववालों से अलग रखा है। इसी पृथकता का सहारा लेकर विश्वनाथप्रसाद ने अपने गाँववालों को संथालों के विरुद्ध खडे किए गये संघर्ष में अपनी ओर कर लिया था।

इस तरह से फुलिया, विश्वनाथप्रसाद, रामकिरपाल सिंघ, खेलावन यादव आदि पात्रों के माध्यम से जातीयता के दर्शन हो जाते हैं।

गाँव में अंधश्रद्धा बडी मात्रा में है। जोतखीजी को गाँव के ग्रह हमेशा अच्छे नहीं दिखायी देते। गाँव की भद्र महिला पारबती की माँ को वह डाइन मानता है। उसके उकसाने से ही हीरूद्वारा उस स्त्री की हत्या हो जाती है। इस डाइन के प्रभाव से ही डॉक्टर के घर ढाई हाथ का साँप निकला था ऐसी लोगों की मान्यता थी। डॉ. प्रशांत जब हैजे को रोकने के लिए कुएँ में दवा डालता है तो जोतखीजी सारे गाँव में डॉक्टर के खिलाफ गलत बात फैलाता है कि डॉक्टर कुएँ में दवा डालकर गाँव में हैजा फैला रहा है।

खलासीजी नामक पात्र भी अंधविश्वास रखता है। डॉक्टर ने मलेरिया और काला-आजार से संबंधित अनुसंधान के लिए बंदरों पर प्रयोग किये, जिसके कारण कुछ एक बंदर मर गये। उसके बाद जब डॉक्टर

गिरफ्तार हुआ तो खलासीजी ने लोगों को यह विश्वास दिलाया कि बनरभुत्ता (बंदर) गाँव को लग गया है।

कमली पढीलिखी होने के बावजूद भी कुछ अंधविश्वास रखती है। यहाँ के लोगों का विश्वास है कि जिन नाम का पीर ''कभी कभी मन को मोहनेवाला रूप धर कर कुमारी और बेवा लडकियों को भरमाता है। जिस पर बिगडे बरबाद कर दे, जिसपर ढरे उसे निहाल कर दे।''[17] तो कमली भी इस जिन पर विश्वास करती है। उसके लिए डॉ. प्रशांत जिन ही है।

होली के त्योहार से संबंधित एक विश्वास है कि,

''सिंदूर लगाते समय जिस लडकी की नाक पर सिंदूर झडकर गिरता है, वह अपने पति की दुलारी होती है।''[18]

इस पर कमली का विश्वास है। वह इस बात को सच मानती है।

कमली के पिता विश्वनाथप्रसाद भी ऐसी बातो में विश्वास रखते है। उन्हें भी डॉ. प्रशांत जिन लगता है वे कहते हैं,

''डॉक्टर जब से उसके परिवार में घुला मिला है, रोज अलाये-बलाये की आमदनी होती ही रहती है। -----कमला ठीक कहती है - डॉक्टर जिन है।''[19]

इस तरह से जब कमली अक्सर बीमार रहती थी तो उस वक्त जोतखीजी से जंतर बनवाते हैं ताकि कमली की बीमारी हट जायें।

इस प्रकार जोतखीजी, खलासीजी, विश्वनाथप्रसाद आदि पात्र गाँव में व्याप्त अंधविश्वास, जादूमंतर, भूतप्रेत की भावना के परिचायक हैं।

लछ्मीदासी, महंत सेवादास, रामदास के द्वारा गाँव की सांप्रदायिकता व्यक्त हुई है।

गाँव की धार्मिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र मठ है। यहाँ गोसाई संप्रदाय के लोग रहते हैं। संसारिक जीवन से अलिप्त व्रतस्थ, त्यागमय जीवन व्यतीत करना इनका नियम है। इनके अपने उसूल और रिवाज होते हैं जिनका पालन इस संप्रदाय से जुडे लोगों द्वारा अपेक्षित होता है। मठ की कोठारिन लछ्मीदासी इन नियमों का पालन करती है, पर महंत सेवादास तथा रामदास द्वारा इन नियमों का पालन नहीं होता तो मठ-मंदिरों में धर्म की आड में होनेवाले भ्रष्टाचार और धन लोलुपता इन पात्रों के बेनकाब चेहरों के रूप में देखी जा सकती है।

गाँव की आर्थिक समस्या निम्नवर्गीय पात्रों के द्वारा व्यक्त हुई है।

गरीबों की लाचारी से लाभ उठाकर उनकी बहू-बेटियों पर हाथ साफ करनेवाले बाबुओं की गाँव में कमी नहीं है। फुलिया और सहदेव मिसर के संबंधों को लेकर रमजूदास की स्त्री कहती है, ''आरे फुलिया की माये, तुम लोगो को न तो लाज है और न धरम। कब तक जवान बेटी की कमाई पर लाल किनारीवाली साडी चमकाओगी ? ---- मानती हूँ कि जवान बेवा बैटी दुधारु गाय के बराबर है। मगर इतना मत दूहो कि देह का खून भी सूख जाय।''[20]

इसके बाद तांत्रिमा टोली के जवान सहदेव मिसर को फुलिया के घर में पकड लेते हैं, किंतु फुलिया का बाप उनका साथ नहीं दे सकता, क्योंकि वह सहदेव मिसर का कर्जदार है।

मेरीगंज के सभी गरीब किसी-न-किसी बाबू के कर्जदार है सादे कागज पर अंगूठा लगवाकर ये लोग बाबू लोगों से कर्ज लेते हैं।

गाँव में एक दिन डॉ. प्रशांत एक मरीज को देखता है और उसे सलाइन लगवाने जाता हैं तो उस मरीज का बाप सलाइन लगवाने से इन्कार करता है क्योंकि उसके पास फीस के पैसे नहीं है। उपचार के बिना मरीज मर भी सकता है। फिर भी वह व्यक्ति इलाज नहीं कर सकता। इस प्रकार उन लोगों के लिए आर्थिक समस्या के कारण जीवन का भी कोई मूल्य नहीं है।

इस प्रकार इन पात्रों के माध्यम से गाँव की जातीयता, सांप्रदायिकता, गरीबी और अंधविश्वास व्यक्त हुआ है।

इन पात्रों के साथ साथ व्यक्तिवादी पात्र भी आँचलिक जीवन का उद्‌घाटन करने में सहाय्यक बनें हैं।

'मैला आँचल' में डॉ. प्रशांत भारत के इस मैले आंचल को देखकर द्रवित हो जाता है। अपने आसपास के लोगों की समस्याएँ, उस प्रदेश का पिछडापन देखकर वह अस्वस्थ हो जाता है और निश्चय कर लेता है कि इस पिछडे हुए देहातों की वह उन्नति करेगा। इनको प्रगतिपथ पर लाने के लिए कार्यरत रहेगा ।इसी कारण वह अपनी संपूर्ण जिंदगी इन प्रदेशों को अर्पित कर हमेशा के लिए अंचलवासी हो जाता है। समाजसेवा अपने जीवन का एकमात्र उद्देश्य बना लेता है।

(4) उपन्यासकार का जीवनदर्शन और पात्र :-

उपन्यासकार का जीवनदर्शन अथवा उसकी विचारधारा पात्रों में स्वत: ही प्रकट हो जाती है। इसीलिए प्रगतिशील उपन्यासकार अपनी कथा में प्रगतिशील तत्वों का समन्वय कर देता है। ऐसे प्रगतिवादी पात्र दो प्रकार के होते हैं एक आँचलिक और दूसरे अनांचलिक 'मैला आँचल'के प्रगतिशील आँचलिक पात्र है बालदेव, और कालीचरन।

मेरीगंज की राजनीतिक गतिविधि का श्रीगणेशा बालदेव ने किया था। वह अपने गाँव चन्ननपट्टी की तरह मेरीगंज को भी आदर्श गाँव बनाना चाहता है। वह लोगों के आपस के झगडों का विरोध कर एकता का महत्त्व समझता है। वह जानता है कि एकता की शक्ति ही स्वतंत्रता ला सकती है। वह सफाई को बडा महत्त्वपूर्ण समझता है। और मेरीगंज को भी साफ बनाना चाहता है। वह हर अच्छे कार्य में सहयोग देता है। डॉ. प्रशांतद्वारा दिये जानेवाले टीकाकरण में वह गाँववालों को एकत्रित करता है। गाँव के हर विशेष कार्यक्रम में सहयोग देता है। इसप्रकार वह गाँव के लोगों के जातीय झगडे मिटाकर, उनकी समस्याओं को सुलझाने की कोशिश करना चाहता है। मेरीगंज को प्रगतिपथ पर लाना चाहता है। जिसके लिए वह हमेशा कार्यरत रहता है।

दूसरा पात्र है कालीचरन जिसे मेरीगंज के जागरण का दूसरा श्रेय जाता है। समाजवादी पक्ष का सच्चा कार्यकर्ता विद्रोह वृत्ति रखता है। गाँववालों पर हो रहे अन्याय के लिए वह संघर्ष कर अपने हक्क को हासिल करने का मार्ग दिखलाता है। अपने अधिकार प्राप्ति के लिए वह गाँववालों में विद्रोह वृत्ति जागृत करता है। वह कहता है कि आप आदमी है और आपको आदमी के सभी हक मिलने चाहिए। जनसेवा के हर कार्य में वह महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब डॉ. प्रशांत द्वारा दिये जानेवाले हैजे के इंजेक्शन का गाँववाले विरोध करते हैं तो वह जबरदस्ती लोगों को इंजेक्शन लेने के लिए मजबूर करता है। इस तरह से वह सच्चा समाजसेवक है जो गाँववालों की भलाई चाहता है। उन्हें प्रगतिपथ पर लाना चाहता है। अपने आप को कॉमरेड कहलाने में फक्र माननेवाला यह कालीचरन कहता है,

''कौमरेड कोई गाली नहीं। कौमरेड माने साथी। जो भी देश का काम करे, पब्लिक का काम करे, वह कौमरेड है।''[21]

इन दो आँचलिक प्रगतिवादी पात्रों के साथ साथ डॉ. प्रशांत, ममता आदि पात्रों से (अनांचलिक) प्रगतिवाद व्यक्त होता है।

डॉ. प्रशांत भारत के पिछडे देहातों की बदतर अवस्था देख व्यथित होता है और अपने जीवन का एकमात्र उद्देश्य इन पिछडे देहातों में सुधार लाना निर्धारित करता है। वह आँसू से भीगी धरती पर प्यार की खेती करना चाहता है। इसीलिए वह मेरीगंज को अपना कार्यक्षेत्र बनाता है।

डॉ. ममता प्रशांत की सहपाठी और प्रसिद्ध समाजसेविका है। उसकी प्रेरणा से ही प्रशांत ने अपना कार्य शुरू किया है। विदेश न जाकर अपने देश में ही रोग पीडितों की सेवा करनेवाले प्रशांत को प्रशांत तुम कितने बडे और महान यह ममता का कथन स्वयं उसकी महत्ता का संकेत करता है। उसने प्रशांत को उसके कार्य में प्रोत्साहित करते हुए कहा था,

''अस्पताल में कराहते हुए गरीब रोगियों के रूदन को जिंदगी का एक संगीत समझकर उसे भोग करना ही डॉक्टर का कर्तव्य नहीं।''[22]

इससे समाज की तरफ उसका विशाल दृष्टिकोन व्यक्त होता है। वह हमेशा समाजसेवा में कार्यरत रहती है। यही उसके जीवन का उद्देश्य है। इसतरह से ये प्रगतिवादी पात्र समाज में नई चेतना का प्रवाह करके उसके पुनर्निर्माण में प्रयत्नशील रहते है। रेणु का देशप्रेम, स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी निभायी हुई भूमिका आदि से संबंधित उनके विचार उनके पात्रों में चित्रित हुए हैं।

4.5 चरित्र कल्पना :-

चरित्र कल्पना में पात्रों के बाह्य सौंदर्य और आंतरिक सौंदर्य आदि का चित्रण आ जाता है।

आँचलिक उपन्यासों के चरित्र चित्रण के विषय में डॉ. जवाहरसिंह का मत है कि,

''आँचलिक उपन्यासकार अपने पात्रों को अंचल की विशिष्ट गंध, रूप-रंगवाली मिट्टी से गढता है, उन्हें आँचलिक वेशभूषा से सजाता है और आँचलिक उपादनों से ही उनके बाह्य रूपाकारों का निर्माण करता है।''[23]

इसी प्रकार रेणु के उपन्यासों में पात्रों के बाह्य चित्रण में स्थानीय वेशभूषा तथा उनके रूपाकार में आँचलिकता या स्थानीय विशिष्टता दिखायी देती है।

'मैला आँचल' के कुछ पात्रों का बहिरंग चित्रण हुआ है। परंतु रेणु के उपन्यासों की चरित्र सृष्टि की सर्वप्रमुख विशेषता यह है कि सभी पात्रों का अंकन सबल रेखाओं से हुआ है। उनके शारीरिक वर्णन की

ओर भी लेखक का ध्यान गया है परंतु लेखक ने पात्रों की आत्मा को गढने का प्रयास किया है। उनका प्रमुख उद्देश्य अंतरंग चित्रण ही रहा है।

इस कारण 'मैला आँचल' के पात्रों का बहिरंग की अपेक्षा अंतरंग चित्रण ही अधिक प्रभावशाली हुआ है। मेरीगंज की लगभग आधी जनसंख्या को उपन्यास में स्थान मिला है। ये सभी पात्र अंचल जीवन की विविधता दिखाने के लिए आये हैं। लेखक ने इन पात्रों के अंतरंग को सूक्ष्मता से चित्रित किया है।

उपन्यास में डॉ. प्रशांत, कमली, बालदेव, लछ्मो, कालीचरन, विश्वनाथप्रसाद, ममता, बावनदास, जोतखीजी आदि महत्त्वपूर्ण पात्र है जो अपने व्यक्तिगत गुणोंद्वारा वैशिष्ट्यपूर्ण बने हैं।

डॉ. प्रशांत आदर्श पात्र है जिसके अंतरिक सौंदर्य का उद्घाटन हुआ है। देशप्रेम से प्रेरित डॉ. प्रशांत भारत के पिछडे देहातों की बदतर अवस्था देख व्यथित होता है। अपने जीवन का एकमात्र लक्ष्य समाजेसवा निश्चित कर पूर्णिया जिले को अपना कार्यक्षेत्र बनाकर हमेशा के लिए मेरीगंज का निवासी हो जाता है। वह आँसू से भीगी हुई धरती पर प्यार के पौधे लहलहाना चाहता है। वह ग्रामवासिनी भारतमाता के मैले आँचल तले साधना करना चाहता है। आँचलवासियों के मुरझाएँ होठो पर मुस्कराहट लाना चाहता है। इसके लिए वह अपनी डाक्टरी पास करने के बाद स्कालरशीप पर विदेश जाने का मौका तक छोड देता है। उसे निजी उन्नति का कोई लोभ नहीं है। उसका लक्ष्य अपने देश की उन्नति करना है।

कमली विश्वनाथप्रसाद की एकमात्र पुत्री तथा प्रशांत की प्रेमिका है। अपने आसपास के अशिक्षित, अंधविश्वासू वातावरण में उसका अलग व्यक्तित्व उभर आया है। वह बंकिमचंद्र के उपन्यासों को पढकर लेखक के विचारों को अपने जीवन में लाने की कोशिश करती है। वह प्रशांत पर नितांत प्यार करती है उसे अपने प्यार पर पूरा भरोसा है। जब वह प्रशांत की गैरमौजूदगी में शादी से पहले उसके बच्चे की माँ बन जाती है तो उस वक्त भी वह समाज निंदा से नहीं डरती और ना ही उसका प्रेम कम होता है वह तब भी डॉ. प्रशांत पर पूरा विश्वास दिखाते हुए अपनी माँ से कहती है डॉक्टर ने कहा है जो होगा मंगल होगा और हम लोगों को कोई अलग नहीं कर सकता। इस तरह से विपरीत स्थितियों में भी वह उसका प्यार तथा प्रशांत पर उसकी श्रद्धा और विश्वास कायम रखती है। उसे लगता है महाभारत में कुंती, देवयानी, अहल्या, द्रौपदी ऐसी कौन है जिसे दु:ख सहन नहीं करने पडे। इस तरह से उसे प्रेम के लिए कठोर से कठोर प्रसंग तथा दु:ख सहन करना गैर नहीं लगता। बौद्धिकता, प्रेमचेतना, श्रद्धा, हौसला आदि विशेषताओं से परिपूर्ण पात्र है।

बालदेव एक देशप्रेमी सामाजिक कार्यकर्ता है। गाँव के हर जनउपयोगी कार्य में वह अग्रेसर रहता है। वह मेरीगंज को आदर्श गाँव बनाना चाहता है इसीलिए वह लोगों को सफाई का महत्त्व, जातीयता दूर कर एकत्रित संगठित होने का महत्त्व समझा देता है। उसकी दृष्टि से एकता ही स्वतंत्रता ला सकती थी। उसके विचारों में पवित्रता है। उसका स्त्रियों की तरफ देखने का नजरिया अत्यंत शुद्ध है। वह मन की शुद्धता को महत्त्व देता है इस कारण लछ्मीदासी उसे दीक्षा लेने की बात कहती है तो वह कहता है,

''कोठारिन जी असल चीज है मन । कंठी तो बाहरी चीज है।''[24] मठ की दासी लछ्मी को वह और महंतो या लोगों जैसे एक भोग्यवस्तु नहीं समझता तो उसे वह पवित्रता की मूर्ति लगती है।

इस प्रकार एक सहृदय नीडर, देशभक्त के रूप में उसका चित्रण हुआ है। मानव सुलभ कमजोरियाँ भी उसमें है पर उनके लिए पश्चाताप भी उसमें है।

लछ्मी दासी मठ की कोठरिन तथा बालदेव की प्रेमिका है। मठ से लेकर बालदेव के साथ मठ से अलग हो जाने के बाद तक वह जिसके साथ रही उसके साथ एकनिष्ठ रही। संसारिक जीवन से अलग मठ के व्रतस्थ जीवन को वह अच्छी तरह से निभाती है। सत्गुरू के दिखाये मार्ग पर चलना वह अपना कर्तव्य समझती है। उसे गाँव के लोगों के आपस के झगडे पसंद नहीं वह लोगों को समझाती है कि मनुष्य जन्म दुर्लभ है उसे सार्थक बनाना चाहिए। छोटी छोटी बातों को लेकर होनेवाले झगडे मिटाकर परमार्थ की बात सोचनी चाहिए। हर कोई स्वार्थ के बदले परमार्थ की बात सोचे तभी उनका जन्म सार्थक बनेगा।

इस प्रकार उसने सत्गुरू के तत्त्वों को जाना है। और उसका आचरण भी करती है। उसके मन में किसी के लिए अधिक देर तक क्रोध नहीं रह सकता इसी कारण बालदेव के गैरकृत्यों को भी वह नजरअंदाज कर उसकी जी जान से सेवा करती है। सेवाभाव उसका गुण है। इसी कारण मठ के महंतो की भी वह सेवा करती है। उसकी गांधीजी पर नितांत श्रद्धा है उनके लिखे पत्रों की वह फूल चढाकर पूजा करती है। इस तरह से सत्गुरू के नियमों का पालन करनेवाली गुणी स्त्री है। पवित्रता, सेवाभाव, श्रद्धा, एकनिष्ठता, अपनी आत्मा पर नियंत्रण आदि उसकी विशेषताएँ हैं।

कालीचरन समाजवादी पक्ष का सच्चा नेता तथा समाजसेवक है। उसे अहिंसापर विश्वास नहीं वह अपने हक को हासिल करने के लिए विद्रोह करना आवश्यक समझता है। वह मेरीगंज के लोगों को अपने हक हासिल करने के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा देता है। वह लोगों से कहता है कि,

''मैं आप लोगों के दिल में आग लगाना चाहता हूँ ----आप आदमी हैं और आपको आदमी के सभी हक मिलने चाहिए।''[25] इस तरह से वह लोगों को जागृत करता है।

उसका स्वभाव भावुक है। अपने बचपन के दोस्त की मृत्यु के बाद वह व्याकुल हो जाता है। इस भावुकता के साथ साथ स्वभाव में कडापन भी है।वह अपना अपमान सहन नहीं कर सकता। उसके कडे स्वभाव में प्रेम जैसी कोमल भावनाओं को भी स्थान है। वह मंगला की ओर आकर्षित हो उसकी बीमारी में जी जान से सेवा करता है। मंगला उसके आसरे में सुख और निश्चिंतता अनुभव करती है। ईमानदारी, समझ, विद्रोह और प्रेमचेतना उसके चरित्र की विशेषताएँ हैं।

विश्वनाथप्रसाद गाँव का तहसीलदार और जमींदार है। उसके पाँस बहुत सारी जमीन है। पहले तो वह परंपरावादी जमींदार था जो केवल अपने नफे की बात सोचता हो। पर बाद में वह परिवर्तित हो हो जाता है। उसमें उदारता है इसी कारण वह जनता के साथ उदारता का व्यवहार करता है। उसकी तहसीलदारी में जब नया सर्किल मॅनेजर उसे जनता की जमीन नीलाम करने का हुक्म देता है तो ऐसा अन्याय भरा कार्य करने की बजाय वह तुरंत तलसीलदारी से इस्तिफा दे देता है। उसके लिए तहसीलदारी से इस्तिफा गंगास्नान से बढकर पुण्य का कार्य है। अपने पोते के बारही पर वह लोगों में खुद की सौ बीघे जमीन बाँट देता है। ऐसा करते वक्त किसी भी प्रकार का बडप्पन या श्रेष्ठता की भावना वह नहीं रखता वह तो कहता है, ''-----जमीन। धरती। एक इंच जमीन के लिए हायकोठ तक मुकदमा लडते है लोग। और मै सो बीघे जमीन दे रहा हूँ। पागल तो तुम लोग हो। अरे यह जमीन तो उन्हीं किसानों की है, नीलाम की हुई, जब्त की हुई। उन्हें वापस दे रहा हूँ। मै कहता हूँ ऐलान कर दो, मालिक का हुक्म है।''[26]

इस प्रकार उसके इस वर्तन में एक प्रकार की पश्चाताप की भावना है। नैतिक विचारों का दर्शन है।

इस तरह से दयाभाव, नैतिकता, उदारता, जनता के प्रति प्यार आदि उसके चरित्र को उजागर करते है।

बावनदास राजनीतिक कार्यकर्ता है। वह गांधीजी का परमभक्त है। काँग्रेस का एकनिष्ठ कार्यकर्ता है। गांधीजी द्वारा उसे लिखी चिट्ठियाँ उसे अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं इसी कारण उन्हें बालदेव को सौंपते वक्त वह निरक्षर होते हुए भी उन चिठ्ठियों को बडी श्रद्धा से देखता है। गांधीजी उसके लिए ईश्वर से बढकर हैं इसी

कारण उनके श्राद्ध के दिन दुलारचंद कापरा जब भारत से पाकिस्तान तस्करी करने की योजना तैयार करता है तो बावनदास अपनी जान की बाजी लगाकर उसे रोकने का प्रयत्न करता है पर इसमें उसकी मृत्यु हो जाती है। इस तरह से वह अपने जीवन के अंतिम क्षण तक देशभक्ति निभाता है।

मानव स्वभाव की कमजोरियाँ उसमें हैं पर उसके लिए पश्चाताप भी है। अपनी हर गलत बात पर वह तत्काल पश्चाताप से लज्जित हो उसका प्रायश्चित करता है।

इस तरह से देशप्रेम, निर्भयता, पश्चाताप की भावना आदि उसके अंतरंग के पहलू उसे महत्त्वपूर्ण बनाते हैं।

ममता डॉ. प्रशांत की सहपाठी और समाज सेविका है। उसकी प्रेरणा से ही डॉ. प्रशांत अपने कार्य में कार्यरत हुआ है। उसने ही प्रशांत को उसके कार्य के लिए प्रेरित करते हुए कहा था कि, ''---अस्पताल में कराहते हुए गरीब रोगियों के रूदन को जिंदगी का एक संगीत समझकर उसे भोग करना ही डाक्टर का कर्तव्य नहीं।''[27] उसके लिए समाजसेवा अत्यंत महान कार्य है। वह हमेशा इस कार्य में कार्यरत रही।

उसका मन अत्यंत विशाल है। उसे डॉ. प्रशांत से प्यार है परंतु प्रशांत का कमली के प्यार में बंधा देख वह क्रोधित नहीं होती और न ही उसे कमली से ईर्ष्या होती है। उसके विशाल मन में कमली, प्रशांत के साथ साथ उनके बच्चे के लिए भी प्यार और ममता है। यह उसके प्यार के उदात्तिकरण और विशाल मन का ही दर्शन है।

इस तरह उपन्यास के मंच पर अल्पकाल आकर चमक जानेवाली ममता का चरित्र सेवाभाव, उदारता, मन की विशालता से महत्त्वपूर्ण बना है।

इस प्रकार 'मैला आँचल' के ये महत्त्वपूर्ण पात्र हैं जिनका आंतरिक चित्रण सूक्ष्मता से चित्रित हुआ है। परंतु इन पात्रों के बहिरंग चित्रण की ओर लेखक का विशेष ध्यान नहीं गया है।

इस तरह से पात्रकल्पना, चरित्र कल्पना और सामान्य विशिष्टताएँ आदि के साथ 'मैला आँचल' के पात्रों का विवेचन करने के उपरांत उपन्यास के पात्र पूर्णत: आँचलिकता की कसौटी पर खरे उतरते हैं।

4.6 'पडघवली' उपन्यास के पात्रों का चरित्र चित्रण :-

4.6.1 अंबू :-

'पडघवली' उपन्यास का प्रतिनिधि पात्र है अंबू। संपूर्ण उपन्यास की कथावस्तु अंबू के मुख से कथित की है।

पडघवली गाँव के खोत महादेव भट की पत्नी है अंबू जिसे 'खोतीण' कहा जाता है। 'खोतीण' याने गाँव की मुख्य महिला इस पद के लिए वह पूरी योग्य है। वह घर के सदस्यों से लेकर गाँव के हर एक व्यक्ति का खयाल रखती है। उनके सुख-दुखों में उनका साथ देती है। गाँव की स्त्रियों से उसका बहुत नजदीकी रिश्ता है। पडघवली की वयस्क स्त्रियों की वह बहू है। समवयस्क स्त्रियों की सखी और छोटी स्त्रियों के लिए वह माँ है। अपनी हर जिम्मेदारी को वह भली प्रकार समझती है। और उसे निभाने की कोशिश करती है। इस उपन्यास की कथावस्तु जितनी पडघवली से जुडी है उतनी ही अंबू से। पडघवली और अंबू एकदूसरे में गुंथे धागे हैं जिन्हें अलग करना असंभव है। अंबू का संपूर्ण जीवन पडघवली तक ही सीमित हो कर रहा है।

अंबू ने हमेशा पडघवली से प्यार किया है। वह पडघवली को हँसते खेलते देखना चाहती है। इसीकारण ही तो वह गाँव के ब्राह्मणों के बारा घरों में से एक तथा रिश्ते से अंबू का देवर लगनेवाला व्यंकूभट नामक व्यक्ति है उसका हर बार विरोध करती है। क्योंकि वह गाँव को लगी एक दीमक है। व्यंकूभट की हर योजना गाँववासियों को घाटे में डालनेवाली ही होती है। वह स्वार्थ में डुबा हुआ ऐसा व्यक्ति है जो स्वार्थपूर्ति के लिए कोई भी गिरी हुई हरकत करने में हिचकिचाता नहीं। वह एक लुटेरा है, जो लोगों के खेत, पैसे यहाँ तक की स्त्रियों को भी लूटना चाहता है। इसी कारण अंबू उसके माने हुए देवर गुजाभट और अन्य गाँववालों की मदद से उसका हर बार विरोध करती रहती है। अंबू के पति महादेव भट को अपनी पत्नी का व्यंकू की तरफ जो शत्रुत्व का नजरिया है वह पसंद नहीं है क्योंकि उनका व्यंकू पर विश्वास है और व्यंकू का विरोध करने की उनमें हिम्मत नहीं है साथ में उन्हें तंटाबखेडा पसंद नहीं है। इसीकारण कभी कभी गाँव में हुए तंटेबखेडे को वे अंबू को जिम्मेदार मानते हुए उसे डाँटते हैं। परंतु अंबू उनके डांटने की तरफ ध्यान नहीं देती और न ही वह उनके समान व्यंकू के षडयंत्रों को नजरअंदाज कर सकती थी। उसका ध्यान तो केवल गाँव की भलाई और व्यंकूभट के षडयंत्रों को मिटाने की तरफ ही रहता है।

व्यंकू की बेवा चाची अपने पागल बेटे रंग्या के साथ गाँव में रहती थी।उसे अंबू पर अत्यंत प्यार

था और वह अंबू को अपनी बहू ही मानती थी। अपनी मृत्यु के बाद अपने पागलबेटे रंगू को संभालने की जिम्मेदारी का स्वीकार करने की बिनती वह अंबू से करती है जिसका अंबू स्वीकार करती है। परंतु कुशात्या के देहांत के बाद व्यंकूभट कूटनीति अपनाकर उसके शव से अंगूठा लगवाकर सारी जायदाद हासिल करता है। साथ में जबरदस्ती रंगू को अपने घर ले जाता है। उस वक्त रंगू पर हो रहे अन्याय को अंबू सहन नहीं कर सकती। वह व्यंकू के षडयंत्र का पर्दाफाश करने के लिए गवाह खडा कर सारे गाँववालों के सामने उससे सच बुलवाने का प्रयास करती है परंतु गवाह अचानक मुखर जाने से उसे सफलता नहीं मिलती।

व्यंकूभट एक दिन उसके (अंबू) बाग में आनेवाले पानी के पाट में केंकडे छोडता है जिससे पाट का पानी सूखकर बाग सूखने लगता है। तब वह गाँव के अन्य लोगों की मदद से पाट में मिट्टी डालकर फिर से पानी उपर चढा लेती है।

व्यंकूभट की स्त्रियों की तरफ हमेशा वक्रदृष्टि रहती थी। वह अंबू की ननंद आक्की पर जबरदस्ती करने का प्रयास करता है। उस वक्त अंबू के पति भी आक्की को दोषी मानकर व्यंकू का पक्ष लेते हैं। तो वह अकेली व्यंकू का विरोध करती है। घटित हुए गैर कृत्य का जिम्मेदार व्यंकू को मानकर व्यंकू को आव्हान देते हुए अपने पति से कहती है,

''कशावरुन तुम्ही तिला पापी म्हणालात ? पुरूष आहात म्हणून ? पुरुषांनी शेण खाल्ल तरी खपत- अन् ते सुद्धा व्यंकूभावजींच्या बोलावर विश्वासून ? पान उचलतील का देवावरल व्यंकूभावजी ? होऊ दे. उचलू दे त्यांना पान मग खरच तोडते मी अक्कीला समजलात ? तिळभर मागं नाही सरायची ।''[28]

(किस कारण से आपने उसे पापी कहा ? तुम पुरूष हो इसीलिए ? पुरूष गैरवर्तन करे, तो जायज है- और वो भी व्यंकूभावजी के भरोसे पर ? क्या व्यंकूभावजी ईश्वर की शपथ लेंगे ? हो जाय. उन्हें लेने दो शपथ। तब मैं ही आक्की को खत्म कर डालूंगी। समझ गये ? रत्तीभर भी मैं पीछे नहीं हटूंगी।)

इसके साथ वह आक्की से कहती है कि मुझे मालुम है तुम गंगाजल के समान पवित्र हो। व्यंकू भट जब अंध भिऊआबा की पत्नी शारदा को अपने जाल में फसानें का प्रयास करता है तब भी वह शारदा को व्यंकू से दूर रहने की सूचना देती है।

इस प्रकार वह अंबू के हर कुटिल कारस्थान पर उसका विरोध करती है। चाहे उसे सफलता

मिले या न मिले।

अंबू में धैर्य बडा है। जिससे वह अनेक कटुप्रसंगों का डटकर सामना करती है। सारे गाँव के आम एकत्रित कर उन्हें मुंबई बेचने के व्यंकू के षडयंत्र में उसके पति की मानसिक दबाव से मृत्यु हो जाती है। उसके बाद वह दु:खी तो हो जाती है पर फिर से डटकर खडी रहती है। धैर्य से अपने बेटे और सारे घर की जिम्मेदारी निभाती है।

एक बार गाँव के हैदरचाचा का बेटा नबी जो अफ्रिका जाकर बहुत सारी संपत्ती कमाकर गाँव वापस आया था, वह अपनी संपत्ती के जोर पर गाँव के 'आसरांची खडक' नामक पहाडपर सिमेंट का बांध खडा करता है जिससे सारे गाँव को वहाँ से मिलनेवाला पानी बंद हो जाता है। गाँव के लोगों के सामने पानी की समस्या खडी हो जाती है। अंबू के पति भी इसपर कोई कठोर भूमिका लेने से इन्कार कर देते हैं। उस वक्त अंबू धैर्य से सारे गाँव की कुलवाडी स्त्रियों और पुरूषों को एकत्रित करती है और उनके साथ उस बाँध पर जाकर उसे तोडती है। उसके बाद सारे लोग उस बाँध को पूरी तरह से उखाड डालते हैं। अपने बांध की यह स्थिति देख नबी बंदूक लेकर आता है तो भी न डरते हुए वह नबी का सामना करती है।

इस तरह से उसके धैर्य के कारण सारे गाँव की पानी समस्या समाप्त हो जाती है। जो बात गाँव के पुरूष नहीं कर सके वह उसने अकेले की। यह उसका धैर्य ही है।

धैर्य के साथ साथ उसमें भावुकता भी है। वह अत्यंत संवेदनशील है। उसकी ननद आक्की पर व्यंकूभट जबरदस्ती करने का प्रयास करता है और घर के लोग आक्की को जिम्मेदार समझ उसे ही कोसते हैं तो वह बहुत ही दु:खी हो जाती है। वह आक्की से कहती है,

''आक्ये, का आलीस बाई बायकांच्या जल्माला? येत्या क्षणी मेली का नाहीस ?''[29]

(आक्ये, क्यों तुमने स्त्री जाती में जन्म लिया ? पैदा होते ही क्यों नहीं मर गयी ?)

भिऊआबा की पत्नी शारदा व्यंकू से अपने संबंध जोडती है तो अंबू शारदा पर चिढकर उसे गाँव से निकल जाने के लिए कहती है। ऐसा कहते हुए तो वह पूरे गुस्से से कहती है पर बाद में उसे दु:ख होता है। अपनी कृति पर शर्म आकर वह फिर से शारदा को अपने घर रहने को बुलाने के लिए जाती है। उसके भावुक स्वभाव के कारण ही उसे किसी पर अधिक गुस्सा नहीं रहता। इसी कारण व्यंकूभट के देहांत हो जाने पर

गणूभावजी (अंबू के देवर) उसकी अंतयात्रा में जाने से इन्कार करता है तो वह कहती है,

''भावजी, माणूस गेल नि हेवेदावे संपले जा हो तुम्ही। ऐसा माझं.''[30]

(भावजी, आदमी चल बसा तो उसके साथ सारे गीले-शिकवे खत्म। आप मेरी बात सुनिये। चले जाइये)

वह गणूभावजी को व्यंकू के घर जाने का आग्रह कर उसे भेज देती है। क्योंकि अब व्यंकू के देहांत बाद व्यंकू के दुष्ट कर्मों की उगालना उसे अच्छा नहीं लगता।

शारदा पर वह अनेक बार गुस्सा भी होती है। व्यंकू के साथ रहे शारदा के संबंधों को लेकर उसे कोसती भी है परंतु फिर भी उसके मन में शारदा के लिए ममता, प्यार है इसी कारण शारदा द्वारा अपमानित होने पर भी वह शारदा के घर बार बार जाती है तथा उसे गैरवर्तन से परावृत्त करने का प्रयास करती है।

उसमें अत्यंत सेवाभाव है। उसकी फुफेरी सास जडीबूटियों की दवा जानती थी। अंबू ने भी उनसे यह विद्या सीखी थी। वह उनके साथ रहकर दवा देने में तज्ञ हो गयी। फुफेरी सास के बाद वह खुद लोगों को दवा देने लगी। गांव की स्त्रियाँ उसे उनके प्रसुति के प्रसंग पर बुला ले जाती। अंबू भी बडी आस्था और कौशल्य से उनपर इलाज करती। यह कला भी उसने अपनी फुफेरी सास से ही सीखी थी। स्त्रियों को उससे इलाज करा लेने से बडी निश्चिंतता होती।

अपने सेवाभावी प्रवृत्ति के कारण वह कुशात्या के पागल बेटे रंगू को संभालने का वचन कुशात्या को देती है। पहले तो व्यंकूभट रंगू को अपने घर ले जाता है परंतु गुजाभावजी रंगू को वापस ले आता है तब अंबू बडी ममता से उसकी सेवा करती है। रंगू के पसंदिदा मोदक उसे खिलाती है। हमेशा के लिए वह रंगू को अपने घर रखना चाहती है परंतु उसके पति के विरोध के कारण वह कुछ नहीं कर सकी।

गांव के अन्य लोगों के साथ वह अपनी फुफेरी सास और घर के लोगों का भी खयाल रखती थी। उसके घर में आये हर मेहमान का अच्छी तरह से खयाल रखती। गाँव में कीर्तन के लिए कोई वयस्क कीर्तनकार आते तो उनकी भी श्रद्धा से सेवा कर उनकी अच्छी व्यवस्था रखती।

अंबूने हमेशा गाँव की भलाई चाही। इस कारण उसे अनेक बार कठोर बरताव करना पड़ा। दुष्ट लोगों का सामना करना पडा। ऐसा करते वक्त अनेक बार उसे अपने पति का भी विरोध करना पडा और

अनेक बार पति के साथ उसके झगडे भी हुए परंतु उसने कभी अपनी मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया।

इसी कारण रंगू को उसके पति अपने घर में रखने से विरोध करते है। वे व्यंकूभट की नाराजी स्वीकारना नहीं चाहते थे। वे गुजाभट के साथ रंगू को भेज देते हैं तब अंबू बहुत चाहती है कि रंगू को गुजाभट के घर जाने से रोके अपने ही घर में रखे पर पति की इच्छा के सामने उसने कुछ नहीं कहा। वह मन ही मन में कहती है, ''एकदा वाटल, सांगाव, यांच घर आहे, तस माझं ही आहे. राहू दे माझ्या घरी पण -''[31]

(एक बार लगा कि कह दे, उनके साथ यह घर मेरा भी है। रहने दो इसे मेरे घर में लेकिन)

याने पति के गैर निर्णय पर वह गुस्सा होती है परंतु पति की इच्छाविरुद्ध कुछ निर्णय नहीं लेती।

व्यंकूभट आक्की पर जबरदस्ती करने का प्रयत्न करता है तब अंबू के पति आक्की को ही जिम्मेदार मान उसे कोसते हैं। तब भी उसे अपने पति पर गुस्सा आता है। जब उसके पति आक्की को खत्म कर देने के लायक समझते हैं तो अंबू गुस्से से पागल हो जाती है और आक्की से कहती है,

''बोलू नकोस आक्क्ये ! मला माहीत आहे तू गंगाजळी सारखी आहेस. पण यांच्या घरात आहेस तू. नि मी यांची बायको. तेंव्हा बाहेर चल तुझ डोस्क तोडत्ये ! यांना बळ नाही, पण इच्छा मात्र आहे. ती मला पुरी करायला हवी. ''[32]

(आक्ये कुछ मत कहो। मैं जानती हूँ कि तुम गंगाजल के समान पवित्र हो। लेकिन तुम इनके घर में रहती हो और मैं उनकी पत्नी हूँ। तो बाहर चलो मै तुम्हारा सीर काट देती हूँ। ऐसा करने की उनमें हिम्मत तो नहीं लेकिन इच्छा तो है। वह मुझे पूरी करनी चाहिए।)

इस तरह पति के विचारों से उसके विचारों ने कभी मेल नहीं खाया। वह पत्नी होने के नाते पति का आदर करती रही। लेकिन हमेशा दोनों में एक खाई बनी रही। परंतु इसका अर्थ यह नहीं कि उसे पति से प्यार नहीं था। इस कारण पति के देहांत पर वह मन ही मन कहती है,

''कुणाला वाटेल, हिच नि नवऱ्यांच फारस सूत तर नव्हतं मग एवढ दु:ख का ? सहजगत्या नाही कळायच ते. सूत नव्हत हेही काही खर नव्हे. कधी कधी त्यांच्या वागण्यामुळ चीड यायची मला. पण शेवटच त्यांच बागेदार

वागण -

नि नवरा गेल्यावर काय वाटत, ते उमजायला एका खात्यापित्या घरची थोरली सून व्हायला हवं. एऱ्हवी ते कस उमगेल ?''[33]

(लोग सोचेंगे इसकी और पति की जमती नहीं थी फिर इतना दु:ख क्यों ?इतनी आसानी से वह समझ में नहीं आयेगा। दोनों की जमती नहीं थी यह बात भी कुछ सच नहीं। कभी कभी उनके बरताव से मुझे गुस्सा तो आता था लेकिन उनका अंतिम करारा बरताव - और पति के देहांत बाद क्या स्थिति होती है, इसका आकलन होने के लिए किसी एक संपन्न घर की बडी बहू होना चाहिए। इसके सीवा इस बात का आकलन कैसे हो सकता है ?)

इस प्रकार वह पति से प्यार करती थी। उनका आदर करती थी परंतु वैचारिक विभिन्नता के कारण उन दोनों में दूरी आ जाती थी।

अंबू के पति के देहांत बाद पडघवली का धीरे धीरे ऱ्हास होने लगता है। गाँव के लोग गाँव छोड मुंबई नौकरी की तलाश में जाने लगते हैं। इन लोगों के पीछे उनके घर, बाग सब उध्वस्त होने लगते हैं। गाँव की यह स्थिति देख अंबू दु:खी हो जाती है। पडघवली की दुर्दशा उससे देखी नहीं जाती और वह अपने बेटे के पास मुंबई चले जाने का निर्णय लेती है। इस निर्णय में उसे खुशी नहीं है परंतु पडघवली की दुर्दशा उससे देखी नहीं जाती इसकारण वह उससे दूर जाना चाहती है। वह गाँव की स्त्रियों से कहती भी है कि, ''बायानों, हे शक्टच जाण, आता यायच नाही.''[34] (स्त्रियों, यह अंतिम जाना है, अब वापस आना नहीं होगा।)

याने पडघवली के अंत में उसे अपना भी अंत दिखायी देता है। परंतु वह अपने निर्णय पर अटल रहती है।

जाने के दिन बोट पर उसका सामान रचा जाता है। बोट शुरू ही होनेवाली है कि आखरी क्षण में कोई उसके पाँव कोई पीछे खिंचने लगता है। उसे अपने पूर्वज उनकी बसाई हुई पडघवली, समृद्ध पडघवली, मामंजी, फुफेरी सास का दृष्टांत हो जाता है। उसका मन परावर्तित हो जाता है। उसे अपने निर्णय पर आश्चर्य हो जाता है। उसे लगता है कि वह पडघवली से दूर कैसे जा सकती है। शादी के बाद बचपन में ही वह पडघवली में आयी। फुफेरी सांस, श्वशुर के प्यार में पली-बडी हुई। पडघवली की एक सदस्य बनकर रही। तब इस वक्त वह पडघवली कैसे छोड सकती है ? अन्य लोगों के समान अपनी पडघवली को छोड मुंबई कैसे भाग सकती है।

उसके पीछे अपने पूर्वजों का साथ, उनका सरंक्षण कौन करेगा ? पडघवली की देखभाल कौन करेगा ? वह अन्य लोगों जैसा स्वार्थी वर्तन नहीं कर सकती। वह तत्काल अपना निर्णय बदल देती है और अपने देवर से कहती है,

''नाही ! पडघवली सोडून नाही जायच.''[35]

(नहीं, पडघवली को छोड कहीं नहीं जाना है।)

इस प्रकार वह हमेशा के लिए पडघवली में रह जाती है। वह शादी करके पडघवली में आयी थी। यहाँ पर वह पली, बडी हुई, जीवन के हर प्रसंग का सामना किया, पडघवली के सुख और दुख दोनों प्रकार क दिनों को देखा और अंत में हमेशा के लिए पडघवली की होकर रह गयी केवल एक आशा के साथ कि एक ना एक दिन पडघवली पहले जैसी हँसती खेलती बनें।

इस तरह से जीवनसंघर्ष का डटकर सामना करनेवाली, बाहर से परंपराओं में जखडी हुई परंतु अंदर से मुक्त ऐसी एक जिद्दी, सेवाभावी, संवेदनशील, धैर्यवान और सुजान स्त्री के रूप में अंबू का चित्रण हुआ है।

4.6.2 फुफेरी सास :-

उपन्यास के महत्त्वपूर्ण स्त्री पात्रों में एक है फुफेरी सास। प्रमुख स्त्री पात्र अंबू की यह फुफेरी सास है। इनके लाडप्यार में अंबू पली, बडी हुई है। सारे गाँव के लिए यह अत्यंत आदरणीय स्त्री है। घर में भी सबसे जेष्ठ होने के नाते सभी महत्त्वपूर्ण कार्यों में उनसे ही राय ली जाती है।

उनके दिल में सबके लिए प्यार है। अंबू से वे बहुत प्यार करती है। अंबू के साथ साथ गांव के हर व्यक्ति के लिए उनके दिल में प्यार है। गांव का कोई भी व्यक्ति उनके पास किसी चीज के लिए आयें और खाली हाथ वापस लौंट जाये यह हो ही नहीं सकता।

उनके दयालु स्वभाव के कारण उन्होंने अपने भाभी की अनाथ और बेवा भांजी आक्की को अपने घर में आश्रय दिया और उसपर अपनी बेटी जैसा प्यार किया। गांव के गरीब स्त्रियों के प्रति भी उनके दिल में दयाभाव रहता है।

सेवाभावी स्वभाव के कारण वे अपने जडी बूटियों की दवा के ज्ञान का उपयोग सारे गांव के

लिए करती हैं। दिन के किसी भी प्रहर में मरीज आयें या उन्हें बुला ले जाये तो वे इलाज करने के लिए तैयार रहती थी। गांव की स्त्रियाँ अपनी प्रसूति के प्रसंग पर उनकी उपस्थिति अतिआवश्यक समझती है। उनकी उपस्थिति में स्त्रियों को धैर्य आ जाता और वे निश्चिंतता का अनुभव करती। वे इन स्त्रियों को अपने घर से पौष्टिक लड्डू खुद बनाकर भेज देती। इस तरह से उन्हें गांव की स्त्रियों के सेहत तक की चिंता है।

फुफेरी सास जी किसी को भी सहकार्य करने के लिए हमेशा तैयार रहती।वे बडी श्रद्धालु हैं। गाँव के रक्षणकर्ता गिऱ्होबा पर उनकी नितांत श्रद्धा है। यह गिऱ्होबा गांव के बाहर कलमी आम के पेड पर निवास करता है ऐसा उनका विश्वास है। किसी भी शुभ अवसर पर गिऱ्होबा को प्रसाद चढायें बिना कार्य शुरू करना उनके लिए पाप है। इसके साथ गांव में कोई कीर्तनकार आता तो वे बडी आस्था से उसकी व्यवस्था करती। उनके कीर्तन बडी श्रद्धा से सुनती। इस प्रकार वे श्रद्धालु स्त्री हैं।

वे बडी भावुक हैं, इस कारण उनके भाभी की भांजी आक्की पर व्यंकूभट जबरदस्ती करने का प्रयास करता है और उसके कारण लज्जावश वह आत्महत्या कर लेती है। इस बात का उन्हें बडा ही सदमा पहुँचता है। वे खुद को आक्की की मृत्यु का जिम्मेदार मानती हैं, क्योंकि उस प्रसंग में आक्की पर महादेव द्वारा हो रहे आरोप में उन्होंने महादेव भट को रोका नहीं था। वे आक्की की मृत्यु के गम में बीमार हो जाती हैं, और उसमें उनका अंत हो जाता है। इसके साथ पडघवली की अनुभवी, जिम्मेदार वयस्क स्त्री चली जाती है।

इस तरह से एक अनुभवी, जिम्मेदार, सेवाभावी, भावुक सहृदय स्त्री के रूप में फुफेरी सास का चित्रण हुआ है।

4.6.3 अन्य पात्र :-

फुफेरी सास और अंबू इन दो महत्त्वपूर्ण पात्रों के साथ आक्की, कुशात्या, शारदा, बनूवन्स आदि गौण स्त्री पात्र उपन्यास में आ जाते हैं।

आक्की एक अनाथ बेवा स्त्री है, जो अंबू की रिश्ते से दूर की ननद है। अंबू के घर में वह अपार कष्ट करती है। अंत में व्यंकूभट द्वारा जबरदस्ती के प्रयत्न में लज्जावश वह आत्महत्या कर लेती है। अपने पति के घर से लेकर मृत्यु तक उसने केवल कष्ट ही किये। संपूर्ण जिंदगी में उसे कभी सुख नहीं मिला।

कुशात्या व्यंकूभट की चाची है। पति के देहांत के बाद उसने बडे धैर्य और कष्ट से अपने दिन

बिताये। उसे केवल एक ही आशा थी कि एक न एक दिन उसका पागल बेटा रंगू अच्छा हो जायेगा।

शारदा भिऊआबा की सुंदर पत्नी है। वह व्यंकूभट से अपने संबंध रखती है। उसके इस गैरवर्तन से उसका पति आत्महत्या कर लेता है। पति की मृत्यु के बाद भी वह व्यंकूभट के साथ साथ गाँव के अन्य लोगों से संबंध रख अपना नाम बदनाम कर लेती है। अंत में पडघवली छोडकर चली जाती है।

बनूवन्स अंबू की चचेरी ननद है। वह अंबू की सबसे अच्छी दोस्त है। पडघवली में अंबू की समवयस्क एकमात्र सखी है, जिससे अंबू अपने सुख-दु:ख की बात करती है। शादी के बाद वह श्रीवर्धन चली जाती है, परंतु जब भी वापस आती है तब अंबू के लिए मानसिक सहारा तैयार हो जाता है।

इस प्रकार इन प्रमुख और गौण स्त्री पात्रों का उपन्यास में अपना अपना स्थान और महत्त्व रहा है।

4.6.4 व्यंकूभट :-

उपन्यास के प्रमुख पुरूष पात्रों में एक है व्यंकूभट। उपन्यास में उसने खलपुरूष की भूमिका निभायी है।

उपन्यास की प्रमुख स्त्री पात्र अंबू का रिश्ते से दूर का देवर है व्यंकूभट। यह एक दुष्ट प्रवृत्ति का व्यक्ति है। वह गाँव को लगी एक दीमक है। व्यंकूभट की हर योजना गाँववासियों को घाटे में डालनेवाली ही होती है। वह स्वार्थ में डुबा हुआ ऐसा व्यक्ति है जो स्वार्थपूर्ति के लिए कोई भी गिरी हुई हरकत करने में हिचकिचाता नहीं। वह एक लुटेरा है, जो लोगों के खेत, पैसे, यहाँ तक की स्त्रियों को भी लूटने के प्रयत्न में रहता है।

व्यंकूभट लोगों के पैसे, जमीन आदि हडप करने के प्रयास में रहता है। इसके लिए वह अनेक कुटिल कारस्थान रचता है। एक बार वह अंबू के पति महादेव भट को अपने कारस्थान में फँसाता है। सारे गाँव के आम महादेव भट को एकत्रित करने के लिए कहता है और उन्हें खुद मुंबई बेंचने के लिए ले जाता है। लेकिन वह महादेव भट और गाँववासियों को झूठ ही आम से भरे जहाज के डूब जाने की खबर देता है। जिसके कारण मानसिक दबाव में महादेव भट की मृत्यु हो जाती है और व्यंकूभट सारे गाँववासियों और महादेव भट के आम बेचकर खुद पैसे खा जाता है।

दूसरों की संपत्ति हडपने की ओर ही उसका ध्यान रहता है। उसकी एक बेवा चाची अपने पागल बेटे के साथ गाँव में ही रहती थी। उसके संपत्ती पर भी व्यंकूभट की नजर थी इस कारण वह कुशात्या की मृत्यु के बाद उसके शव से कागजातों पर अंगूठे का निशान लगवाकर सारी जायदाद का खुद मालिक बन जाता है। और लोगों के सामने कुशात्या ने स्वइच्छा से ही उसे जायदाद का वारिस नियुक्त किया है यह जाहिर कर देता है।

कुशात्या के साथ वह अंध भिऊआबा की पत्नी शारदा को अपने जाल में फँसाता है। भिऊआबा की मृत्यु के बाद शारदा से उसकी बाग अपने नाम लिखवा लेता है।

इस तरह किसी न किसी प्रकार से लोगों के पैसे, जमीन, बाग आदि हडपने के प्रयत्न में रहनेवाला एक लालची व्यक्ति है।

इसके साथ किसी न किसी प्रकार से लोगों को परेशान करना, गाँव में असंतोष फैलाने का प्रयत्न करता रहता है।

एक दिन लोगों की संमती के बिना ही वह गाँव के एक आम के पेड से सारे आम निकलता है। उस पर कुलवाडी लोग चीढ जाते हैं क्योंकि गाँववासियों की यह मान्यता थी कि उस पेड पर गिऱ्होबा (गाँव का रक्षणकर्ता) का निवास है और उसके आमों पर केवल कुलवाडी लोगों का अधिकार है। व्यंकू के इस कृति पर सारे लोग चीढ जाते हैं, व्यंकूभट और कुलवाडी लोग, गुजाभावोजी आदि में झगडा हो जाता और सर्वत्र एक असंतोष का वातावरण फैल जाता है। व्यंकूभट उन आमों को सरकारी अधिकारियों को देकर उन्हें अपने मुठ्ठी में करना चाहता था। साथ में बचे हुए आम खुद हडप करने की योजना थी। इस तरह से अपनी स्वार्थ के कारण वह ऐसी हरकते करता रहता था।

ऐसे ही एक बार वह महादेव भट के बाग में आनेवाले पानी के पाट में खेंकडे छोडता हे जिसके कारण पाट का पानी कम होकर बाग सूखने लगता है।

अपनी दुष्ट बुद्धि के कारण किसी मंगल कार्य में विघ्न डालना भी उसे बुरा नहीं लगता। इस कारण महादेव भट की बहन दुर्गा की शादी में वह दुर्गा के ससुरालवालों को भी कुछ गलत-सलत बता देता है जिससे वे लोग शादी से पहले दहेज लेने के लिए अड जाते हैं और दहेज लेने के बाद ही वर को शादी के लिए खडा करते हैं। इस तरह से वह अपने ही रिश्तेदारों के लिए ऐसी दुष्ट बुद्धि रख गैरवर्तन करके खुद के हीन स्वभाव का दर्शन कराता है।

व्यंकूभट की स्त्रियों की तरफ देखने की दृष्टि साफ नहीं है। भिऊआबा की सुंदर पत्नी शारदा को अपने जाल में फँसाता है। वह उसके जाल में फँस जाती है जिससे उसका पति आत्महत्या कर लेता है।

अंबू की ननद आक्की पर व्यंकूभट एक बार जबरदस्ती करने का प्रयास करता है जिसके कारण आक्की आत्महत्या कर लेती है।

इसके साथ गाँव के कुलवाडी स्त्रियों की ओर भी उसकी बुरी नजर है।

व्यंकूभट को लोगों की निजी जिंदगी में भी दखलअंदाजी करने की आदत है। इस तरह से यह एक दुष्ट प्रवृत्ती का व्यक्ति है।

व्यक्ति कितना भी दुष्ट क्यों न हो पर अपने अंतिम दिनों में थोडा शिथिल हो जाता है। वह एक बार बीमार हो जाता है।बीमारी में सीर के जख्म में कीडे हो जाते हैं। उसे असह्य वेदनाओं को सहना पडता है। उसी में वह आत्महत्या कर लेता है। उसके साथ पडघवली की एक दुष्ट शक्ति का अंत हो जाता है। परंतु जाते वक्त वह उसने दर्ज किया हुआ मुकदमा वापस लेने के लिए लिख जाता है। याने मरते वक्त लोगों से दुष्मनी रख मरना नहीं चाहता।

इस तरह से एक स्वार्थी, लालची, कारस्थानी, स्त्री लंपट दुष्ट व्यक्ति के रूप में व्यंकूभट का चित्रण हुआ है।

4.6.5 महादेव भट :-

उपन्यास के प्रमुख स्त्री पात्र अंबू के पति हैं महादेव भट। पडघवली गाँव के खोत हैं। पारंपारिक रूप से इनके पास खोत का पद चला आया है। वे बडी ईमानदारी से इस पद को निभाते हैं।

महादेव भट अत्यंत मृदु स्वभाव के व्यक्ति है। उन्हें तंटाबखेडा पसंद नहीं है। किसी भी समस्या का हल वे विचारविनिमय और शांति से निकालना चाहते है। वे गाँव के दुष्ट व्यक्ति व्यंकूभट से भी झगडा करना पसंद नहीं करते इस कारण व्यंकू के कुटिल षडयंत्र को जानते हुए भी उसे नजरअंदाज करते है। उनकी पत्नी अंबू और मित्र गुजा भट दोनों का व्यंकू को हमेशा होता रहा विरोध उन्हें पसंद नहीं था। वे हमेशा व्यंकू की बजाय अपनी पत्नी पर ही गुस्सा होते।

व्यंकू के प्रति उनका रवैया व्यंकू पर अतिविश्वास दिखलाना है। वे व्यंकू को गाँव की बडी आसामी मानते हुए उससे मैत्री रखते हैं।

अपने सौम्य स्वभाव के कारण वे व्यंकू के साथ साथ गाँव के अन्य लोगों से भी झगडा मोल लेना पसंद नहीं करते। उनकी लोगों से झगडा न मोल लेने की बात तो उनकी सौम्यता का दर्शन कराती है परंतु हर बात में इतना सौम्य वर्तन गाँव के खोत को शोभा नहीं देता। गाँव के किसी भी व्यक्ति के गैरवर्तन पर खोतद्वारा योग्य कारवाही होनी चाहिए। महादेव भट का यह वर्तन उनमें धैर्य की कमी स्पष्ट करता है। किसी को विरोध करने का ढांढस उनमें नहीं है, यह बात स्पष्ट हो जाती है।

महादेव भट किसी भी बात को नरमाई से लेते हैं, तो उनकी पत्नी हर बात की तह तक जाकर गैर बात का विरोध करने की हिम्मत रखती है। इस तरह से दोनों में वैचारिक भिन्नता है। इसी कारण दोनों में हमेशा एक दुराव रहा। इसका मतलब यह नहीं की उन्हें पत्नी से प्यार नहीं था परंतु वैचारिक भिन्नता के कारण उनमें झगडे होते और तनाव रहता।

व्यंकू पर उनके अतिविश्वास के कारण एक बार व्यंकू के कुटिल कारस्थान में फँस जाते हैं। जिसके कारण मानसिक दबाव में उनकी मृत्यु हो जाती है। यदि वे सौम्य स्वभाव के थे, उनमें धैर्य की कमी थी फिर भी उन्होंने पडघवली के कार्यभार को संभाला था। पडघवली को उनका आधार था। इस कारण उनकी मृत्यु पर उनकी पत्नी अंबू कहती है कि उसके पति कितने ही कमजोर क्यों न हो, परंतु उन कमजोर कंधो पर पडघवली खडी थी। वह खंबा गिर गया और हर कोई स्वैर वर्तन करने के लिए आजाद हो गया। महादेव भट के जाने से गाँव की सुसूत्रता खत्म हो गयी। हर कोई अपने मन की करने लगा। उनपर नियंत्रण करनेवाला कोई नहीं रहा, जिससे पडघवली का दिन-ब-दिन ऱ्हास होने लगा। उनके जाने से पडघवली का बडा ही नुकसान हुआ।

4.6.6 गुजाभट :-

उपन्यास में गुजाभट का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। महत्त्वपूर्ण पुरूष पात्र व्यंकूभट के प्रमुख विरोधक और प्रमुख स्त्री पात्र अंबू के सहाय्यक के रूप में गुजाभट का चित्रण हुआ है।

गुजाभट परसूकाका का बेटा है। वह अंबू के पति महादेव भट का सबसे अच्छा दोस्त है। उसे महादेव भट से बहुत प्यार है। गुजाभट को महादेव के घर से भी लगाव है। घर के हर सदस्य से उसे प्यार है। महादेव के घर के हर कार्य में वह लगन से सहभागी होता है।

गुजाभट अविवाहित रहा। उसे अपनी माँ के बुरे स्वभाव के दुष्परिणामों को देख स्त्रियों से डर लगता था। उसे अपनी जिंदगी में महादेव भट की फूफी और अंबू दो स्त्रियाँ आदरणीय रही हैं।

उसे कुश्ती का शौक है। वह अपने घर के सामने अखाडा बनवाकर दिनभर गाँव के लडकों के साथ कुश्ती खेलता रहता है।

उसका स्वभाव भावुक है। वह कुशात्या के पागल बेटे रंगू पर व्यंकूद्वारा हो रहे अत्याचार देख नहीं सकता इसी कारण व्यंकू से झगडकर उसे अपने घर ले आता है।

वह किसी पर हो रहा अन्याय सहन नहीं कर सकता। वह गाँव के सबसे दुष्ट व्यंकूभट के कुटिल कारस्थानों का हरबार विरोध कर गाँववालों की तरफ से झगडता है। जब उसे अपने मित्र महादेव की मृत्यु का जिम्मेदार व्यंकू ही है इस बात का पता चलता है तब तो वह व्यंकू को हमेशा के लिए ही खत्म करना चाहता है। दिन-ब-दिन व्यंकू के कारस्थान बढते जाते हैं, जिससे गाँव में असंतोष का वातावरण फैल जाता है। गुजा किसी भी तौर पर पडघवली में असंतोष या गाँव की प्रगति में बाधक बात सहन नहीं कर सकता। उसके मन में व्यंकू के प्रति असंतोष बढ जाता है ऐसे ही एक झगडे में दोनों में हाथापायी हो जाती है। गुजाभट व्यंकू को बहुत पीटता है। बात थाने में दर्ज हो जाती है और उसे नौ महिने का कारावास हो जाता है। परंतु वह खुश है कि उसने व्यंकूभट को पीटकर उसके किये की सजा उसे दिलायी।

व्यंकू का हमेशा उसने विरोध किया। फिर भी कहीं तो वह विरोध कम पडा नहीं तो पडघवली इतनी जल्दी उध्वस्त नहीं होती। ऐसे ही एक दिन वह अपने फक्कड स्वभाव के कारण मोडनिंब महाराज के गुरूबंधन में बंध जाता है और उनकी आज्ञा का पालन करते हुए अपनी आक्रमक प्रवृत्ति छोड देता है। हालाँकि यह परिवर्तन थोडे दिनों के लिए था परंतु इस समय में व्यंकू अपने कारस्थानों द्वारा पडघवली का बहुत नुकसान करता है।

इस तरह से एक सहृदयी, निर्भय, आक्रमक, भावुक, फक्कड स्वभाव के व्यक्ति के रूप में गुजा भट का चित्रण हुआ है।

4.6.7 अन्य पात्र :-

उपन्यास में महादेव भट, व्यंकूभट, गुजाभावजी इन महत्त्वपूर्ण पुरूष पात्रों के साथ गणूभावजी,

येसदा, गेंगाण्या, राघोभट, केशवभट आदि गौण पात्र आ जाते हैं।

गणूभावजी अंबू का देवर है। स्वभाव से अत्यंत सौम्य और आज्ञाकारी है। हमेशा भाई महादेव भट और भाभी अंबू की आज्ञा में रहता है। भाई महादेव भट की तरह उसके स्वभाव में धैर्य की कमी है। अपने ईमानदार स्वभाव के कारण वह शादी नहीं करता क्योंकि अपनी कोढ की बीमारी के कारण वह किसी लडकी को फँसाकर उसकी भावनाओं से खेलना नहीं चाहता। उसे किसी प्रकार का स्वार्थ नहीं है इसी कारण जब उसके भाई जायदाद का बँटवारा कर उसके हिस्से की जायदाद उसे देना चाहते हैं तब वह जोरदार विरोध करता है। उसे अपने भाई, भाभी और भतिजे पर पूरा विश्वास है और उनके साथ ही उसे हमेशा रहना है।

गेंगाण्या राघोभट का नौकर है। वह अत्यंत ईमानदार, एकनिष्ठ और मेहनती है। उसका राघोभट पर अत्यंत प्यार है। राघोभट के लिए वह अपनी जान की बाजी तक लगाने के लिए तैयार है। गेंगाण्या और राघोभट की मारूति और राम जैसी जोडी है। एक बार राघोभट के घर में श्राद्ध के लिए दिए जानेवाले भोजन के लिए आमों की जरूरत थी। वे वर्षा के दिन थे, जिससे आम के पेड पर चढना मुश्किल था। राघोभट भी गेंगाण्या को मना करते हैं। फिर भी वह पेड पर चढ जाता है और वही से नीचे गिरकर उसकी मृत्यु हो जाती है।

राघोभट पडघवली के संस्थापक केशवभट के पोता हैं। उन्होंने पडघवली की बहुत ही प्रगति की। वे बडे ही श्रद्धालु हैं। उनका गांव के रक्षणकर्ता गिऱ्होबा के दृष्टांत पर विश्वास था। खुद को हुए दृष्टांत में मिली आज्ञा का पालन करने के लिए वे अपने जान की बाजी तक लगाते थे। उनका अपने नौकर गेंगाण्या पर बडा ही प्यार था। उसे वे अपना भाई मानते थे। गेंगाण्या के बिना उनका हर काम अधूरा था। गेंगाण्या की मृत्यु का उन्हें बडा ही सदमा पहुँचा। गेंगाण्या की याद में उन्होंने जिस पेड के नीचे गेंगाण्या की मृत्यु हुई उस जगह पर एक मंदिर बनवाया। इसके साथ गेंगाण्या की सती गयी हुई पत्नियों की याद में स्मारक बंधवायें। अंत में गेंगाण्या के नाम से घर में लायी हुई ईश्वर मूर्ति की पूजा करते हुए उनकी मृत्यु हुई।

केशवभट पडघवली के संस्थापक हैं। वे अंजनवेल गाँव के किल्लेदार शेणवी के यहाँ काम करते थे। उन दिनों मुस्लिम चाचों का गाँववालों पर जुल्म होता था। इस कारण से किल्लेदार बहुत ही चिंतित थे तब केशवभट ने अत्यंत शौर्य से इन चाचों का सफाया किया इस पर खुश होकर शेणवी किल्लेदार ने उन्हें पडघवली इनाम के स्वरूप में भेंट की। इनके बाद उनके बेटे, पोते ने पडघवली को आगे बढाया। उसकी प्रगति की।

येंसदा पडघवली के कुलवाडी लोगों में से है। येसा आडविलकर सत्तरी पार किया हुआ हट्टाकट्टा आदमी है। उसे अंबू के घराने से अत्यंत लगाव है। उनके घर के हर व्यक्ति से उसे प्यार है। उनके हर कार्य में वह बडी आत्मीयता से सहभागी होता है। महादेव भट की बहन को वह अपनी बेटी ही मानता है। उसकी शादी कर उसे ससुराल भेज देना वह अपनी ही जिम्मेदारी समझता है। इस तरह ये उपन्यास के गौण पात्र हैं जिनका उपन्यास में अपना महत्व रहा है।

4.7 पात्र-कल्पना :-

4.7.1 पात्रों की विशिष्टता वर्ग-विभाजन के आधारपर :-

आँचलिक उपन्यासों में तीन वर्गों के रूप मिल जाते हैं।

4.7.1.1 उच्च वर्ग :-

प्रथम वर्ग उच्च वर्ग है। इसके बाद मध्य और निम्न वर्ग आ जाते हैं।

उच्च वर्ग में शोषण की प्रवृत्ति रखनेवाले परंपरावादी पात्र आते हैं।

'पडघवली' उपन्यास का व्यंकूभट ऐसा परंपरावादी पात्र है। परंपरावादी पात्र मानवीय संवेदनाओं से पूर्णत: रिक्त होते हैं। ये अत्याचारी, शोषक एवं कामुक होते हैं। इन्हें परंपरावादी इसीलिए कहा गया है कि शोषण की यह प्रवृत्ति मध्ययुगीन सामंतवादी परंपरा का ही अवशेष है।

संपूर्ण पडघवली गाँव में व्यंकूभट अत्यंत दुष्ट व्यक्ति है। वह अत्यंत स्वार्थी व्यक्ति है जो अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए कुछ भी गिरी हुई हरकत करने के लिए हिचकिचाता नहीं। वह हमेशा गाँव के लोगों की जमीने, पैसे साथ में स्त्रियों को भी लूटने के प्रयास में रहता है।

वह अपनी बेवा चाची कुशात्या की मृत्यु के बाद उसके शव से अंगूठा लगवाकर उसकी सारी संपत्ति हडप करता है। इसी तरह अंध भिऊआबा की पत्नी को अपने जाल में फसांकर उसकी बागों पर भी अपना कब्जा जमा लेता है। अनेक प्रकार के षडयंत्र रचाके लोगों के पैसे हडपने की ओर भी उसका ध्यान रहता है। ऐसे ही एक षडयंत्र में गाँव के खोत महादेव भट को अपने जाल में फँसाकर उससे सारे गाँव के आम इकठ्ठा करवाता है और उन्हें खुद मुंबई बेचने के लिए ले जाता है इसके बाद महादेव भट और गाँववासियों को तूफान में जहाज के

फँस जाने से सारे आम डूब गये ऐसी झूठी बात बताकर सारा नफा अकेला ही खा जाता है। ऐसी ही तिकडमबाजी वह हमेशा करता रहता है। बडे बडे सरकारी अफसरों को अपनी मुठ्ठी में करने के लिए वह अपनी ओर से एक भी पैसा नहीं खर्च करता, पर कुलवाडी लोगों के अधिकार का और गाँव के लोगों की दृष्टि से पवित्र आम के पेड से आम निकलकर उन्हें सरकारी अफसरों को भेट करने की योजना रचता हैं ऐसा करते वक्त वह गाँव के एक भी व्यक्ति से संमति नहीं लेता। वह हमेशा लोगों की निजी जिंदगी में दखलअंदाजी कर उन्हें त्रस्त करता रहता है। उसके दिल में जरा भी दया नहीं है।अपनी चाची कुशात्या की मृत्यु के बाद उसके बेटे को अपने घर में लाता है पर वह जल्दी मर जाय इस भावना से उस पागल रंगू पर अनन्वित अत्याचार करता है। उसकी स्त्रियों की ओर बुरी नजर रहती है। वह अंध भिऊ आबा की सुंदर पत्नी शारदा को फुसलाकर उससे संबंध रखता है। इसके साथ गाँव की अन्य कुलवाडी स्त्रियों की ओर भी उसकी बुरी नजर है। एक बार वह अंबू की ननद आक्की पर वह जबरदस्ती करने का प्रयास करता है। इस प्रकार वह स्त्री लंपट व्यक्ति है।

इस तरह से अत्याचारी, शोषक, स्वार्थी एवं लंपट व्यंकूभट परंपरावादी प्रवृत्ति का प्रतिनिधित्व करता है।

उच्च वर्ग में ऐसा एक स्तर आता है जिसमें जागृत पात्र आते हैं और वे परिवर्तनशील होते हैं। परंतु 'पडघवली' में ऐसे पात्र का चित्रण नहीं हुआ है।

उच्च वर्ग का तीसरा प्रकार है जो आदर्श पात्र कहलाता है। इसमें 'पडघवली' की अंबू का चित्रण हुआ है। वह अपने आप में एक आदर्श पात्र है। शादी करके अंबू बचपन में ही पडघवली में आ गयी। यहाँ पर वह पली, बडी हुई। पडघवली के सुखी और दु:खी दिनों को देखा। उन्हें महसूस किया। पडघवली और अंबू एक दूसरे में गुंथे धागे हैं जिन्हें अलग करना असंभव है। उसका संपूर्ण जीवन पडघवली तक ही सीमित रहा है। उसने हमेशा पडघवली से प्यार किया। वह पडघवली को हसते खेलते देखना चाहती है। वह घर के सदस्यों से लेकर गाँव के हर एक व्यक्ति का खयाल रखती है। अपने पति की इच्छा विरूद्ध वह व्यंकूभट के कारस्थानों का विरोध करती है। क्योंकि व्यंकूभट की हर योजना गाँववासियों को घाटे में डालनेवाली होती है। ऐसा करते वक्त पति की नाराजगी को नजरअंदाज करती है।उसका ध्यान तो केवल गाँव की भलाई और व्यंकू के षडयंत्रों को मिटाने की तरफ ही रहता है। अपने सेवाभाव, धैर्य, जिद्द और संवेदनशीलता से वह सारे गाँव को संभालती है। धीरे धीरे उसके आप्तजन उसका साथ छोडकर चले जाते हैं। पडघवली खाली होने लगती है। इस कारण अंबू के जीवन में रिक्तता आती है। साथ साथ गाँव के लोग पडघवली को छोड उदरनिर्वाह के लिए मुंबई जाने लगते हैं

ओर उनके पीछे पडघवली उध्वस्त हो जाती है। जिसने पडघवली से इतना प्यार किया। उसे हँसते-खेलते देखा वह पडघवली की बदतर अवस्था नहीं देख सकती वह अपने बेटे के पास मुंबई जाने का निर्णय लेती है। परंतु अंतिम क्षण में वह महसूस करती है कि वह पडघवली नहीं छोड सकती। अन्य लोगों के समान वह पडघवली से बेईमान नहीं हो सकती। वह ठोस निर्णय लेती है कि वह पडघवली छोड अब कहीं नहीं जायेगी। हमेशा के लिए अपने पडघवली में ही रहेगी एक आशा के साथ की शायद यह फिर से हँसती खेलती संपन्न बनें। उसके इस निर्णय में उसकी पडघवली से जुडी निष्ठा, जिद्द, अस्मिता इनके एकत्रित दर्शन होते हैं।

इस प्रकार वह हमेशा के लिए पडघवली में ही रहने का निर्णय लेती है। मानवप्रेम, सेवाभाव, धैर्य, जिद्द एवं अस्मिता से उसका चरित्र निखर कर वह एक आदर्श पात्र बना है।जिसकी संपूर्ण जिंदगी पडघवली के लिए समर्पित हुई है।

4.7.1.2 मध्यवर्ग :-

मध्यवर्ग के जो दो प्रकार पायें जाते हैं। उनमें से प्रथम प्रकार के पात्र आँचलिक कथा के प्रवाह से हटकर अपना कार्यक्षेत्र बनाते हैं। इस वर्ग में 'पडघवली' की 'शारदा' यह पात्र आ जाता है।

शारदा अंध भिऊआबा की सुंदर पत्नी है। उसने आँचलिक जीवन से बिलकुल अलग अपनी ही दुनिया बनायी है। वह अत्यंत रूपवान होते हुए भी उसके मायकेवालों ने पैसों के लालच से उसकी शादी एक अंध व्यक्ति से की थी इस बात का उसे अत्यंत दु:ख है। हमेशा एक अंध व्यक्ति की पत्नी बने रहना उसे दुखद और असह्य बात लगती है। वह अपने नसीब को कोसती रहती है। उसे अपना जीवन यातनाओं से भरा लगता है।

गाँव का व्यंकूभट उसके सौंदर्य की ओर आकर्षित हो उसपर अपना जाल बिछाना शुरू करता है। व्यंकूभट की दुष्ट भावनाओं को जानते हुए भी वह उसे अपने पास आने का अवसर देती है। समाज के रिवाजों, निंदा को नजरअंदाज कर उससे संबंध रखती है। व्यंकूभट से फूलों की मालाएँ, साडियाँ स्वीकार करती है। जब उसके इस स्वैर वर्तन से चीढकर अंबू उसे टोकती है तब वह बडी ही निर्लज्जता और अंबू को अपमानित करते हुए कहती है, ''आंधळ्याच्या गळ्यात बांधताना माहेरच्यांना काही नाही वाटल ? सगळा गाव म्हणतोय, शारदा एखाद्या राजाची राणी झाली असती म्हणून. काय उपेग आहे या रूपाचा ? जन्मभर आंधळ्यालाच मिठ्या मारीत बसायच ना ? मुळीच नाही बसायची ! माझ्याजवळ आहे रूप. त्यावर भुलून माणस घिरट्या घालतात, मी ही त्यांच्याशी गंमत करतेय. तुम्हांला नसेल पाहवत तर डोळे मिटून घ्या. नि पुन्हा उपदेश करायला येऊ नका।''[36]

(अंधे से शादी तय करते वक्त मायकेवालों को मेरी चिंता नहीं लगी? सारा गाँव कहता है कि शारदा किसी राजा की रानी बनी होती, लेकिन इस सौंदर्य का क्या फायदा ? सारी जिंदगी इस अंधे पती से ही संबंध बनाये रखना होगा ? बिलकुल नहीं,मैं ऐसा नहीं करूंगी। मेरे पास सौंदर्य है। उसपर आकर्षित हो लोग मुझपर डोरे डालते रहते हैं। मैं भी उनके साथ जिंदगी का मजा लेती हूँ। यदि आपसे देखा नहीं जाता तो आँखे बंद कर लीजिये । और फिर से मुझे उपदेश करने के लिए मत आइयेगा।)

उसके इस वर्तन से उसका पति आत्महत्या कर लेता है फिर भी वह अपने वर्तन में परिवर्तन नहीं करती और न ही लज्जित होती है।

व्यंकू के साथ साथ वह अन्य गाँव के लोगों से, गाँव के बाहर के लोगों से संबंध रखती है। उसने बनाये हुए उसकी इस दुनिया में वह बहुत खुश है।

आगे जब वह अपनी परंपरा से चली आयी जायदाद व्यंकू को बेचने का निर्णय लेती है और अंबू उसे परंपरा से चली आयी जमीन को न बेचने की सलाह देती है तब वह अंबू पर गुस्सा होते हुए कहती है, आप किस परंपरा की बात मुझे कह रही है। मायके और ससुराल किन लोगों ने मेरा भला चाहा है। मैं तो हमेशा असहाय अकेली रही हूँ। मुझे कोई फर्क नहीं पडता। जब तक मेरा मन इस गाँव में लगेगा तब तक यहाँ रहूँगी। यहाँ से मन भर गया तो सीधे मुंबई जा कर रहूँगी। मैंने तो एक बार यह बदनाम व्यवसाय शुरू किया है फिर यहाँ क्या और मुंबई क्या ?

इस प्रकार उसे अपनी इज्जत, अपने घराने की इज्जत, परंपरा, पति की इज्जत, अपना गाँव किसी बात की कोई चिंता नहीं है। वह तो केवल अपने लिए जीती है। उसे पडघवली से कोई लगाव नहीं है।

थोडे दिनों बाद अंबू का कहा मान वह पडघवली छोड चली जाती है। इस तरह से उसने लोकलाज सब त्याग के, किसी भी भले बुरे की चिंता न करते हुए अपने तरीके से मनचाही जिंदगी अपनायी है। उसकी कथा का आँचलिक जीवन से कोई संबंध नहीं है।

दूसरे प्रकार में वे पात्र आते हैं जो आँचलिक जीवन को अपना कार्यक्षेत्र बनाकर उसे प्रभावित एंव निर्देशित होते हैं। मध्यवर्गीय पात्रों का अधिक स्वाभाविक, प्रभावशाली एवं यथार्थ रूप ऐसे पात्रों में प्रकट होता है जो आँचलिक जीवन से संयुक्त होकर चलते हैं। अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के पात्र इसमें आ जाते हैं।

अच्छे पात्रो में 'पडघवली' के गुजाभट, कुशात्या आदि पात्र आ जाते हैं।

गाँव के परसूकाका का बेटा है गुजाभट। उसे पडघवली से अत्यंत प्यार है। वह पडघवली को हँसते खेलते देखना चाहता है। वह पडघवली की प्रगति चाहता है। इसी कारण गाँव की प्रगति में बाधक और गाँव में असंतोष फैलानेवाले व्यंकूभट के कुटिल षडयंत्रों का हमेशा विरोध करता है। व्यंकूभट के बढते षडयंत्रों को देख वह उसे खत्म करने की तक बात करता है ताकि हमेशा के लिए गाँव की बला टल जाय। वह अत्यंत भावुक है किसी पर हो रहा अन्याय वह सहन नहीं कर सकता, इस कारण व्यंकूभट द्वारा कुशात्या के पागल बेटे रंगू पर हो रहा अन्याय उससे सहन नहीं होता वह व्यंकू से लडकर रंगू को अपने घर ले आता है और उस पर औषधियों के अनेक प्रयोग कर उसे अच्छा बना देता है। उसे अपने मित्र महादेव भट से अत्यंत प्यार है। बचपन से दोनों में गहरी दोस्ती थी। महादेव की मृत्यु के बाद वह उसकी पत्नी अंबू और बेटे तथा भाई गणू की हिम्मत बढाता है। उनका साथ देता है। अपनी आदरणीय भाभी अंबू की हर आज्ञा का पालन करता है। इस प्रकार धैर्य, भावुकता, मित्रप्रेम, गाँव के प्रति उसका प्रेम उसे एक सशक्त और अच्छा पात्र बना देते हैं।

कुशात्या व्यंकूभट की चाची है। उसने अपने पति की मृत्यु के बाद पागल बेटे रंगू के साथ बडे धैर्य से अपना संसार चलाया है। काम करने में वह किसी से कम नहीं। अपनी मेहनत से उसने अपने बागों को हराभरा रखा है। गाँव के किसी भी व्यक्ति के लिए उसके मन में दूजा भाव नहीं है। उसे तो केवल एक ही आशा है कि किसी न किसी दिन उसका बेटा ठीक हो जायेगा। इसके लिए वह कोई न कोई व्रत हमेशा करती रहती है। अंत में अपने दुष्ट भतीजे व्यंकू पर विश्वास न होने के कारण अंबू पर अपने बेटे और जायदाद की जिम्मेदारी सौंपकर वह चल बसती है।

इसतरह से ये उपन्यास के अच्छे पात्र हैं।

बुरे स्वभाव के पात्रों का चित्रण मध्यवर्ग के अंतर्गत नहीं हुआ है।

उपन्यास के भले पात्र प्रगतिवादी विचारों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

4.7.1.3 निम्नवर्ग :-

आँचलिक जीवन सामान्यत: निम्नवर्ग के पात्रों में ही अधिक मुखर होता है। आँचलिकता का आधार भी निम्नवर्ग के पात्र ही होते हैं। इस वर्ग के दो भाग अत्यंत सरलता से किये जाते हैं। इसमें एक है

जनजातियां और दूसरा जन-सामान्य।

जनजातियां पिछडे जीवन का उद्‌घाटन करती है। 'पडघवली' के पडघवली गाँव की संपूर्ण आबादी में ब्राह्मण जाति के कुल बारा घर हैं। इसके साथ कुलवाडी, महार, कोली और खारव, मुसलिम आदि जातियों के लोग हैं। कुलवाडीयों के पचास एक घर हैं। कोली, खारव आदि लोगों की दस-बीस झोपडियाँ हैं। इन जनजातियों के आचार-विचार, मान्यताएँ, रीति-रिवाजों का उपन्यास में उल्लेख हुआ है। इनके द्वारा गाँव के जीवन की विशिष्टता चित्रित हुई है।

जनसामान्य के अंतर्गत आनेवाले पात्र निश्चित वर्गों में बंधे हुए नहीं होते। उनमें ग्रामीण जीवन के सभी पक्षों के प्रतिनिधि उपस्थित होते हैं। इसमें गुजाभट, शारदा, कुशात्या, रंगू, गेंगाण्या, येंसा अडविलकर, हैदर चाचा, नबी, भिऊआबा आदि के माध्यम से 'पडघवली' गाँव का स्वरुप स्पष्ट हुआ है।

इस प्रकार आँचलिक उपन्यासों के तीन वर्गों (उच्च, मध्य, निम्न) के पात्रों की आँचलिकता का विवेचन स्पष्ट हुआ है।

4.8 सामान्य विशेषताएँ :-

(1) आँचलिक उपन्यासों में प्रतिनिधि पात्रों का बाहुल्य होता है।

उपन्यास के सभी पात्र किसी न किसी रूप में प्रतिनिधि बनकर उपस्थित हुए हैं। साथ में ये सभी पात्र प्राय: अंचलरूपी महायात्रा के जीवन के किसी-न-किसी पक्ष पहलू या प्रवृत्ति के प्रतिनिधि होते हुए भी अपनी निजी वैयक्तिकता से भी समन्वित हैं।

'पडघवली' में महादेव भट गाँव के उन प्रमुख पुरूषों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिनके पास गाँव की जिम्मेदारी संभालने के लिए पद तो होता है परंतु उस जिम्मेदारी को धैर्यता से निभाने की योग्यता नहीं होती।

अंबू उन लोगों का प्रतिनिधित्व करती है जो अपने गाँव पर नितांत प्रेम करते हैं और गाँव के लिए कुछ भी करने को तैयार होते हैं।

व्यंकू भट प्रभुता-संपन्न वर्ग का प्रतिनिधि है। जो परंपरावादी वर्ग के अंतर्गत आता है।

गुजाभट अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करनेवाले लोगों का प्रतिनिधित्व करता है।

शारदा ऐहिक सुखों के पीछे भागनेवाली स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती है। जो अपनी इच्छापूर्ति के लिए किसी भी हद तक नीचे गिर सकती है।

इनके अतिरिक्त विभिन्न वर्गों के पात्र अपने अपने वर्ग की प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

(2) कई प्रतिनिधि पात्र व्यक्तिगत गुणों से परिपूर्ण होने का कारण अपने ही वर्ग में अपनी विशेष स्थिति बना लेते हैं।

'पडघवली' की अंबू इस वर्ग आ जाती है। वह बचपन में ही शादी हो पडघवली आयी है। यहां पर वह पली, बडी हुई। पडघवली के सुखी और दुखी दिनों को महसूस किया। उसका सारा जीवन पडघवली तक ही सीमित रहा है। उसने हमेशा पडघवली से प्यार किया। अपने घर के सदस्यों से लेकर गाँव के हर व्यक्ति का वह खयाल रखती है। अपने सेवाभाव, धैर्य, जिद्द और संवेदनशीलता से सारे गाँव को संभालती है। वह हमेशा पडघवली को प्रगतिपथ पर देखना चाहती है इसी कारण पडघवली की प्रगति में बांधक व्यंकूभट के कारस्थानों का पति की इच्छाविरुद्ध प्रतिकार करती है। जब धीरे धीरे गाँव की आर्थिक समस्या के कारण गाँव के लोग अपने उदरनिर्वाह के लिए मुंबई भागने लगते हैं और उनके पीछे गाँव उध्वस्त हो जाता है तब वह बडी अस्वस्थ होती है। अपने गाँव की बदतर अवस्था उससे देखी नहीं जाती और वह मुंबई अपने बेटे के पास जाने का निर्णय लेती है। परंतु अंतिम क्षण में वह महसूस करती है कि पडघवली को छोड कर नहीं जा सकती है।अन्य लोगों के समान वह पडघवली से बेइमान नहीं हो सकती। वह ठोस निर्णय लेती हे कि वह अपनी अंतिम सांस तक पडघवली को छोड कहीं नहीं जायेगी। केवल एक ही आशा के साथ पडघवली में रहेगी कि फिर से पडघवली संपन्न, हँसती खेलती बनें।

उसके पडघवली छोड कर न जाने के निर्णय में उसकी पडघवली से जुडी निष्ठा, जिद , अस्मिता आदि के दर्शन हो जाते हैं।

अपने सेवाभाव, जिद्द, धैर्य, संवेदनशीलता से वह एक आदर्श पात्र बनी हैं। उसने अपना एक विशेष स्थान बनाया है।

अंबू के साथ गुजाभट का भी एक विशेष स्थान रहा है। उसे अपने गाँव से अत्यंत प्यार है। वह

गाँव की भलाई चाहता है, इस कारण गाँव में असंतोष फैलानेवाले और गाँव के लोगों को अपने कारस्थान से लूटनेवाले व्यंकूभट का जोरदार विरोध करता है। जब व्यंकूभट के कुटिल षडयंत्र बढने लगते हैं तब तो गुजा उसे खत्म ही करना चाहता है ताकि गाँव की बला हमेशा के लिए टल जाये। गाँव की दुष्ट शक्ति का अंत हो जाय। ऐसा सोचते वक्त उसे अपने जीवन की तक चिंता नहीं लगती। वह अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने से डरता नहीं इस कारण व्यंकूद्वारा गाँव के कुलवाडी लोग, कुशात्या का पागल बेटा रंगू पर हो रहे अन्याय में खुद हस्तक्षेप कर व्यंकू के विरुद्ध लडता है ताकि लोगों को न्याय मिले। अंत में जब व्यंकूभट के साथ हुए झगडे में उसे पुलिस पकडकर ले जाती है तब भी वह न्यायालय में अपनी तरफ से वकील पेश नहीं करता और उसे नौ महिने की सजा हो जाती है। ऐसे करते वक्त उसका एकमात्र उद्देश्य होता है कि पडघवली का नाम बदनाम न हो जाय। साथ में अपनी माँ समान आदरणीय भाभी को पूछताछ के दौरान कटघरे में खडा न होना पडे।

इस प्रकार अपनी सहृदयता, आक्रमक प्रवृत्ति, भावुकता, निर्भयता से उसने अपना एक विशेष स्थान बनाया है।

आँचलिक उपन्यासों में सामान्य पात्रों को उभारकर उनके द्वारा सामाजिक जीवन की कथा कहलाने के लिए उनमें व्यक्तिगत गुणों का हल्का पुट दे दिया जाता है। ऐसे पात्रों में उनका विशेष गुण मिल जाता है जो उन्हें अन्य पात्रों से भिन्न करता है।

'पडघवली'की अंबू में अपने गाँव के प्रति प्रेम, फुफेरी सास में सेवाभाव, गुजा भट में विद्रोह, गणूभावजी का आज्ञाकारी स्वभाव आदि विशेष गुण इन पात्रों को अन्य पात्रों से भिन्न करते हैं।

अंबू अपनी शादी के बाद पडघवली में आयी। यहाँ पर वह पली बडी हुई। पडघवली के हर सुख-दुख में वह उसके साथ रही। पडघवली और अंबू एकदूसरे में गुंथे धागे हैं जिन्हें अलग करना असंभव है। उसका संपूर्ण जीवन पडघवली तक ही सीमित होकर रहा है। वह पडघवली के हर सदस्य से प्यार करती है। उनके सुख-दुख में उनका साथ देती है। वह हमेशा पडघवली को हसते-खेलते देखना चाहती है। इसीकारण पडघवली की संप्पन्नता, सुख शांति में बाधक हर बात का वह जोरदार विरोध करती है। फिर भी धीरे धीरे पडघवली उध्वस्त हो जाती है। वहाँ के लोग मुंबई भागने लगते हैं। उस वक्त भी वह अपने पडघवली से अन्य लोगों जेसा बेईमान वर्तन नहीं करती। अपने अंतिम सांस तक वहीं रहने का ठोस निर्णय लेती है। उसके इस निर्णय में उसकी पडघवली के प्रति निष्ठा, प्रेम स्पष्ट होता है।

फुफेरी सास गाँव के खोत महादेव भट की फूफी है। वे गाँव की जिम्मेदार महिला हैं। उनमें सेवाभाव बडी मात्रा है। उन्हें जडी-बूटियों के दवा की जानकारी है। उन दवाइयों का मरीज पर बडी कुशलता से इलाज करना वे जानती हैं। इसी कारण गाँव की कुलवाडी स्त्रियाँ उनसे ही इलाज करवाती है। फुफेरी सास की उपस्थिति में अपने पर इलाज करा लेने से वहाँ की स्त्रियाँ निश्चिंतता महसूस करती हैं। फुफेरी सास अपने गरीब मरीज पर इलाज करने के साथ साथ अपने घर से उन्हें पौष्टिक आहार भी खुद बनाकर देती है। इस प्रकार अपने सेवाभाव प्रवृत्ति के कारण सारे गाँववासियों की बडी आत्मीयता से मदद करती है।

गुजाभट एक धैर्यवान व्यक्ति है। उसे पडघवली से अत्यंत प्यार है। इसी कारण पडघवली में असंतोष का वातावरण फैलानेवाले, गाँव के लोगों को अपने कारस्थान में फँसानेवाले दुष्ट व्यंकूभट का वह जोरदार विरोध करता है। अपने पर हो रहे अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करना अत्यंत जरूरी समझता है। व्यंकूभट जब गाँव के कुलवाडी लोग, कुशात्या का पागल बेटा रंगू पर अन्याय करता है तब इन लोगों की ओर से गुजा खडा रहता है। उन्हें न्याय दिलाने के लिए व्यंकू से झगडता है। जब अपने परम मित्र महादेव की मृत्यु के लिए जिम्मेदार व्यंकू था यह बात उसे समझती हे तब तो वह व्यंकू को खत्म करने की सोचता है। व्यंकू के बढते कारस्थानों को देख वह व्यंकू को हमेशा के लिए खत्म करने की सोचता है ताकि गाँव की बला टल जाये। इस प्रकार वह अपनी विद्रोह वृत्ति के कारण व्यंकू का विरोध कर उससे झगडता रहता है। अंत में वह व्यंकू के वर्तन से चीढकर उसकी बहुत पिटाई करता है और उसी कारण उसे नौ महिने का कारावास होता है।

गणूभावजी गाँव के खोत महादेव भट का भाई है। वह अत्यंत आज्ञाकारी है। अपने भाई और भाभी अंबू की आज्ञा का पालन करना वह अपना कर्तव्य समझता है। जब उसके भाई महादेव भट उसे जायदाद का बँटवारा कर उसके हिस्से की जायदाद उसे देना चाहते हैं तब वह उस बात का विरोध करते हुए कहता है, ''दादा मी घरातून चालता होईन हा ! वाटणीच नाव काढायच नाय पुन्हा !''[37]

(भैय्या, मैं घर से चला जाऊंगा अगर आपने फिर से बँटवारे का नाम लिया।)

अपने भाई की मृत्यु के पश्चात भी वह अपनी भाभी की आज्ञा में रहता है। जब भाभी अंबू अपने मुंबई जाने का निर्णय बदल हमेशा के लिए पडघवली में रहने का निर्णय लेती है तो वह बडा ही आनंदित हो जाता है।

(3)क्षेत्रीय विशेषताओं की पात्रों में अभिव्यक्ति :-

आँचलिक उपन्यास में पात्र विकसित हो या अविकसित उनकी अवतारणा क्षेत्रीय विशिष्टताओं को अभिव्यक्त करने के लिए की जाती है। गौण रूप में व्यक्तिवादी पात्र भी अपने अन्य पात्रों के संबंध के कारण अंचल जीवन का उद्‌घाटन करने में सहाय्यक बनते हैं। इस तरह से उपन्यास के सभी पात्र इसमें सहाय्यक होने हैं।

'पडघवली' में अंधविश्वास, जातीयता, गरीबी आदि अंबू, फुफेरी सास येसा आडविलकर, गुजाभट, सुलेमान, हैदरचाचा आदि पात्रों द्वारा व्यक्त हुए हैं।

पडघवली के लोगों में अंधविश्वास बडी मात्रा में है। गाँव के बाहर आम का एक पेड है उस पेड पर गाँव का रक्षणकर्ता गिऱ्होबा निवास करता है, इस बात पर सारे गाँववासियों का विश्वास है। उनके लिए यह पेड अत्यंत पूजनीय और महत्त्वपूर्ण है। यहाँ के लोगों का विश्वास है कि गिऱ्होबा उनके मार्गदर्शन के लिए सप्ने में आकर दृष्टांत देता है। उनका यह विश्वास है कि जिस व्यक्ती पर वह प्रसन्न है उसे ही वह दृष्टांत देता है। इस कारण जब अंबू को गाँव के सती के स्मारक पर दिया लगाकर आते समय किसी अदृश्य शक्ति का आभास होता है और वह डर जाती है तब फुफेरी सास उसे समझाते हुए कहती है,

''सूनबाई गिऱ्होबा हो तो !''[38]

''ज्याच्यावर तो प्रसन्न असतो, त्याला अशीच समक्षा देता तो.''[39]

(बहू, वह गिऱ्होबा ही था।)

(जिसपर वह प्रसन्न होता है, उसेही उसका साक्षात्कार होता है।)

अंबू की भी गिऱ्होबा पर श्रद्धा और विश्वास है इसकारण फुफेरी सास के कहने पर आम के पेड के नीचे प्रसाद चढाकर आती है और गिऱ्होबा से आशिर्वाद माँगते हुए कहती है,

''गिऱ्होबाराया, सांभाळून घे हो !''[40] (गिऱ्होबा अपनी कृपादृष्टि बनायें रखना)

इनके साथ गुजा भट की भी गिऱ्होबा पर श्रद्धा है। एक दिन उसे गिऱ्होबा का साक्षात्कार हो जाता है और उसके मार्गदर्शन पर वह कुशात्या के पागल बेटे रंगू को व्यंकूभट के घर से उससे झगडकर अपने घर

रंगू की देखभाल करने के लिए ले आता है।

इस गिऱ्होबा को गाँव के मुसलिम लोग पीरबाबा नाम से जानते हैं। उनके लिए यह पीरबाबा अत्यंत आदरणीय है। पीरबाबा के साक्षात्कार के ये लोग भी महत्त्वपूर्ण मानते हुए उसके साक्षात्कार को आदेश मानकर उसे पूरा करना अपना कर्तव्य समझते हैं। इस कारण गाँव का सुलेमान नामक मुसलिम व्यक्ति अपने अंतिम दिनों में पीरबाबा के साक्षात्कार को आदेश मानकर अंबू से माफी माँगने आता है क्योंकि उसने सारे गाँव के आम मुंबई जाकर बेचने के व्यंकू के षडयंत्र में व्यंकू का साथ दिया था जिसके कारण मानसिक दबाव में अंबू के पति की मृत्यु हुई थी।

इसके साथ गाँव का कुल्पुरूष नाग के रूप में गाँव में निवास करता है। गाँव के स्थापक केशवभट ने मुस्लिमों के आक्रमण पर सोने की मूर्तियाँ कुएँ में फेंकी थी। आदि कथाओं पर लोग विश्वास करते हैं। इसके साथ दुर्गामाता, आम, अमला आदि पेडों से संबंधित किवंदतियाँ यहाँ प्रचलित है। साथ में 'आसरांच्या कडा' नामक पहाड आदि से संबंधित कथाएँ यहाँ प्रचलित है। इन कथाओं के कारण पेडों, पहाड, देवी देवताओं को व्यक्तित्व प्राप्त हुआ है। ये इन लोगों के सामूहिक जीवन का एक अविभाज्य भाग बने हैं। और इनके साक्षात्कार यहाँ के लोगों को बडे ही महत्त्वपूर्ण लगते हैं।

ऐसे अंधविश्वासों के साथ यहाँ जातीयता भी बडी मात्रा में है। गाँव में ब्राह्मण, कुलवाडी, मुसलिम, कोली, महार, खारव आदि जातियों के लोग रहते हैं।

ब्राह्मण जाति उच्च मानी जाती है। कुलवाडी निम्नजाति मानी जाती है, इस कारण इन लोगों के हाथों से बना खाना ब्राह्मण लोग नहीं खाते। येसा आडविलकर कुलवाडी है। महादेव भट की बहन दुर्गा की शादी में येसा आडविलकर दुर्गा को अपनी ओर से भोजन देना चाहता है,पर ब्राह्मण उसके घर में आकर खाना नहीं खा सकते इस कारण वह भोजन की सब सामग्री दुर्गा के घर पहुँचाता है और उन्हें कहता है कि,

''सुकानी नांदा, दुर्गाताय खंय हाय ? आज आमचा गरिबाचा केलवान नाय म्हणून चालायचा नाय ! सूनबाय, तांदूल, दाल, गूल, वाइच तूप, भाजी सगला सामान हाय. सैपाक करा. दुर्गातायला रांगोली घालून पाटावर बसवा नि पोटभर जेऊ द्या!''[41]

(सुखी रहो, दुर्गाताई कहाँ है ? आज हम गरीबों का गडंगनेर,ना नहीं कर सकते।

बहू चावल, दाल, गुड, थोडासा घी, सब्जी सब सामान लाया हूँ। रसोई बनाइये। रंगोली सजाकर दुर्गाताई को आसन पर बिठाइये और उन्हें भरपेट खाना खिलाइये।)

इस प्रकार से उसकी सामुग्री से दुर्गा के घर में भोजन बनाया जाता है।

गाँव के मुसलिम लोगों को ब्राह्मणों के घर में अस्पृश्य माना जाता है। इस कारण मुस्लिम हैदरचाचा जब ब्राह्मण अंबू के घर में पानी पीने के लिए आता है तब उसे घर के पात्र में पानी नहीं दिया जाता बल्कि उसे घर के कोने में रखे पात्र में ही पानी दिया जाता है। उनके घर के कोने में मुसलिमों के लिए खास पात्र रखा जाता था। उस पात्र से उनके सिवा अन्य किसी को पानी नहीं दिया जाता।

इस तरह से यहाँ जातीयता का बडा महत्त्व है।

यहाँ थोडे बहुत उच्चवर्गीय लोगों को छोड बहुत से लोगों को गरीबी का सामना करना पडता है। गाँव की आर्थिक व्यवस्था बहुत अच्छी नहीं है। गाँव के लोग मेहनती है। खेतों में काम करते हैं फिर भी उन्हें आर्थिक समस्या को झेलना ही पडता है। क्योंकि दिन भर अथक परिश्रम करने के बाद भी साधारण आमदनी होती है। इस कारण यहाँ के लोग धीरे धीरे मुंबई भगने लगे हैं ताकि नकद आमदनी मिले, दिन भर मेहनत न करनी पडे।

यहाँ के कुलवाडी लोग बहुत गरीब होते हैं। इनकी स्त्रियों की बीमारी में उनपर ठीक से इलाज तक नहीं होता। इस तरह से गाँव की आर्थिक परिस्थिति ठीक नहीं है।

इस प्रकार इन पात्रों के माध्यम से गाँव की जातीयता, अंधविश्वास व्यक्त हुआ है। गरीबी का चित्रण किसी विशिष्ट पात्रद्वारा चित्रित नहीं हुआ है।

इन पात्रों के साथ साथ व्यक्तिवादी पात्र भी आँचलिक जीवन का उद्‌घाटन करने में सहाय्यक बने हैं।

'पडघवली' की अंबू के लिए उसका पडघवली गाँव ही उसकी कर्मभूमि है। अपनी शादी के बाद पडघवली में आयी यहाँ पर पली, बडी हुई अंबू का संपूर्ण जीवन पडघवली तक ही सीमित रहा है। उसे पडघवली से नितांत प्यार है। यहाँ के हर सदस्य के निजी सुख-दुख में वह उसका साथ देती है। अपने गाँव की

शांति, संप्पन्नता में बाधक हर बात का जोरदार विरोध करती है। पडघवली की आर्थिक समस्या के कारण यहाँ के लोग मुंबई निकल जाते हैं। उनके पीछे गाँव उध्वस्त हो जाता है। पडघवली की बदतर अवस्था में भी वह अन्य लोगों जैसे पडघवली से बेईमान नहीं होती। वह अपनी अंतिम सांस तक अपने गाँव में ही रहने का निर्णय लेती है केवल एक आशा के साथ कि शायद फिर से अपना गाँव हँसता, खेलता संप्पन्न बनें।

(4) उपन्यासकार का जीवनदर्शन और पात्र :-

उपन्यासकार का जीवनदर्शन अथवा उसकी विचारधारा पात्रों में स्वत: प्रकट हो जाती है। इस कारण प्रगतिशील उपन्यासकार अपनी कथा में प्रगतिशील तत्वों का समन्वय कर देता है। ऐसे प्रगतिवादी पात्र दो प्रकार के होते हैं एक आँचलिक और दूसरा अनांचलिक।

'पडघवली' का प्रगतिशील आँचलिक पात्र है अंबू। अंबू गाँव के खोत महादेव भट की पत्नी है। खोत (गाँव का प्रमुख) की पत्नी होने के नाते वह अपनी जिम्मेदारी समझती है। पडघवली के हर सदस्य का वह खयाल रखती है। पडघवली से उसे नितांत प्यार है। वह पडघवली को संप्पन्न देखना चाहती है, सुखी देखना चाहती है। इस कारण पडघवली की शांति, प्रगति में बाधक हर बात का वह जोरदार विरोध करती है। अपने सेवाभाव, सहकार्य की भावना, संवेदनशीलता से पडघवली की स्त्रियों से उसका भावनिक रिश्ता बना है। उनकी हर समस्या में वह उनका साथ देती है उसमें धैय है इस कारण स्त्रियों पर हो रहे अन्याय या गाँव के अन्य लोगों की समस्या में वह उन लोगों का प्रतिनिधित्व करती है। गाँव में असंतोष फैलानेवाले दुष्ट व्यंकूभट का हर बार विरोध करती है। इस तरह से उसका संपूर्ण जीवन पडघवली तक ही सीमित रहा है। वह अपने पडघवली को प्रगतिपथ पर देखना चाहती है। इस कारण पडघवली जब उध्वस्त हो जाती है गाँव के सारे लोग पडघवली से दूर मुंबई भागने लगते हैं तब भी वह पडघवली का साथ नहीं छोडती। अपने अंतिम सांस तक पडघवली में ही रहने का निर्णय लेती है। उसके इस निर्णय में उसकी पडघवली के प्रति निष्ठा , प्रेम व्यक्त हुआ है।

उपन्यास में चित्रित यह अंबू पात्र उन्होंने (लेखक ने) अपनी माँ के अनुभवों तथा उसकी प्रेरणा से लिया है। उपन्यास में चित्रित गाँव उनका खुद का ही है। गाँव का संपूर्ण जीवन उन्होंने अनुभूत किया है। उपन्यास की भूमिका स्पष्ट करते हुए लेखक ने स्वयं ही लिखा है, '' ती माझ्याच गावची कथा आहे. लहानपणी, सताठ वर्षाचा असताना तिथे गेलो होतो - आई दादांसवे- तेव्हांची स्मरणें समृद्धितली आहेत. -----पुढे सतरा वर्षे वनवासाची गेली. त्या दीर्घ काळानंतर पुन: मी कोकणांत घरी जाऊ लागलो. पाहिले की त्या पूर्व वैभवास ठतरती

कळा लागली आहे. गावांत कुणी खरा तरुण सहसा उरला नाही. सगळे शहराकडे पळत सुटले आहेत. हे पाहून विषाद मनी अगदी दाटून आला. अशी पडघवली मनांत कणाकणाने रचली जात होती. एका बारक्याश्या निमित्ताने ती एकदम रूप धरुन मनी उभी राहिली.''[42]

(यह मेरे ही गांव की कहानी है। बचपन में सात-आठ साल की उम्र में मैं वहाँ गया था। माता-पिता के साथ। तब की यादें बडे समृद्धकाल की हैं। -----आगे सत्रह साल बीत गये। इतने दीर्घ कालावधि के बाद मैं फिर से कोंकण जाने लगा। देखा कि पहले जैसी संप्पन्नता नहीं रही। गाँव में कोई मेहनती युवा नहीं रहा है। सब शहरों की ओर भाग रहे हैं। यह देख मन बडा अस्वस्थ हुआ। इस प्रकार धीरे धीरे पडघवली की रचना मन में तैयार हो रही थी। ओर एक छोटे से प्रंसग से उसने मूर्त रूप धारण किया।)

अंबू का चित्रण करते समय उन्होंने अपने माँ से बहुतसी सामग्री एकत्रित की। एकत्रित की हुई सामग्री में से कुछ छोड दिया और कुछ अपनी कल्पना शक्ति से जोड दिया। इसके बारे में उन्होंने पडघवली की भूमिका स्पष्ट करते हुए लिखा है,

''पडघवली जिच्या सहाय्यावाचून अपुरी राहिली असती, ती माझी आई मज घरीच होती. अडले नडले तिला विचारीत असे. ती आजारी असे. झोपून असे. पण मी काही विचारले की मोठ्या उत्साहाने उठून बसे. आठवेल तसे ती सांगू लागे. बालपणीच्या विवाहकथा, सासरी येणे, सोहळे-समारंभ, मंगळागौरी, हळदीकुंकू पहिलटकरणीची डोहाळजेवणें, प्रयोजनें - असे सगळे मी तिजकडून ऐकलें. काही गाळले. काही भर घालून लिहिले. तिज विषयी कृतज्ञता म्हणून पडघवलीच्या प्रतिनिधिभूत स्त्रीचे बिंब मी अंबूवहिनी ठेवले आहे. माझ्या आईच नांव अंबिकाबाई दांडेकर होते.''[43]

(जिसकी सहाय्यता बिना पडघवली पूरी होना असंभव था, वह मेरी माँ मेरे ही घर में थी। जब कुछ शंकाएँ आती तब मैं उसे पूछता था। वह बीमार थी। हमेशा सोयी रहती। लेकिन जब मैं उससे कुछ पूछता वह बडे उत्साह से उठ बैठती। जैसे जैसे उसे याद आता मुझे बताती जाती। बचपन की विवाह कथाएँ, ससुराल आना, त्योहार-समारंभ, मंगलागौरी, हल्दी-कुंकू, गोदभरनी के भोजन, 'प्रयोजन' आदि सब मैंने उसी से सुना। उसमें से कुछ छोड दिया। कुछ अपनी कल्पनाशक्ति से जोड दिया। माँ के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए ही मैंने पडघवली के प्रतिनिधि स्त्री पात्र का नाम अंबू रखा है। मेरी माँ का नाम अंबिकाताई दांडेकर था।)

इन सबके द्वारा उन्होंने अंबू का अत्यंत सूक्ष्मता से और प्रभावीरुप से चित्रण किया है। अंबू का

पडघवली प्रेम और पडघवली की उध्वस्त स्थिति देख उसकी अस्वस्थता, मानसिक घुटन स्वयं दांडेकरजी का ही अपने गाँव के प्रति प्रेम और अपने गाँव की उध्वस्तता देख उनके मन की अस्वस्थता चित्रित हुई है। अंबू से जुडे अन्य पात्रों की मानसिकता, उनका वर्तन आदि के चित्रण के लिए उन्होंने गाँव के अन्य लोगों से वार्तालाप द्वारा सामग्री एकत्रित कर उसे प्रस्तुत किया है।

इस तरह से अंबू इस प्रगतिशील आँचलिक पात्र में उनका (लेखक का) जीवनदर्शन और उनकी विचार धारा चित्रित हुई है।

इसमें प्रगतिवादी अनांचलिक पात्र का चित्रण नहीं हुआ है।

4.9 चरित्र कल्पना :-

चरित्र कल्पना में पात्रों के बाह्यसौंदर्य और आंतरिक सौंदर्य का चित्रण आ जाता है।

'पडघवली' उपन्यास में पडघवली गाँव की लगभग आधी जनसंख्या को उपन्यास में स्थान मिला है। लेखक ने उनमें से बहुत से पात्रों का स्पष्टता से बहिरंग चित्रण किया है।

इनमें गाँव के कुलवाडी येसा आडविलकर, राघोभट का नौकर गेंगाण्या, यदोनाना की पत्नी, गुजाभट, हैदरचाचा, शारदा आदि पात्रों का बहिरंग चित्रण किया है। इसके साथ उपन्यास के अन्य पात्रों का अल्प मात्रा में क्यों न हो पर बाह्य चित्रण हुआ है।

इनके बहिरंग चित्रण द्वारा लेखक ने आँचलिक वेशभूषा, केशभूषा, रहन-सहन साथ में पात्रों के शारीरिक गुण-दोष आदि को चित्रित किया है। इन पात्रों में स्थानीय वेशभूषा और उनके रूपाकार में स्थानीय वेशभूषा और उनके रूपाकार में स्थानीय विशिष्टता दिखायी देती है।

'पडघवली'के पात्रों का बहिरंग चित्रण के साथ अंतरंग चित्रण बडा प्रभावी हुआ है। लेखक ने उपन्यास के पात्रों के अंतरंग को सूक्ष्मता से चित्रित किया है।

उपन्यास के अंबू, फुफेरी सास, गुजाभट, व्यंकूभट, महादेव भट आदि का बडी सूक्ष्मता से चित्रण किया है।

अंबू पडघवली के खोत महादेव भट की पत्नी है। उसे पडघवली से अत्यंत प्यार है। वह पडघवली के हर सदस्य का खयाल रखती है। पडघवली की संप्पन्नता, प्रगति, शांति में बाधक हर बात का वह जोरदार विरोध करती है। अपनी संवेदनशीलता, धैर्य, सेवाभाव से वह गाँव के हर सदस्य के सुख-दु:ख में साथ देती है। गाँव की आर्थिक समस्या के कारण धीरे धीरे गाँव के लोग मुंबई भाग जाते हैं और उनके पीछे पडघवली उध्वस्त हो जाती है। तब तो वह बडी ही अस्वस्थ बन जाती है फिर भी अन्य लोगों के समान पडघवली से बेईमान नहीं होती। अपने अंतिम सांस तक पडघवली में ही रहने का ठोस निर्णय लेती है। उसके इस निर्णय में उसकी पडघवली के प्रति निष्ठा, प्रेम, उसकी जिद, अस्मिता इनका एकत्रित दर्शन हो जाता है। फिर से पडघवली संप्पन्न और हँसती -खेलती बने इसी एक आशा पर वह हमेशा के लिए गाँव में रह जाती है। इस प्रकार उसका संपूर्ण जीवन पडघवली तक ही सीमित होकर रहा है।

फुफेरी सांस पडघवली के खोत महादेव भट की फूँफी है। वे गाँव की वयस्क और जिम्मेदार व्यक्ति है। उन्हें गाँव और गाँव के लोग इन सबसे अत्यंत प्यार है। उनमें सेवाभाव बडी मात्रा में है। वे जडी-बूटियों की दवा जानती है। वे इलाज करने में भी कुशल है। इस कारण गाँव के बीमार लोगों पर वे बडी कुशलता से उपचार करती है। गाँव की स्त्रियाँ उनकी उपस्थिति में इलाज करा लेने में बडी निश्चिंतता महसूस करती हैं। उनमें सहकार्य की भावना बहुत है। दिन के किसी भी प्रहर में, किसी भी व्यक्ति की मदद करने में उन्हें आनंद मिलता है। उनके मन में सबके लिए प्यार है। विशेषत: गरीब स्त्रियों के प्रति उनकी विशेष सहानुभूति रहती है। इस प्रकार एक भावुक, दयालु, सेवाभावी स्त्री के रूप में उनका चित्रण हुआ है।

गुजाभट गाँव के परसू काका का बेटा है। स्वभाव से फक्कड आदमी है। उसे गाँव से अत्यंत प्यार है। इस कारण गाँव की शांति, सुख, प्रगति में बाधक गुजाभट जैसे स्वार्थी, दुष्ट व्यक्ति का हर बार विरोध करता है। वह बडा धैर्यवान है, इसी कारण व्यंकू से झगडा मोल लेने में उसे डर नहीं लगता।

दिन-ब-दिन जब व्यंकू के षडयंत्र बढ जाते हैं तब तो वह व्यंकू को खत्म करने की सोचता है ताकि गाँव की बला हमेशा के लिए टल जाये। व्यंकू के कारस्थानों से चीढकर, क्रोध के अनावर होने से वह एक दिन व्यंकू को अत्यंत्य पीटता है जिसके कारण उसे नौ महिने की सजा होती है फिर भी वह न्यायालय में अपनी ओर से वकील पेश नहीं करता क्योंकि उसे लगता है कि ऐसा करने से पडघवली की बदनामी हो जायेगी, साथ में दावे के दौरान जाँचपडताल होगी, जबानी के तहत अपने परममित्र महादेव भट की पत्नी अंबू जो उसके लिए बडी आदरणीय है उसे कटघरे में खडा होना पडेगा। अपने आदरणीय व्यक्ति और प्रिय पडघवली को बदनाम करने की

बजाय खुद सजा स्वीकारना उसे योग्य लगता है। इस प्रकार धैर्य, गाँव के प्रति निष्ठा, प्रेम, सहकार्य की भावना आदि उसके अंतरंग के पहलू हैं।

व्यंकूभट महादेव भट (गाँव का खोत) का रिश्ते से भाई लगता है। यह अत्यंत दुष्ट व्यक्ति है। वह अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए कोई भी गिरी हुई हरकत करने के लिए तैयार रहता है। वह हमेशा तिकडमबाजी करके गाँव के लोगों के पैसे, जमीन, जायदाद लूटने के प्रयास में रहता है। यह अत्यंत लालची, दुष्ट, कारस्थानी व्यक्ति है। वह स्त्री लंपट है। अपनी पत्नी होने के बावजूद भी वह गाँव के अंध भिऊ आबा की सुदंर पत्नी शारदा को अपने जाल में फसाता है। महादेव भट की रिश्तेदार आक्की पर जबरदस्ती करने का प्रयास करता है। इसके साथ कुलवाडी स्त्रियों की ओर भी उसकी बुरी नजर है। उसके नौकर की पत्नी धर्मी से भी वह संबंध बनाये हुए है।

इस तरह अपनी दुष्ट प्रवृत्ति के कारण पडघवली गाँव के लिए बला ही बन चुका है।

महादेव भट गाँव के खोत हैं। स्वभाव से अत्यंत सौम्य है। उन्हें झगडा पसंद नहीं है इस कारण हर समस्या का समाधान शांतिपूर्वक, विचार विनिमय से निकालना चाहते हैं, परंतु हर घटना में इतनी सौम्यता दिखलाना गाँव के खोत के लिए योग्य नहीं है। हर समस्या या प्रसंग में उनकी सौम्यता उनके स्वभाव में रही धैर्य की कमी स्पष्ट करती है। इसी कमी के कारण वे व्यंकूभट जैसे दुष्ट व्यक्ति के षडयंत्रों का विरोध नहीं करते। उन्हें व्यंकू से झगडा मोल लेना या व्यंकू की नाराजगी स्वीकारना पसंद नहीं है। परंतु उनके उस स्वभाव के कारण व्यंकू जैसे दुष्ट व्यक्ति के षडयंत्र दिन-ब-दिन बढकर पडघवली के लिए घातक बन जाते हैं। फिर भी वे एक जिम्मेदार आदमी है। उनका सब पडघवलीवासियों को आधार है। सब लोक उनके नियंत्रण में संगठित बनकर रहे हैं इसी कारण जब उनकी मृत्यु हो जाती है तब उनके पीछे गाँव का संगठन टूट जाता है। यह बात पडघवली के लिए बडी ही हानीकारक साबित होती है।

इस प्रकार लेखक ने बडी ही सूक्ष्मता से और प्रभावी ढंग से पात्रों का अंतरंग चित्रण किया है।

उपन्यास में स्थित पात्रों के बहिरंग चित्रण की अपेक्षा अंतरंग चित्रण अधिक प्रभावी हुआ है।

निष्कर्ष :-

पात्रों की विशिष्टता वर्गविभाजन के आधार पर की जाती है। आँचलिक उपन्यासों में उच्चवर्ग, मध्यवर्ग और निम्नवर्ग इन वर्गों में पात्रों का चित्रण किया जाता है।

उच्च वर्ग :-

उच्च वर्ग के परंपरावादी पात्र, जागृत पात्र और आदर्श पात्र यह पात्रों के तीन स्तर होते हैं।

'मैला आँचल' में उच्चवर्ग के तीन स्तरों में से पहले स्तर परंपरावादी पात्र के अंतर्गत किसी पात्र का चित्रण नहीं हुआ है।

'पडघवली' का व्यंकूभट परंपरावादी पात्र है।

उच्चवर्ग के दूसरे स्तर में जागृत पात्र चित्रित होते हैं। 'मैला आँचल' उपन्यास में प्रगतिवादी विचार रखनेवाला 'तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद' इस वर्ग का पात्र है।

'पडघवली' में ऐसे किसी जागृत पात्र का चित्रण नहीं हुआ है।

उच्चवर्ग का तीसरा स्तर आदर्श पात्र कहलाता है। 'मैला आँचल' उपन्यास का 'डॉ. प्रशांत' इस वर्ग का पात्र है।

मध्य वर्ग :-

मध्यवर्ग के अंतर्गत चित्रित होनेवाले प्रथम प्रकार के पात्र आँचलिक कथा के प्रवाह से हटकर अपना कार्यक्षेत्र बनाते हैं। 'मैला आँचल' उपन्यास के 'कमली' और 'बावनदास' इस प्रकार के पात्र हैं।

'पडघवली' उपन्यास की 'शारदा' इस वर्ग का पात्र है।

मध्यवर्ग के दूसरे प्रकार में वे पात्र आते हैं जो आँचलिक जीवन को अपना कार्यक्षेत्र बनाकर उसे प्रभावित एवं निर्देशित करते हैं। इसमें बुरी और अच्छी दोनों प्रवृत्ति के पात्र चित्रित होते हैं।

'मैला आँचल' उपन्यास में अच्छी प्रवृत्ति रखनेवाले पात्र हैं बालदेव, लछमीदासी, कालीचरन और बुरी प्रवृत्ति रखनेवाले पात्र हैं जोतखीजी और महंत रामदास।

'पडघवली' उपन्यास में अच्छी प्रवृत्ति रखनेवाले पात्र हैं गुजाभट और कुशात्या। बुरी प्रवृत्तिवाले पात्रों का चित्रण उपन्यास में नहीं हुआ है।

इस प्रकार इन उपन्यासों के अच्छी प्रवृत्ति रखनेवाले पात्र प्रगतिवादी विचारों का प्रतिनिधित्व करते हैं, तो बुरी प्रवृत्तिवाले पात्र प्रतिक्रियावादी शक्तियों के प्रतिनिधि बने हैं।

निम्न वर्ग :-

निम्न वर्ग के दो भाग सरलता से किये जाते हैं। एक जनजातियां और दूसरा जनसामान्य।

'मैला आँचल' में मेरीगंज गांव की सभी जनजातियों का चित्रण हुआ है। इनके द्वारा गांव के जीवन का पिछडापन या उनकी विशिष्टता उद्‌घाटित हुई है।

'पडघवली' उपन्यास में पडघवली गांव की सभी जनजातियों द्वारा गांव की विशिष्टता चित्रित हुई है।

प्रतिनिधि पात्रों का बाहुल्य :-

आचंलिक उपन्यासों में प्रतिनिधि पात्रों का बाहुल्य होता है।

'मैला आँचल' में बालदेव, कालीचरन, ममता, सेवादास, महंत रामदास, लरसिंहदास, विश्वनाथप्रसाद और लछ्मीदासी आदि प्रतिनिधि पात्र हैं।

'पडघवली' में महादेव, व्यंकूभट, गुजाभट , शारदा आदि प्रतिनिधि पात्र हैं।

ये सभी पात्र अंचलरूपी जीवन के किसी-न-किसी पक्ष, पहलू या प्रवृत्ति के प्रतिनिधि होते हुए भी अपनी निजी वैयक्तिकता से समन्वित है।

व्यक्तिगत गुणों का स्थान :-

कई प्रतिनिधि पात्र व्यक्तिगत गुणों से परिपूर्ण होने के कारण अपने ही वर्ग में विशेष स्थिति बनाते हैं।

'मैला आँचल' के तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद और डॉ. प्रशांत आदि पात्र इस वर्ग में चित्रित हुए हैं।

'पडघवली' के अंबू और गुजाभट आदि पात्रों ने अपने व्यक्तिगत गुणों से अपने ही वर्ग में विशेष स्थिति बना ली है।

आँचलिक उपन्यासों में सामान्य पात्रों को उभार कर उनके द्वारा सामाजिक जीवन की कथा कहलाने के लिए उनमें व्यक्तिगत गुणों का हल्का पुट दे दिया जाता है, जो उन्हें अन्य पात्रों से भिन्न करता है।

'मैला आँचल' के लछ्मीदासी में पवित्रता, बालदेव में सच्चरित्रता, कालीचरन में विद्रोह, डॉ. प्रशांत में समाजसेवा एवं देशप्रेम, ममता में प्रेम का उदात्तीकरण, विश्वनाथ प्रसाद की उदारता कमली में प्रेमचेतना आदि व्यक्तिगत गुण इन पात्रों को अन्य पात्रों से भिन्न कर देते हैं।

'पडघवली' के फुफेरी सांस में सेवाभाव, गुजाभट में विद्रोह, अंबू में गाँव के प्रति प्रेम, गुजाभावजी का आज्ञाकारी स्वभाव आदि व्यक्तिगत गुणों का चित्रण हुआ है।

क्षेत्रीय विशेषताओं की पात्रों में अभिव्यक्ति :-

आँचलिक उपन्यासों में पात्र विकसित हो या अविकसित उनकी अवतारणा क्षेत्रिय विशेषताओं को अभिव्यक्त करने के लिए की जाती है।

'मैला आँचल' में जातीयता, अंधश्रद्धा, गरीबी, सांप्रदायिकता आदि को हरगौरीसिंह, रामकिरपाल सिंह, खेलावन यादव, महंत सेवादास, रामदास, लछमीदासी, लरसिंघदास, जोतखीजी, विश्वनाथप्रसाद आदि पात्रों के माध्यम से चित्रित किया है।

'पडघवली' में अंधविश्वास, जातीयता अंबू, फुफेरी सास, येसा आडविलकर, गुजाभट, सुलेमान, हैदरचाचा आदि पात्रों के द्वारा व्यक्त हुई है।

उपन्यास में पडघवली की गरीब परिस्थिति का वर्णन हुआ है, परंतु किसी एक विशिष्ट पात्र द्वारा नहीं। पडघवली में कोई विशेष संप्रदाय नहीं है।

उपन्यासकार का जीवनदर्शन :-

आँचलिक उपन्यासों में उपन्यासकार का जीवनदर्शन अथवा उसकी विचारधारा पात्रों में स्वत:

ही प्रकट हो जाती है और प्रगतिशील उपन्यासकार उपन्यास में आँचलिक और अनांचलिक पात्रोंद्वारा प्रगतिशील तत्त्वों का समन्वय कर देता है।

'मैला आँचल' में बालदेव और कालीचरन इन प्रगतिशील आँचलिक और डॉ. प्रशांत और ममता इन प्रगतिशील अनांचलिक पात्रों द्वारा रेणु का देशप्रेम, स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी निभायी हुई भूमिका, आदि से संबंधित उनके विचार चित्रित हुए हैं।

'पडघवली' उपन्यास में प्रमुख आँचलिक पात्र अंबू का पडघवली प्रेम और पडघवली की उध्वस्त स्थिति देख उसकी अस्वस्थता, मानसिक घुटन स्वयं दांडेकर जी का ही अपने गाँव के प्रति प्रेम और अपने गाँव की उध्वस्तता देख उनके मन की अस्वस्थता चित्रित हुई है।

इस उपन्यास में प्रगतिशील अनांचलिक पात्र का चित्रण नहीं हुआ है।

चरित्र कल्पना के अंतर्गत पात्रों के बाह्य और आंतरिक सौंदर्य का चित्रण होता है।

'मैला आँचल' में कुछ पात्रों का बहिरंग चित्रण तो हुआ है। परंतु लेखक ने पात्रों की आत्माओं को गढने का प्रयास किया है इसी कारण उनका प्रमुख उद्देश्य अंतरंग चित्रण ही रहा है। इन पात्रों का अंतरंग चित्रण बहुत ही सूक्ष्मता से और प्रभावी हुआ है। बहिरंग चित्रण को विशेष स्थान नहीं मिला है।

'पडघवली' में स्थित पात्रों के बहिरंग की अपेक्षा अंतरंग चित्रण ही विशेष प्रभावी और सूक्ष्म रीति से हुआ है।

इस प्रकार पात्र कल्पना, चरित्र कल्पना और सामान्य विशेषताएँ इन तत्वों के साथ 'मैला आँचल' और 'पडघवली' इन उपन्यासों के पात्रों का विवेचन करने के उपरांत इन उपन्यासों के पात्र आँचलिकता की कसौटी पर खरे उतरतें हैं ऐसा दिखायी देता है।

विशेष :-

'मैला आँचल' उपन्यास सामाजिक होते हुए भी उसे राजनीति का पुट है। उपन्यास का हर पात्र किसी न किसी रूप में राजनीति से जुडा है।

'पडघवली' उपन्यास पूर्णत: सामाजिक उपन्यास है। इसका राजनीति से कोई संबंध नहीं है। हर पात्र अपनी वैयक्तिक जिंदगी में मशगूल है।

'मैला आँचल' उपन्यास का प्रमुख पात्र है डॉ. प्रशांत जो भारत के मैले हुए देहातों को सुधारने के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित करता है। अपने वैद्यकीय ज्ञानद्वारा जनसेवा करने का उद्देश्य वह रखता है। अपने इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए वह हमेशा के लिए मेरीगंज निवासी हो जाता है।

'पडघवली' उपन्यास का महत्त्वपूर्ण पात्र है अंबू। उसे अपने पडघवली गाँव से अत्यंत प्यार है। वह पडघवली गाँव की संप्पन्नता, प्रगति बनाये रखनेवाले हर कार्य में सहभागी रहती है। जब गांव उध्वस्त हो जाता है तब भी वह अन्य गांववालों की तरह पडघवली का साथ नहीं छोडती। उसे केवल एक ही आशा रहती है कि पडघवली फिर से संप्पन्न, सुखी हो जाय। याने वह पडघवली की भलाई तो चाहती है परंतु उध्वस्त गाँव को फिर से खडा करने में कोई ठोस कदम नहीं उठा सकती। वह केवल आशावादी है जबकि डॉ. प्रशांत अपनी उद्देश्यपूर्ति के लिए स्वयं कार्यरत हो जाता है।

'मैला आँचल' के पात्र मेरीगंज गांव से जुडे हैं। उपन्यास के पात्रों में से कई पात्र अपनी उद्देश्यपूर्ति के लिए या जीवनयापन के लिए हमेशा मेरीगंज में ही रह जाते हैं। जहाँ 'पडघवली' उपन्यास के पात्रों में से कई पात्र वैयक्तिक परेशानियों से आत्महत्या कर लेते हैं, कई पात्र मर जाते हैं और कई पात्र जीवनयापन के लिए पडघवली छोडकर अन्यत्र चले जाते हैं। इस तरह गिने-चुने पात्रों को छोड पडघवली रिक्त हो जाती है।

'मैला आँचल' उपन्यास के बहुतसे पात्रों का उद्देश्य समाजसेवा या देशसेवा करना है। जहाँ 'पडघवली' उपन्यास के 'अंबू' को छोडकर अन्य पात्र इसप्रकार का उद्देश्य नहीं रखते।

इस तरह दोनों उपन्यासों के पात्रों में भिन्नता दिखायी देती है जो उपन्यासों के अलग अलग विषयों के कारण आयी है।

: संदर्भ-सूची :

1.	फणीश्वरनाथ'रेणु'-	'मैला आँचल',	पृष्ठ क्र. 137
2.	फणीश्वरनाथ'रेणु'-	वही,	पृष्ठ क्र.137
3.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 312
4.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 47
5.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 148
6.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 114
7.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 127
8.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 52
9.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 152
10.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 123
11.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 108
12.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 309
13.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 312
14.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 148
15.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 126
16.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 24
17.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 242
18.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 127
19.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 59
20.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 59
21.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 218
22.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 152
23.	डॉ. जवाहर सिंह	हिंदी के आंचलिक उपन्यासों की शिल्पविधि	पृष्ठ क्र. 134
24.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र.47
25.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 148

26.	फणीश्वरनाथ 'रेणु' -	'मैला आँचल',	पृष्ठ क्र. 310
27.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 152
28.	गो. नी. दांडेकर -	'पडघवली' ,	पृष्ठ क्र. 118
29.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 117
30.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 208
31.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 152
32.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 117
33.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 173
34.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 221
35.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 222
36.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 162
37.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 163
38.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 64
39.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 64
40.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 64
41.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 89
42.	वीणा देव -	'कादंबरीकार गो. नी. दांडकर',	पृष्ठ क्र. 57
43.	वही,	वही,	पृष्ठ क्र. 59